www.epaper.azadsipahi.in

कलम कलम बढ़ाये जा

आजाद सिपाही

रांची 05 अगस्त, 2025 , मंगलवार, वर्ष 10, अंक 286, श्रावण, शुक्ल पक्ष, एकादशी, संवत 2082, पृष्ठ : 14, मूल्य : ₹3.00

- गुरुजी शिबू सोरेन का दिल्ली में निधन
- झारखंड शोक में डूबा
- पार्थिव शरीर रांची पहुंचा
- श्रद्धांजलि देने उमड़ी भीड़
- राज्य में तीन दिन का राजकीय शोक घोषित
- दो दिन के लिए सभी सरकारी कार्यालय बंद
- राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री और अन्य नेताओं ने भी दी श्रद्धांजलि
- रामगढ़ स्थित पैतृक गांव नेमरा में आज होगा अंतिम संस्कार

झारखंड मौन...

आज मैं शून्य हो गया हूं : हेमंत

सब वीरान सा हो गया है : कल्पना

आजाद सिपाही संवाददाता

नयी दिल्ली/रांची। झारखंड मुक्ति मोर्चा (झामुमो) के संस्थापक संरक्षक, राज्यसभा सांसद शिबू सोरेन का निधन हो गया है। वे 81 साल के थे। दिशोम गुरु ने सोमवार सुबह दिल्ली के सर गंगाराम अस्पताल में अंतिम सांस ली। शिबू सोरेन पिछले डेढ़ महीने से अस्पताल में भर्ती थे। न्यूरोलॉजी, कार्डियोलॉजी और नेफ्रोलॉजी के डॉक्टरों की टीम उनका इलाज कर रही थी। शिबू सोरेन के निधन की पुष्टि करते हुए मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने सोशल मीडिया पर लिखा, 'आदरणीय दिशोम गुरुजी हम सभी को छोड़कर चले गये हैं। आज मैं शून्य हो गया हूं...।' वहीं उनकी पत्नी सह विधायक कल्पना सोरेन ने लिखा 'सब वीरान सा हो गया है...अंतिम जोहार आदरणीय बाबा...आपका संघर्ष, आपका स्नेह, आपका दृढ़ विश्वास - आपकी यह बेटी कभी नहीं भूलेगी।'

शिबू सोरेन का पार्थिव शरीर सोमवार शाम को रांची लाया गया। एयपोर्ट पर भारी संख्या में लोग जुटे थे। पार्थिव शरीर को मोरहाबादी स्थित आवास पर लाया गया। यहां अंतिम दर्शन के लिए लोगों का तांता लगा रहा। सब ओर 'शिबू सोरेन अमर रहे' गूंज रहा था। उनका अंतिम संस्कार मंगलवार को रामगढ़ स्थित पैतृक गांव नेमरा में होगा।

तीन दिन का राजकीय शोक

झारखंड सरकार ने गुरुजी के सम्मान में तीन दिन (4 से 6 अगस्त) तक राजकीय शोक की घोषणा की है। इस अवधि में झारखंड राज्य के उन सभी भवनों, जहां नियमित रूप से राष्ट्रीय ध्वज फहराये जाते हैं, राष्ट्रीय ध्वज आधे झुके रहेंगे। इस दौरान किसी भी प्रकार के राजकीय समारोह नहीं होंगे। साथ ही राज्य सरकार के सभी कार्यालय 4 और 5 अगस्त को बंद रहेंगे। स्कूल-कॉलेज में भी 5 अगस्त को छुट्टी की घोषणा कर दी गयी है।

राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और अन्य नेता पहुंचे अस्पताल

दिल्ली में सोमवार को राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी, कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे समेत अन्य राष्ट्रीय और झारखंड के सांसद, विधायक, नेतागण शिबू सोरेन को श्रद्धांजलि देने के लिए दिल्ली स्थित सर गंगाराम अस्पताल पहुंचे। उन्होंने मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन और कल्पना सोरेन से मुलाकात की। उनको ढाढ़स बंधाया।

"श्री शिबू सोरेन जी का निधन सामाजिक न्याय के क्षेत्र में एक बड़ी क्षति है। उन्होंने आदिवासी पहचान और झारखंड राज्य के गठन का समर्थन किया। जमीनी स्तर पर अपने काम के अलावा, उन्होंने झारखंड के मुख्यमंत्री, केंद्रीय मंत्री और संसद सदस्य के रूप में भी योगदान दिया। मैं उनके पुत्र हेमंत सोरेन जी, परिवार के अन्य सदस्यों और प्रशंसकों के प्रति अपनी गहरी संवेदना व्यक्त करती हूं।- द्रौपदी मुर्मू, राष्ट्रपति

"राज्यसभा सांसद दिशोम गुरु शिबू सोरेन जी का निधन अत्यंत दुखद व पीड़ादायक है। वे जनजातीय अस्मिता व अधिकार के सशक्त स्वर थे। राजनीतिक-सामाजिक जगत में उनका योगदान अविस्मरणीय रहेगा। झारखंड के प्रति उनका समर्पण और प्रेम आनेवाली पीढ़ी को हमेशा प्रेरणा देता रहेगा। शोकाकुल परिजनों के प्रति मेरी गहरी संवेदना। - संतोष गंगवार, राज्यपाल

दिशोम गुरु दिवंगत शिबू सोरेन के पार्थिव शरीर को बिरसा मुंडा हवाई अड्डा, रांची से मोरहाबादी स्थित आवास लाने के क्रम में सड़क के दोनों ओर खड़े हजारों की संख्या में लोगों ने किया अंतिम नमन।

"शिबू सोरेन जी एक जमीनी नेता थे, जिन्होंने जनता के प्रति अटूट समर्पण के साथ सार्वजनिक जीवन में तरक्की की। वे आदिवासी समुदायों, गरीबों और वंचितों को सशक्त बनाने के लिए विशेष रूप से प्रतिबद्ध थे। उनके निधन से दुःख हुआ। मेरी संवेदनाएं उनके परिवार और प्रशंसकों के साथ हैं। झारखंड के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन से बात की और संवेदना व्यक्त की। ओम शांति।

- नरेंद्र मोदी, प्रधानमंत्री

"वरिष्ठ नेता शिबू सोरेन जी के निधन का समाचार सुनकर गहरा दुख हुआ। आदिवासी समाज की मजबूत आवाज, सोरेन जी ने उनके हक और अधिकारों के लिए आजीवन संघर्ष किया। झारखंड के निर्माण में उनकी भूमिका को हमेशा याद रखा जायेगा। हेमंत सोरेन जी और पूरे सोरेन परिवार के साथ-साथ गुरुजी के सभी समर्थकों को गहरी संवेदनाएं व्यक्त करता हूं।

- राहुल गांधी, नेता प्रतिपक्ष, लोकसभा

राष्ट्रपति ने दी सांत्वना

सोमवार को राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू सर गंगाराम अस्पताल जाकर राज्यसभा सांसद शिबू सोरेन के अंतिम दर्शन किये और उन्हें अपनी भावपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित की।

पीएम मोदी ने सहारा दिया

दिल्ली में पीएम नरेंद्र मोदी ने अस्पताल जाकर शिबू सोरेन को श्रद्धांजलि दी। साथ ही उनके अंतिम दर्शन किये। इस दौरान पीएम ने हेमंत सोरेन को गले लगा कर ढांढस बंधाया।

कल्पना को दिया आशीर्वाद

शिबू सोरेन को श्रद्धांजलि देने के बाद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने झारखंड के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन की पत्नी सह विधायक कल्पना सोरेन के सिर पर हाथ रख कर आशीर्वाद दिया।

राहुल गांधी ने गले लगाया

लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी राज्यसभा सांसद शिबू सोरेन के अंतिम दर्शन किये और झारखंड के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन को गले लगा कर ढांढस बंधाया।

देश ने खोया नायाब हीरा

झारखंड ही नहीं, पूरे भारत के जनजातीय समाज में 'दिशोम गुरु' के रूप में प्रख्यात शिबू सोरेन भारतीय राजनीतिक क्षितिज के वह चमकते सितारे हैं, जिनकी चमक दिन बीतने के साथ बढ़ती ही गयी। भारत की दो राजनीतिक पीढ़ियों का गवाह बना यह शख्स भारतीय जनमानस में एक किंवदंती बन चुका है। शिबू सोरेन दुनिया के सबसे लोकतंत्र के अकेले ऐसे नेता रहे, जो आक्रामक राजनीति के इस दौर में भी कभी अपने विरोधियों के खिलाफ कुछ नहीं बोलते थे। शांत, संयत और शालीन तरीके की राजनीतिक कार्यशैली ही उन्हें दूसरों से अलग करती थी और यही कारण है कि वह जननेता कहे जाते थे। सत्ता के लिए राजनीतिक खुंटचालों को चिमटे से भी नहीं छूनेवाले शिबू सोरेन आजीवन निस्पृह तरीके से अपना काम करते रहे। राजनीतिक गहमा-गहमी से परे झारखंड की राजनीति का यह युगपुरुष रांची में अपने आवास पर निश्छल मुस्कान लिये बैठा रहता था, अपने उन लोगों के लिए, जो हर पल उसके दिलों के करीब होते थे। झारखंड का हर व्यक्ति इसीलिए गुरुजी को प्यार करता था, क्योंकि उसे पता था कि यह एक व्यक्ति उसके हर दुख-दर्द को दूर करने का माद्दा रखता है। शिबू सोरेन के जीवन में कहानियां ही कहानियां हैं। उनका जीवन का हर दिन नयी कहानी लिखता था। जिस तरह से चट्टानें हजारों साल का इतिहास अपने सीने में संजोये रखती हैं, उसी तरह दिशोम गुरु का जीवन किस्सों-कहानियों और असंख्य दुखों से रंगा हुआ था। वह संघर्ष और आंदोलन की जीती-जागती मिसाल थे। अपने जीवन काल में ही इतिहास पुरुष बन चुके शिबू सोरेन को जानते-समझते हुए सैकड़ों संघर्ष याद आने लगते हैं, जो अपनी माटी, पहाड़, पेड़, पानी और जिंदगी की हिफाजत में लड़े गये। हजारों कविताएं बादल बन कर आकाश को ढंक लेती हैं। याद आने लगते हैं सिदो-कान्हू, तिलका मांझी, बिरसा और तानाजी भगत और याद आने लगती हैं सिनगी दई। अपनी धरती की हिफाजत के लिए आदिवासियों की अनगिनत शहादतों से मस्तिष्क में उजास फैलने लगता है।

प्रेरणा देता है गुरुजी का संघर्ष

दिशोम गुरु का संघर्ष हमेशा प्रेरित करता है। उनकी सादगी विरल थी। उनकी आंखें हमेशा उतनी ही सपनीली रहीं, जितनी पहले हुआ करती थीं। बदलाव के तमाम झंझवातों और दबावों में वह हमेशा कई मायनों में पहले जैसे ही रहे। एक व्यक्ति और एक राजनेता के रूप में उनके जीवन में इतने उतार-चढ़ाव आये कि कभी-कभी आश्चर्य होता है कि इतना सब कुछ एक ही व्यक्ति के साथ घटित कैसे हो पाया। उनके एक जीवन में कई जिंदगियों की कहानियां सांस ले रही थीं। उनका जीवन फिल्म और उपन्यास के लिए उपयुक्त है। हालांकि 'समर शेष है' और 'रेड जोन' जैसे उपन्यास लिखे जा चुके हैं, फिर भी साहित्यकारों के लिए दिशोम गुरु अभी भी जिंदा इतिहास के एक ऐसे पात्र थे, जिनके व्यक्तित्व और कृतित्व के कई पहलुओं पर लिखा जाना अभी बाकी है। जयपाल सिंह मुंडा से लेकर शिबू सोरेन तक भारत की राजनीति, दलित और आदिवासी नेताओं के लिए हमेशा दुरूह रही है। उनकी अगवानी हमेशा जटिल परिस्थितियों ने की है। राजनीति में आने के बाद दिशोम गुरु को भी तमाम जटिल परिस्थितियों का सामना करना पड़ा। मगर उन्हें राजनीति में लाने के लिए वही परिस्थितियां जिम्मेदार हैं, जिन्होंने उनका बचपन कांटों से भर दिया था।

महाजनों-सूदखोरों ने छीना पिता का साया

रांची से लगभग 70 किलोमीटर दूर रामगढ़ जिले के गोला से एक पतली-सी सड़क पहाड़ों पर नागिन की तरह डोलती जाती है। यह सड़क जहां खत्म होती है, वहीं एक गांव है नेमरा। वहीं एक छोटा-सा रेलवे स्टेशन है, जिसका नाम है बड़गल्ला। इसी नेमरा में शिबू सोरेन का जन्म 11 जनवरी, 1944 को हुआ। नेमरा गांव विशालकाय चंदू पहाड़ के बीच बसा हुआ है। गांव के आसपास महाजनों-बनियों की अजगर सी कतारें फैली हुई हैं। चंदू पहाड़ से शिबू सोरेन का बड़ा गहरा नाता था, क्योंकि इसी पहाड़ के आंचल में उनके पिता सोबरन मांझी की समाधि है, जिनकी महाजनों और बनियों ने 27 नवंबर, 1957 को हत्या कर दी थी।

शिक्षाप्रेमी थे सोबरन मांझी

सोबरन मांझी, ज्योतिराव फुले की तरह निडर और शिक्षा प्रेमी अध्यापक थे। वे अपने समुदाय के लोगों को हड़िया पीने से रोकते थे। पढ़ा-लिखा आदिवासी महाजनी सभ्यता को आज भी खटकता है, पहले भी खटकता था। सोबरन मांझी की रुचि राजनीति में भी थी और वे अपने आसपास के आदिवासियों को अंधविश्वास से दूर करने का प्रयास भी कर रहे थे। उन्हें (सोबरन मांझी) अपने संथाल भाइयों की गरीबी परेशान करती थी। वे जानते थे कि जब तक हमारे अपने दारू पीना बंद नहीं करेंगे, तब तक उनका भला नहीं हो सकता। इनकी जमीनें और इनके घर की इज्जत की सबसे बड़ी दुश्मन हड़िया है। दूसरी तरफ महाजन लोग आदिवासियों को कर्ज देकर एक का डेढ़ वसूलने में लगे हुए थे। कर्ज.न चुका पाने की स्थिति में वे उनकी जमीनें हड़प लेते थे और आसपास महुआ लगवाकर लोगों को दारू का लती बनाने में लगे हुए थे। गाफिल आदिवासी अपनी जमीनें खोकर अपनी ही जमीन पर मजदूरी करने को मजबूर हो रहे थे। आदिवासी किसान, मजदूर बनते जा रहे थे और बिना काम किये सूदखोर जातियां दिन-प्रतिदिन अमीर होती जा रही थीं। सोबरन मास्टर अपने समाज को समझाने में सफल हो रहे थे। उनकी सफलता महाजनों को पच नहीं पा रही थी। इसलिए वे सोबरन मास्टर के आने-जाने पर नजर रखने लगे। कई दिन की रेकी के बाद 27 नवंबर, 1957 का वह दिन आ गया, जिस दिन अहले सुबह सोबरन मांझी गोला के एक हॉस्टल में रहकर पढ़नेवाले अपने दो बेटों, राजाराम और शिबू को राशन, गुड़ और चूड़ा पहुंचाने के लिए निकले। महाजनों ने चंदू पहाड़ी के पास सोबरन मास्टर का कत्ल कर दिया। उस समय शिबू लगभग 12 साल के थे। पिता के कत्ल ने उनके जीवन को बदल कर रख दिया। पति के कातिलों को सजा दिलाने के लिए सोनामणि (शिबू सोरेन की मां) भटकती रहीं। साथ-साथ मेहनत करके बच्चों को पालती भी रहीं। साल पर साल बीतते गये, मगर सोबरन मांझी के कातिलों को सजा नहीं मिली।

चिंगारी से जली मशाल

इस पूरी घटना का किशोर शिबू सोरेन पर गहरा प्रभाव पड़ा। थोड़ा बड़ा होते ही शिबू सोरेन ने दुश्मनों को नहीं, बल्कि दुश्मनी पैदा करने वाली व्यवस्था अर्थात महाजनी सभ्यता को समाप्त करने के लिए 'धनकटनी आंदोलन' छेड़ दिया और आदिवासियों के मन में यह बात बिठा दी कि जल-जंगल-जमीन पर उनका प्राकृतिक अधिकार है। इस आंदोलन ने महाजनी सभ्यता की नींव को खोखला कर दिया। साथ ही साथ धरती की लूट से बचाने वाले दूसरे आंदोलन (कोयलांचल की कोयला माफिया के खिलाफ लड़ाई) भी इस आंदोलन से जुड़ते चले गये। एक महाआंदोलन खड़ा होने से महाजनी सभ्यता की नुमाइंदगी करने वाले परेशान हो गये। इसी क्रम में बिनोद बिहारी महतो और एके राय से भी शिबू सोरेन का मिलना हुआ। झारखंड की भूमि की लूट को रोकने के लिए सांगठनिक प्रयास के रूप में 1972 में झारखंड मुक्ति मोर्चा का जन्म हुआ।

पहला सार्वजनिक भाषण

झामुमो के स्थापना के मौके पर अपने संबोधन में गुरुजी ने कहा था, मुझे झारखंड मुक्ति मोर्चा का महासचिव बनाया गया है। पता नहीं मैं इस योग्य हूं भी या नहीं। लेकिन मैं अपने मृत पिता की सौगंध खाकर कहता हूं कि शोषणमुक्त झारखंड के लिए अनवरत संघर्ष करता रहूंगा। हम लोग दुनिया के सताये हुए लोग हैं। अपने अस्तित्व के लिए हमें लगातार संघर्ष करते रहना पड़ा है। हमें बार-बार अपने घरों से, जंगल से और जमीन से उजाड़ा जाता है। हमारे साथ जानवरों जैसा बर्ताव किया जाता है। हमारी बहू-बेटियों की इज्जत से खिलवाड़ किया जाता है।

दिकुओं के शोषण, उत्पीड़न से परेशान होकर हमारे लोगों को घर-बार छोड़कर परदेस में मजूरी करने जाना पड़ता है। हरियाणा-पंजाब के ईंट के भट्ठों में, असम के चाय के बागानों में, पश्चिम बंगाल के खलिहानों में मांझी, संथाली औरतें, मरद मजूरी करने जाते हैं। वहां भी उनके साथ बंधुआ मजदूरों जैसा व्यवहार किया जाता है। यह बात नहीं कि हमारे घर, गांव में जीवन यापन करने के साधन नहीं, लेकिन उन पर बाहर वालों का कब्जा है। झारखंड की धरती का, यहां की खदानों का दोहन कर, उनकी लूट-खसोट कर नये शहर बन रहे हैं। जगमग आवासीय कॉलोनियां बन रही हैं और हम सब गरीबी-भुखमरी के अंधकार में धंसे हुए हैं। लेकिन अब यह सब नहीं चलेगा। हम इस अंधेरगर्दी के खिलाफ संघर्ष करेंगे।

(टुंडी द्वारा विनोद कुमार, पृष्ठ -40)

नया सामाजिक प्रयोग

दिशोम गुरु ने आदिवासी समाज के लिए धनकटनी आंदोलन के माध्यम से सूदखोरी करने वाले महाजनों से बहुत सारी जमीन अर्जित कर ली। लहलहाती फसलों को काटकर आश्रम में रखा जाने लगा। 'सभी को काम और सभी को आराम' के सिद्धांत पर सामुदायिक खेती शुरू की गयी। लोगों को काम के साथ-साथ पढ़ाया भी जाने लगा। रात्रिकालीन स्कूलों की स्थापना से आदिवासियों को अक्षर ज्ञान दिया गया। औरतों की हाथों के हुनर को निखारने के लिए उन्हें मौका दिया जाने लगा। रचनात्मक होने के कारण झामुमो का कारवां विशाल होता जा रहा था। परंतु बड़ी राजनीतिक परिघटना के घटित होने के पहले ही 26 जून, 1975 को पूरे देश में आपातकाल लगा दिया गया, जिसका असर झामुमो और गुरुजी पर भी पड़ा।

इसलिए कहलाये दिशोम गुरु

शिबू सोरेन ने महाजनी प्रथा के खिलाफ बड़े आंदोलन की शुरुआत की और आदिवासी समाज में जागृति लाने के लिए अभियान प्रारंभ किया। पोखरिया आश्रम में रहने के दौरान ही उन्हें जनजातीय समाज की ओर से दिशोम गुरु की संज्ञा दी गयी। अलग झारखंड राज्य आंदोलन के दौरान संथाल परगना, छोटानागपुर, कोयलांचल और कोल्हान इलाके में उनकी तूती बोलती थी। सिर्फ नगाड़े (पारंपरिक वाद्य यंत्र) की आवाज सुनकर ही लोग शिबू सोरेन के संदेश को सुनने के लिए एकत्रित हो जाते थे।

आपातकाल और शिबू सोरेन

आपातकाल ने झामुमो को उसी तरह डंस लिया, जिस तरह बाढ़ के पानी के सहारे घर में घुस आया सांप घर की संचालन शक्ति अर्थात घरनी को डंस लेता है और बिना किसी कसूर के घरनी मारी जाती है तथा घर अनाथ हो जाता है।
झामुमो के आंदोलन के कारण महाजनों से टकराहट होती रहती थी। दुश्मनों की संख्या लगातार बढ़ती जा रही थी और इसी बीच चिरूडीह कांड हो गया, जिसमें कई आदिवासियों के साथ महाजनों के पक्ष के दर्जन भर आदमी मारे गये, जो अल्पसंख्यक समुदाय से थे। इसके साथ-साथ शिबू सोरेन दूसरे कई मामलों में आरोपी हो चुके थे। वे दिन-प्रतिदिन कानून के शिकंजे में फंसते चले जा रहे थे। उन्हें जिंदा या मुर्दा पकड़ने तक की बात भी प्रशासन में उठने लगी थी। झामुमो द्वारा किये जा रहे आंदोलनों, जिसमें उनके कई साथी मारे गये थे से, वे लगातार कमजोर महसूस करते जा रहे थे।

आपातकाल के दौरान पूंजीवाद और महाजनी सभ्यता के लोग अवसर का इस्तेमाल तमाम जनवादी संगठनों को मिटाने में करने लगे थे। प्रशासन से उनको किसी न किसी रूप में सहयोग मिल रहा था। वे शिबू सोरेन को रोकना चाहते थे। इसी क्रम में केबी सक्सेना को उपायुक्त बनाकर धनबाद भेजा गया। उनके कहने पर एवं साथियों की मौत और झामुमो के बिखरते भविष्य को देखते हुए शिबू सोरेन ने आत्मसमर्पण कर दिया। कुछ दिन धनबाद जेल में रखने के बाद उन्हें मुक्त कर दिया गया।

रोमांचक है रिहाई की कहानी

धनबाद जेल से शिबू सोरेन की रिहाई की वह घटना भी बेहद रोमांचक है। उनकी रिहाई नाटकीय अंदाज में हुई। एक रात धनबाद जेल का सायरन बज उठा और सोरेन को जेल से निकाल कर एक बख्तरबंद गाड़ी में किसी अज्ञात स्थल पर ले जाया गया। इंदिरा गांधी और संजय गांधी के करीबी बिहार के एक शीर्ष नेता से उनकी लंबी बातचीत हुई और उसके बाद उन्हें मुक्त कर दिया गया।

शिबू सोरेन से उम्मीदें बंधीं

जेल से मुक्त होकर शिबू सोरेन मुख्यधारा की राजनीति में हिस्सा लेने लगे। सार्वजनिक राजनीति में रहते हुए उन्हें अपने बड़े बेटे दुर्गा सोरेन को खोना पड़ा। उनकी राजनीति का दायरा बढ़ा और वे केंद्र में मंत्री भी बनाये गये। फिर तीन बार झारखंड के सीएम भी बने। शिबू सोरेन ने 1980 में दुमका से लोकसभा का पहला चुनाव जीता। बाद में वह 1989, 1991, 1996, 2002, 2004, 2009 और 2014 में भी दुमका संसदीय क्षेत्र से चुने गये। वर्ष 2002 में वह राज्यसभा के लिए भी चुने गये। दूसरी बार 2020 में वह संसद के उच्च सदन के लिए चुने गये।

!! भावपूर्ण श्रद्धांजलि !!

जन्म : 11.01.1944 | निधनः 04.08.2025

"आज झारखंड की हवा शांत है, जंगल सिसक रहा है
नदियां – पहाड़ मौन हैं और हमारी आत्मा रो रही है"

झारखंड निर्माता

भगवान दिशोम गुरु

अब हमारे बीच नहीं रहे

झारखंडियों के भगवान

शिबू सोरेन

दिशोम गुरुजी को

भावपूर्ण श्रद्धांजलि

रतिलाल टुडू

वरीय नेता, झामुमो, धनबाद

'गुरुजी' बनने की कहानी

■ पिता की हत्या ने राजनीति की राह दिखायी

झारखंड मुक्ति मोर्चा प्रमुख जेएमएम सुप्रीमो शिबू सोरेन के करीब पांच दशक का राजनीतिक सफर काफी संघर्षपूर्ण रहा। बचपन में ही एक चिड़िया की मौत से उन्हें इतना दुख हुआ कि मांस-मछली खाना छोड़ दिया और जीव हत्या को पाप मान कर पूरी तरह से अहिंसक बन गये। शिबू सोरेन कुछ बड़े हुए तो गांव से दूर शहर में एक छात्रावास में रह कर पढ़ाई करने लगे। लेकिन इसी दौरान उनके पिता की हत्या कर दी गयी। पिता की हत्या ने शिबू सोरेन को राजनीति की राह दिखायी। इसके बाद से ही उनके सामाजिक और राजनीतिक जीवन की शुरुआत हुई। शिबू सोरेन 'दिशोम गुरु' (देश का गुरु) बन गये। इसके बाद आठ बार लोकसभा सांसद, झारखंड के तीन बार मुख्यमंत्री और तीन बार राज्यसभा के लिए चुने गये।

चिड़िया का दाह संस्कार कर शाकाहारी बने शिबू सोरेन

अलग झारखंड राज्य के लिए वर्षों तक आंदोलन करने वाले शिबू सोरेन की उम्र जब नौ वर्ष की थी, तो 1953 में दशहरा के दिन अपने पिता सोबरन सोरेन के साथ घर में बैठे थे। सोबरन सोरेन घर मोर का पंख निकाल रहे थे। इसी दौरान घर में पलने वाली चिड़िया भेंगराज (कोयल) सोबरन सोरेन के पैर में बार-बार चोंच मार कर परेशान कर रही थी। कोयल बार-बार झिड़कने के बावजूद उनके पैर में आकर चोंच मार रही थी। इससे परेशान होकर सोना सोबरन ने अपनी बंदूक की नोंक से जब चिड़िया को झिड़कने का प्रयास किया, तो उसकी मौत हो गयी। इस छोटी सी घटना ने शिबू सोरेन को पूरी तरह से झकझोर कर रख दिया। परिजनों ने किसी तरह से उन्हें शांत कराया। इसके बाद शिबू सोरेन ने बांस की खटिया बनायी और कफन की व्यवस्था कर चिड़िया का दाह-संस्कार किया। इसके साथ ही शिबू सोरेन पूरी तरह से शाकाहारी हो गये और अहिंसा के धर्म को अपना लिया।

छात्रावास में चावल-चूड़ा पहुंचाने आ रहे पिता की हत्या

शिबू सोरेन के दादा चरण मांझी तत्कालीन रामगढ़ राजा कामाख्या नारायण सिंह के टैक्स तहसीलदार थे। घर में संपन्नता थी। जमीन-जायदाद के साथ घर की आर्थिक स्थित बेहतर थी। इस बीच उनके दादा चरण मांझी ने 1.25 एकड़ जमीन एक घटवार परिवार को दे दी। इस जमीन पर शिबू सोरेन के पिता सोबरन मांझी ने एक मंदिर बनाने का आग्रह किया। इसके कारण गांव में ही रहने वाले कुछ महाजनों के साथ परिवार का विवाद शुरू हो गया। इस दौरान शिबू सोरेन अपने बड़े भाई राजाराम सोरेन के साथ गोला स्थित आदिवासी छात्रावास में रहकर पढ़ाई कर रहे थे। सोबरन सोरेन के दो पुत्रों को स्कूल में पढ़ता देखकर गांव के ही कुछ लोग चिढ़ने लगे। 27 नवंबर 1957 को सोबरन सोरेन अपने एक सहयोगी के साथ दोनों पुत्रों के लिए छात्रावास में चावल और अन्य सामान पहुंचाने के लिए घर से निकले। पैतृक गांव नेमरा से गोला के लिए पैदल ही सफर पर निकले सोबरन सोरेन की रास्ते में ही लुकैयाटांड़ गांव के निकट हत्या कर दी गयी। शिबू सोरेन और हेमंत सोरेन कई बार सीएम रहे, लेकिन आज तक पुलिस यह पता नहीं लगा सकी कि सोबरन सोरेन की हत्या किसने की थी।

पिता की हत्या ने शिबू सोरेन को दिखायी राजनीति की राह

पिता सोबरन सोरेन की हत्या शिबू सोरेन के जीवन में टर्निंग प्वाइंट साबित हुआ। पिता की मौत के बाद पढ़ाई से उनका मन टूट गया। घर से भाग की शिबू सोरेन हजारीबाग में रहने वाले फारवर्ड ब्लॉक नेता लाल केदार नाथ सिन्हा के घर पहुंचे। घर से निकलने के बाद शिबू सोरेन के लिए संघर्ष का दौर भी शुरू हो चुका था। कुछ दिनों तक उन्होंने छोटी-मोटी ठेकेदारी का काम भी किया। इस बीच पतरातू-बड़काकाना रेल लाइन निर्माण के दौरान उन्हें कुली का काम भी मिला, लेकिन मजदूरों के लिए विशेष तौर पर बने बड़े-बड़े जूते उन्हें पसंद नहीं आये, जिसके बाद उन्होंने काम छोड़ दिया। काम छोड़ने के बाद उनकी परेशानी और बढ़ गयी। इसी दौरान उनके सामाजिक और राजनीतिक जीवन की भी शुरुआत हुई। सबसे पहले शिबू सोरेन ने बड़दंगा पंचायत से मुखिया का चुनाव लड़ा, लेकिन सफलता नहीं मिली। बाद में जरीडीह विधानसभा सीट से चुनाव लड़े। इस चुनाव में भी वे हार गये।

'पवित्र चावल' बेचकर मिले पांच रुपये ने 'दिशोम गुरु' बनाया

शिबू सोरेन की मां सोना सोरेन एक कुशल गृहिणी थी। वो हर दिन खाना बनाने के पहले एक मुट्ठी चावल निकाल कर हांडा में डाल देती थी। पिता की हत्या के बाद शिबू सोरेन ने एक दिन अपने बड़े भाई राजाराम से कहा कि वे उन्हें पांच रुपया दें, वह घर से बाहर जाकर कुछ करना चाहते हैं। घर में उस वक्त पैसे नहीं थे। बड़े भाई राजाराम सोरेन चिंता में बैठे थे। तभी उनकी नजर घर में रखे हांडा पर पड़ी। अब राजाराम को अपनी मां सोना सोरेन के वहां से हटने का इंतजार था। जैसे ही उनकी मां वहां से हटी, उन्होंने हांडा में रखा दस पैला चावल निकाल लिया और उसे बाजार में बेचकर पांच रुपया हासिल किया। संभवतः उनकी मां यदि उस वक्त वहां मौजूद रहतीं, तो उस चावल को बेचने नहीं देती। इसी पांच रुपये को लेकर शिबू सोरेन घर बाहर निकले और एक इतिहास बना दिया। उस पवित्र चावल ने शिबू सोरेन को संताल समाज का 'दिशोम गुरु' बना दिया।

पहले चुनाव में शिबू सोरेन के लिए हर घर से चावल और तीन रुपया चंदा

दिशोम गुरु शिबू सोरेन 1980 में पहली बार दुमका लोकसभा क्षेत्र में तीर-धनुष चुनाव चिह्न लेकर मैदान में उतरे थे। इस चुनाव में झारखंड अलग राज्य निर्माण आंदोलन के अग्रदूत बन कर उभरे शिबू सोरेन को जिताने के लिए पार्टी कार्यकर्ताओं ने दिशोम दाड़ी चंदा उठाने का अभियान शुरू किया। इसके तहत प्रत्येक गांव के प्रति परिवार, प्रति चूल्हा एक पाव (250 ग्राम) चावल और तीन रुपया नगद राशि उठायी जाने लगी, ताकि शिबू सोरेन अपना नामांकन पर्चा दाखिल कर सकें। इस अभियान के दौरान संग्रह राशि से पोस्टर बैनर छपवाये गये तथा गुरु जी के लिए एक पुरानी जीप और कुछ कार्यकर्ताओं के पास उपलब्ध निजी मोटरसाइकिल में पेट्रोल भरवाने पर खर्च किये जाते थे। इस राशि से पार्टी के लिए समर्पित बीमार और भूखे रहने वाले कार्यकर्ताओं को मदद देने की व्यवस्था की गयी थी। पार्टी को मजबूत बनाने के उद्देश्य शुरू 'दिशोम दाड़ी' चंदा एकत्र करने के लिए कार्यकर्ता आम सहमति से ग्राम सभापति का चयन करते थे, जिनके पास प्रत्येक घर से संग्रहित चावल और नगद राशि जमा रहती थी। ग्राम सभापति के माध्यम से कार्यकर्ताओं को मदद के रूप में संग्रहित राशि और चावल दिया जाता था। झामुमो सुप्रीमो शिबू सोरेन ने धनबाद के टुंडी से झारखंड अलग राज्य निर्माण आंदोलन के विस्तार के लिए संताल परगना की ओर रुख किया, तो उनके विचारों से प्रभावित होकर कई लोग भी उनके साथ हो गये। इसी क्रम में दुमका में एसपी कॉलेज के समीप स्थित मांझी थान में एक बैठक का आयोजन किया गया। इस बैठक के बाद से दुमका सहित समूचे संताल परगना में बदलाव की लहर चल पड़ी।

सूदखोरों का धान जबरन काट लेते थे शिबू सोरेन

1970 का दशक। सूदखोरों के खिलाफ आंदोलन चलाकर शिबू सोरेन चर्चित तो हुए, लेकिन महाजनों को अपना दुश्मन बना लिया। शिबू को रास्ते से हटाने के लिए महाजनों ने भाड़े के लोग जुटाये। उन दिनों आदिवासियों को जागरूक करने के लिए शिबू सोरेन बाइक से गांव-गांव जाते थे। एक दिन शिबू बराकर नदी के पास से गुजर रहे थे। तभी उन्हें महाजनों के गुंडों ने घेर लिया। बारिश का मौसम था। बराकर नदी उफान पर थी। शिबू समझ गये कि अब बचना मुश्किल है। उन्होंने आव देखा न ताव, अपनी रफ्तार बढ़ायी और बाइक समेत नदी में छलांग लगा दी। सभी को लगा कि उनका मरना तय है, लेकिन थोड़ी देर बाद शिबू तैरते हुए नदी के दूसरे छोर पहुंच गये। लोगों ने इसे दैवीय चमत्कार माना। आदिवासियों ने शिबू को 'दिशोम गुरु' कहना शुरू कर दिया। संथाली में दिशोम गुरु का अर्थ होता है देश का गुरु।

पिता की हत्या हुई तो पढ़ाई छोड़ आंदोलन में कूदे

शिबू सोरेन का जन्म 11 जनवरी 1944 को गोला प्रखंड के नेमरा गांव में हुआ था। तब झारखंड अलग नहीं हुआ था। नेमरा बिहार के हजारीबाग जिले में आता था। चार भाई-बहनों में शिबू दूसरे नंबर पर थे। उनके पिता सोबरन सोरेन गांधीवादी टीचर थे। उन्होंने आजादी की लड़ाई में भाग लिया था। शिबू सोरेन के बचपन में दो नाम थे- शिवलाल और शिवचरण। हाइस्कूल में शिबू को हॉस्टल जाना पड़ा। 27 नवंबर 1957 को हॉस्टल में खबर मिली कि उनके पिता की हत्या कर दी गयी है। शिबू के पिता महाजनों के खिलाफ आदिवासियों को जागरूक करते थे। पिता की हत्या के बाद 13 वर्षीय शिबू का मन पढ़ाई में नहीं लगा। वो जानते थे कि उनके पिता को महाजनों के शोषण के खिलाफ आवाज उठाने के लिए जान गंवानी पड़ी। ये वो दौर था, जब गोला और इसके आसपास के क्षेत्रों में सूदखोरों का आतंक था। सूदखोर पहले ग्रामीणों को कर्ज देते थे, फिर 500% तक सूद वसूलते थे। भुगतान न करने पर जमीन पर कब्जा कर लेते। ग्रामीणों के अपने ही खेत में धान उपजाने के बाद उसका आधे से ज्यादा हिस्सा महाजन जबरन ले जाते थे। शिबू इस बात को समझ चुके थे कि पढ़ाई से ज्यादा जरूरी है महाजनों के खिलाफ आदिवासी समाज को इकट्ठा करना। उन्होंने सूदखोर महाजनों के खिलाफ काम करना शुरू किया।

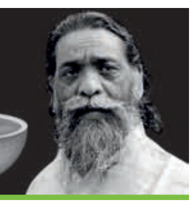

सूदखोरों का धान काट कर बांट देते थे शिबू सोरेन

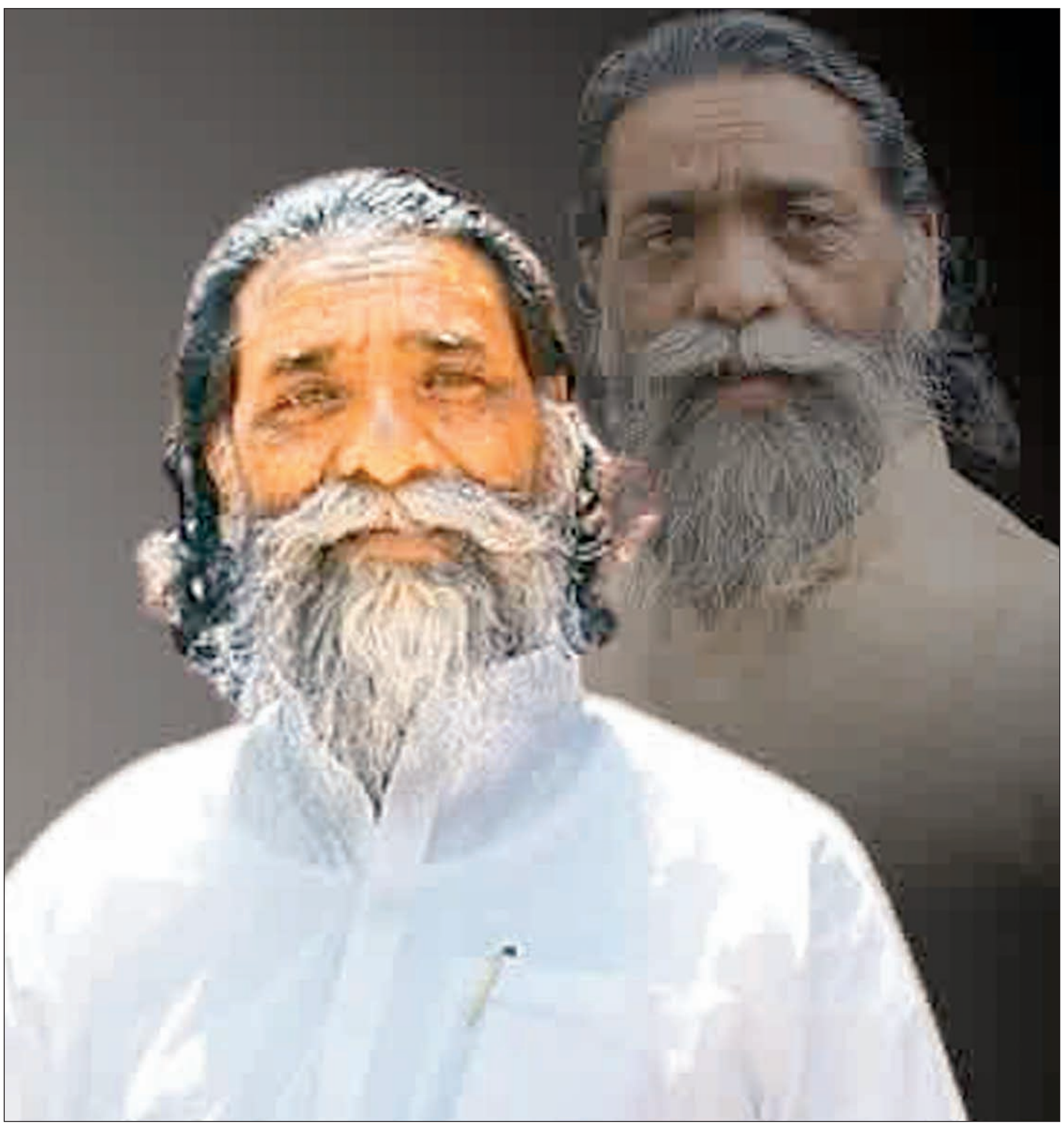

बात उन दिनों की है, जब गोला-मुरी रोड पर गोमती नदी पर पुल बन रहा था। गोला के डभातू निवासी विशु महतो को महाजन के लोग जमीन हड़पने के लिए तंग कर रहे थे। शिबू ने तय किया कि वे विशु की मदद करेंगे। शिबू ने महाजन के गुंडों से कहा कि विशु को परेशान नहीं करें, वरना अंजाम अच्छा नहीं होगा। पहली बार किसी ने गुंडों को धमकी दी थी। वो दूसरी बार विशु को परेशान करने नहीं आये। इससे खुद शिबू सोरेन का मनोबल बढ़ा। लोग शिबू सोरेन के साथ होने लगे। नयी उम्र के इस लड़के में उन्हें मसीहा नजर आ रहा था, जो सूदखोरों से मुक्ति दिला सकता था।

शिबू का प्रभाव बढ़ता जा रहा था। साथियों ने कहा कि अगर राजनीति में हमारा व्यक्ति होगा तो हमारी बात सुनी जायेगी। तय हुआ कि शिबू सोरेन चुनाव लड़ेंगे। शिबू ने बरलंगा पंचायत के मुखिया के चुनाव के लिए पर्चा भरा। कहा जाता है अफसरों की मिलीभगत से शिबू को चुनाव हराया गया था। आदिवासी अपने ही खेतों में मजदूरों की तरह काम कर रहे थे। शिबू ने लोगों से कहा कि तीर-धनुष उठाओ और जबरन धान काटो। हम देखेंगे कौन रोकता है। शिबू सोरेन के इस आह्वान पर लोगों ने उनका साथ देना शुरू किया। शिबू सोरेन ने समर्थकों के बूते पर 'धान काटो' अभियान शुरू कर दिया। बरलंगा पंचायत में जिन महाजनों ने आदिवासियों की जमीन को हड़प लिया था और वहां खेती कर रहे थे, शिबू उनके खेत से जबरन धान काट लिया करते थे। जिस खेत में धान काटना होता था, उसके चारों ओर तीर-धनुष लिए युवक तैनात होते थे। महिलाएं धान काटती थीं। उस फसल को गांववालों के बीच बांट दिया जाता था। इससे शिबू सोरेन की लोकप्रियता बढ़ने लगी।

एक बैठक में बन गया झारखंड मुक्ति मोर्चा

विनोद बाबू भाकपा छोड़ चुके थे। वे अब शिबू के साथ थे। वे समझ रहे थे कि आदिवासियों को एक राजनीतिक पार्टी की जरूरत है। ऐसे ही एक दिन 4 फरवरी, 1972 को धनबाद में शिबू सोरेन और साथियों ने विनोद बाबू के धनबाद स्थित आवास पर बैठक की। इसमें शिबू सोरेन, विनोद बाबू, एके राय, प्रेम प्रकाश हेंब्रम, कतरास के पूर्व राजा पूर्णेंदु नारायण सिंह, शिवा महतो, जादू महतो, शक्तिनाथ महतो, राज किशोर महतो, गोविंद महतो आदि मौजूद थे। बैठक में सोनोत संथाल समाज और शिवाजी समाज का विलय कर नया संगठन बनाने का फैसला लिया गया। बैठक में नए संगठन के नाम पर चर्चा हुई। कई नाम सुझाये गये। नए संगठन का नाम झारखंड मुक्ति मोर्चा रखने का निर्णय किया गया। केंद्रीय समिति का गठन किया गया। सभी की सहमति से विनोद बिहारी महतो को अध्यक्ष, शिबू सोरेन को महासचिव और पूर्णेंदु नारायण सिंह को उपाध्यक्ष बनाया गया।

भाषण देकर गायब हो गये शिबू

1973 में झामुमो की स्थापना रैली के बाद मोर्चा काफी सक्रिय और फेमस हो चुका था। सूदखोरों का धान जबरदस्ती काटने के बाद शिबू के खिलाफ कई केस दर्ज हो चुके थे। पुलिस सरगर्मी से उनकी तलाश कर रही थी। कई जगह छापे मारे जा रहे थे। चार फरवरी को झामुमो का स्थापना दिवस आ रहा था। अध्यक्ष विनोद बिहारी जेल में थे। सबको लगा था कि इतने केसों के कारण शिबू भी नहीं आयेंगे। इसके बावजूद झामुमो का स्थापना दिवस मनाना तय हुआ। धनबाद में कार्यक्रम स्थल पर भारी भीड़ जमा हो गयी। शिबू को गिरफ्तार करने के लिए चप्पे-चप्पे पर पुलिस तैनात की गयी। थोड़ी देर में पुलिस को चकमा देकर शिबू सोरेन मंच पर प्रकट हुए। हजारों लोग उन्हें घेरे हुए थे। पुलिस मंच तक नहीं पहुंच पा रही थी। पुलिस को लगा कि भाषण के बाद हम शिबू को गिरफ्तार कर लेंगे। पुलिस शिबू को खोजती रही, लेकिन वो भाषण के बाद गायब हो गये।

जब डीसी ने कहा, सरेंडर कर दीजिए, नहीं तो गोली खायेंगे

केबी सक्सेना धनबाद के नये उपायुक्त बनकर आये थे। उन्हें शिबू सोरेन को पकड़ने की जिम्मेदारी दी गयी। शुरुआत में सक्सेना ने शिबू से निपटने के लिए एक सख्त प्लान बनाया। जब उन्हें पता चला कि शिबू आदिवासियों के हित में काम कर रहे हैं, तब उन्होंने शिबू को लेकर अपना नजरिया बदल लिया। सक्सेना बेहद निडर व्यक्ति थे। एक बार वे किसी तरह जंगल के भीतर शिबू के ठिकाने तक पहुंच गये। शिबू की सुरक्षा के लिए सैकड़ों आदिवासी तीर-कमान लेकर पहरा दे रहे थे। शिबू के पास आकर सक्सेना ने कहा, मैं धनबाद का नया डीसी हूं, आपसे मिलने आया हूं। शिबू ने सक्सेना को अपने पास खाट पर बैठाया। सक्सेना की पूरी आवभगत की गयी। केबी सक्सेना ने शिबू सोरेन से कहा, आपको देखकर एक बात पता चली कि आप आदिवासियों के मसीहा हैं, लेकिन आपकी लड़ाई का तरीका गलत है। जंगल में रहकर कब तक लड़ते रहेंगे। आप कानून के सामने सरेंडर कर दीजिए, वरना किसी दिन पुलिस की गोली के शिकार हो जायेंगे। अगली बार केबी सक्सेना के साथ एसपी और कुछ और अफसर भी आये। पहरा दे रहे आदिवासियों को निर्देश थे कि गिरफ्तारी होती है, तो हमला करना, वर्ना नहीं। सक्सेना पहुंचे, लेकिन कोई गिरफ्तारी नहीं हुई। वहां एक बड़ी सभा हुई, जिसमें 25 हजार आदिवासियों ने भाग लिया। सक्सेना ने कहा कि शिबू आदिवासियों के मसीहा हैं। ये बात पूरे राज्य में फैल गयी। सूदखोर महाजनों ने इसका विरोध किया। समर्पण से पहले ही सक्सेना का तबादला हो गया। हालांकि, जाने से पहले वो बिहार के सीएम जगन्नाथ मिश्र और पीएम इंदिरा गांधी को चिट्ठी लिख चुके थे। नये डीसी साहब आये। उनका भी शिबू से संपर्क जारी रहा। एक दिन शिबू को थाने आने के लिए कहा गया। ये वो समय था, जब कोई ये हिम्मत नहीं कर सकता था। शिबू को बताया गया कि थाने से ही डीसी साहब आपसे बात करेंगे। इसके बाद आप पर लगे केसों को हटाया जायेगा।

बात सितंबर 1975 की है। एक दिन डीसी शिबू के ठिकाने पर पहुंचे। उन्हें बताया गया कि शिबू को कुछ दिन जेल जाना पड़ेगा, ताकि चीजों को ठीक किया जा सके। प्रशासन ने समर्थकों को भरोसा दिया कि कुछ गलत नहीं होगा। धीरे-धीरे सब केस खत्म कर देंगे, लेकिन पहले शिबू को जेल जाना पड़ेगा। इस तरह शिबू सोरेन ने सरेंडर किया। कई दिन शिबू और उनके साथी धनबाद जेल में रहे। डीसी खुद उनकी सुविधाओं का ध्यान रख रहे थे। एक दिन शिबू को बोकारो ले जाया गया। वहां शिबू और मुख्यमंत्री जगन्नाथ मिश्र के बीच चर्चा हुई। डीसी ने शिबू से कहा कि धीरे-धीरे केस हट रहे हैं। आप जमानत के लिए आवेदन कीजिए, प्रशासन विरोध नहीं करेगा। आप जेल से छूट जायेंगे। इसके कुछ दिन बाद शिबू और उनके साथी बाहर आ गये।

झारखंड को अलग करो, नहीं तो कोयला नहीं जाने देंगे

जुलाई 2000 में संसद का मानसून सत्र चल रहा था। शिबू सोरेन चाहते थे कि सरकार इसी सेशन में झारखंड बिल सदन में लाये। शिबू ने दबाव बनाने के लिए दिल्ली में एक बड़ी रैली और प्रदर्शन का निर्णय लिया। झारखंड से सैकड़ों लोग और सभी दलों के बड़े नेता दिल्ली पहुंच गये। 25 जुलाई को शिबू के दिल्ली स्थित आवास से विरोध रैली निकाली गयी। रैली जंतर-मंतर से होते हए संसद भवन की तरफ जाने लगी, तो पुलिस और सुरक्षा एजेंसियों ने रोक लिया। जहां रैली को रोका गया, वहीं धरना शुरू हो गया और शिबू सोरेन ने कहा कि अगर झारखंड बिल नहीं आया, तो झारखंड से देशभर में जो कोयला और अन्य खनिज जाता है, उसकी सप्लाई नहीं होने दी जायेगी। केंद्र की अटल बिहारी सरकार के हाथ-पांव फूल गये। दोपहर बाद संसद में झारखंड राज्य के गठन का बिल गृह मंत्री लालकृष्ण आडवाणी ने पेश किया। झारखंड बिल आते ही ओड़िशा के सांसदों ने सबसे पहले विरोध दर्ज कराया, जबकि बीजू जनता दल भी झारखंड मुक्ति मोर्चा की तरह एनडीए का सदस्य था। बीजद के सांसदों ने कहा कि सरायकेला-खरसांवा को ओड़िशा को दे दिया जाये। सांसदों को मनाने की कोशिश की गयी, लेकिन वे मानने को तैयार नहीं थे। इधर शिबू सोरेन भी अड़े हुए थे। उन्होंने साफ कह दिया कि अगर आप सरायकेला-खरसांवा का राग अलापना बंद नहीं करेंगे, तो हम भी ओड़िशा के मयूरभंज, क्योंझर और सुंदरगढ़ को झारखंड में शामिल करने का मुद्दा उठायेंगे। आखिरकार दो अगस्त को बिल पारित हुआ। इस तरह झारखंड का जन्म हुआ।

केंद्र में मंत्री रहते वारंट निकला और भगोड़ा घोषित किया गया

महाजनों के खिलाफ किये गये आंदोलन के दौरान दर्ज केस लगभग खत्म हो गये थे, लेकिन एक केस 29 साल से गुरुजी का पीछा कर रहा था। जुलाई, 2004 में चिरुडीह का मामला सामने आया और गुरुजी को फरार घोषित कर दिया गया। उस समय वे यूपीए सरकार में कोयला मंत्री थे। 23 जनवरी 1975 को चिरुडीह में आदिवासियों और महाजनों व समर्थकों के बीच संघर्ष हुआ था। इसमें दस से ज्यादा लोग मारे गये थे। आरोप था कि उन्हें शिबू सोरेन ने भड़काया। मामला कोर्ट में चल रहा था। तब जामताड़ा की एक अदालत ने इसी मामले में शिबू को 6 सितंबर 1986 को कोर्ट में समर्पण करने का आदेश दिया था। अचानक ये मामला 2004 में सामने आया। राज्य में भाजपा की सरकार थी और अर्जुन मुंडा सीएम थे। शिबू ने काउंटर किया, मैं सालों से विधायक, सांसद और मंत्री हूं तो फरार कैसे हो सकता हूं। ये जानबूझकर राजनीति के कारण खोद कर निकाला गया मामला है। मामला संसद में उठा। विपक्ष में बैठी भाजपा ने शिबू सोरेन का इस्तीफा मांगा। आखिरकार परिस्थितियां बिगड़ने लगीं और गृह मंत्री शिवराज पाटिल ने संसद में बयान दिया कि जिस वारंट की बात हो रही है, अदालत 2003 में उसे वापस ले चुकी है। फिर भी मामला शांत नहीं हो रहा था। 1986 में जो वारंट जारी किया गया, वो तामील नहीं हुआ। इस वजह से 17 जुलाई 2004 को निचली अदालत ने फिर से वारंट जारी करने का आदेश दिया। अब यूपीए सरकार इस विवाद में नहीं पड़ना चाहती थी। अगले दिन पीएम मनमोहन सिंह और शिबू सोरेन की मुलाकात हुई और पीएम ने कहा कि आप इस्तीफा देकर समर्पण कीजिए। 20 जुलाई को जामताड़ा कोर्ट ने गुरुजी को भगोड़ा घोषित कर दिया। अब शिबू समझ चुके थे कि पुलिस उन्हें गिरफ्तार करके ही मानेगी। संसद में भाजपा खूब हंगामा कर रही थी कि जो व्यक्ति कल तक पीएम से मिल रहा था, वो गिरफ्तार क्यों नहीं हो पा रहा है। गुरुजी ने बेटे हेमंत सोरेन की मार्फत इस्तीफा फैक्स करवाया। इसके बाद हाइकोर्ट में याचिका लगवायी और भूमिगत हो गये। हाइकोर्ट ने गिरफ्तारी वारंट स्थगित कर दिया, लेकिन शर्त रखी कि गुरुजी को सरेंडर करना होगा। अगर वे सरेंडर नहीं करेंगे, तो निचली अदालत फैसला लेने के लिए स्वतंत्र है। इसके बाद गुरुजी ने एक जनसभा की और निचली अदालत में सरेंडर किया। शिबू एक महीने जेल में रहे। इसके बाद उन्हें हाइकोर्ट ने जमानत दे दी। 6 मार्च 2008 को निचली अदालत ने चिरुडीड मामले में उन्हें बरी कर दिया।

जब पहली बार सीएम बने, दस दिन में गिर गयी सरकार

शिबू सोरेन 2 मार्च 2005 को पहली बार सीएम बने, लेकिन बहुमत साबित नहीं कर पाने के कारण दस दिन में ही उन्हें इस्तीफा देना पड़ा। 27 अगस्त 2008 को शिबू सोरेन दूसरी बार झारखंड के सीएम बने। इस बार वे विधायक नहीं थे। इस कारण छह महीने में उन्हें चुनाव जीतकर विधानसभा का सदस्य बनना था। पांच महीने बाद 2009 में उपचुनाव हुआ। शिबू को एक सुरक्षित सीट की जरूरत थी, लेकिन कोई भी उनके लिए सीट छोड़ने को तैयार नहीं था। जो विधायक सीट छोड़ने को तैयार थे, वो मुश्किल सीट थी। तमाड़ विधानसभा में उपचुनाव का एलान हुआ। यूपीए ने गठबंधन की ओर से शिबू का नाम रखा, लेकिन शिबू वहां से चुनाव नहीं लड़ना चाहते थे। शिबू जानते थे कि तमाड़ मुंडा बहुल है। वहां शिबू को मुश्किल हो सकती है। मजबूरी में शिबू सोरेन ने पर्चा दाखिल कर दिया। विरोधी के रूप में झारखंड पार्टी के राजा पीटर मैदान में थे। 8 जनवरी 2009 को परिणाम आया, तो सीएम शिबू सोरेन करीब 9 हजार वोट से उपचुनाव हार गये थे। आखिर में उन्हें इस्तीफा देना पड़ा।

तीन बार के कार्यकाल में सिर्फ 10 महीने सरकार चलायी

तीन बार के कार्यकाल में शिबू सोरेन को 10 महीना 10 दिन ही राज्य की कमान संभालने का मौका मिला। शिबू सोरेन पहली बार 2 मार्च 2005 को झारखंड के मुख्यमंत्री की कुर्सी पर बैठे। वे 2 मार्च से 12 मार्च यानी कि सिर्फ 10 दिनों के लिए मुख्यमंत्री बने थे। इसके बाद शिबू सोरेन दूसरी बार 28 अगस्त 2008 को झारखंड के मुख्यमंत्री बने। इस बार उन्हें पांच महीने तक मुख्यमंत्री की कुर्सी पर बैठने का मौका मिला। उन्होंने 18 जनवरी 2009 को मुख्यमंत्री पद से इस्तीफा दे दिया। फिर तीसरी बार 30 दिसंबर 2009 को शिबू सोरेन झारखंड के मुख्यमंत्री बने। इस बार फिर उन्हें पांच महीने ही मुख्यमंत्री की कुर्सी पर बैठने का मौका मिला। उन्होंने 31 मई 2009 को मुख्यमंत्री के पद से इस्तीफा दे दिया।

गुरुजी का निधन... एक युग का अंत

झारखंड के युगपुरुष दिशोम गुरु शिबू सोरेन के निधन की खबर आते ही पूरा झारखंड स्तब्ध हो गया। झारखंडवासी शोक में डूब गये। उनके निधन पर झारखंड के हर दल के राजनेता और राज्य के हरेक व्यक्ति ने शोक संवेदना व्यक्त की है।

बाबा आपके संस्कार हमेशा मेरे साथ रहेंगे: बसंत सोरेन

रांची। झारखंड के सबसे कद्दावर नेताओं में गिने जाने वाले पूर्व मुख्यमंत्री शिबू सोरेन का सोमवार को देहांत हो गया। वह 81 साल के थे। करीब एक महीने से दिल्ली के एक अस्पताल में उनका इलाज चल रहा था। उनके निधन पर देशभर के नेताओं ने दुख जताया है। शिबू सोरेन के छोटे बेटे बसंत ने भी कुछ ऐसा ही दुख व्यक्त किया।बसंत सोरेन ने अपने एक्स अकाउंट पर लिखा, बाबा आप चले गये, पर आपकी छाया, आपके संस्कार और आपके सपने हमेशा मेरे साथ रहेंगे। मैं नि:शब्द हूं, आज सिर्फ आपका आशीर्वाद और आपकी यादें हैं।

गुरुजी का जाना हिमालय स्खलन है: सुप्रियो भट्टाचार्य

झामुमो के महासचिव सह प्रवक्ता, केंद्रीय समिति सुप्रियो भट्टाचार्य ने कहा कि झारखंड मुक्ति मोर्चा के संस्थापक संरक्षक दिशोम गुरु शिबू सोरेन का निधन पार्टी, झारखंड राज्य एवं समस्त देश के आदिवासी मूलवासी शोषित दलित मजदूर किसान महिला जन समुदाय के लिए हिमालय स्खलन है। गुरु जी ने अपने जीवनकाल में धारा के विपरीत जा कर संघर्ष किया और कभी भी पराजित नहीं हुए। गुरुजी के संघर्षपूर्ण जीवन को आत्मसात करते हुए देश के दबे कुचले समाज ने अपनी पहचान सम्मान और अधिकार प्राप्त किया। गुरुजी ने हमेशा अज्ञानता के विरूद्ध पढ़ाई, शोषण के विरुद्ध लड़ाई तथा सम्मान पूर्ण जीवन यापन के लिए संघर्ष करने की राह दिखायी।

आदिवासी समाज को उनकी कभी हमेशा खलेगी : शिल्पी

कृषि मंत्री शिल्पी नेहा तिर्की ने कहा कि झारखंड राज्य के पूर्व मुख्यमंत्री और राज्यसभा सांसद शिबू सोरेन गुरुजी थे और हमेशा गुरुजी ही रहेंगे। शिबू सोरेन के राजनैतिक सिद्धांत ने राज्य में कई आंदोलनों को दिशा देने का काम किया। समाज को एक बड़ी क्षति हुई है और आदिवासी समाज को उनकी कभी हमेशा खलेगी।

बाबा सिर्फ हमारे घर के मुखिया नहीं थे, वे हमारे जीवन के प्रकाश थे : सीता सोरेन

झारखंड मुक्ति मोर्चा के संस्थापक और राज्यसभा सांसद शिबू सोरेन के निधन पर उनकी बड़ी बहू सह पूर्व विधायक सीता सोरेन ने दु:ख जताया है। उन्होंने शिबू सोरेन के साथ बिताये पलों को याद करते हुए उन्हें नमन किया। सीता सोरेन ने कहा है कि बाबा (शिबू सोरेन) सिर्फ हमारे घर के मुखिया नहीं थे। वे हमारे जीवन के प्रकाश थे। हमारे अपने, हमारे मार्गदर्शक और हमारा सबसे बड़ा सहारा थे। आज जब वो हमारे बीच नहीं हैं, तो ऐसा लग रहा है, जैसे एक पूरा युग समाप्त हो गया हो। उन्होंने कहा कि उनके बिना ये घर अब वैसा नहीं रहेगा, उनकी हंसी, उनका स्नेह, उनकी डांट तक, सब कुछ अब यादों में रह गया है।

आदिवासी चेतना के प्रतीक थे गुरुजी : विनोद पांडेय

झारखंड मुक्ति मोर्चा के महासचिव, विनोद कुमार पांडेय ने कहा कि झारखंड की आत्मा आज शोकाकुल है। दिशोम गुरु, हमारे पिता तुल्य पथप्रदर्शक, आदिवासी चेतना के प्रतीक शिबू सोरेन जी का निधन एक युग के अंत जैसा है। उन्होंने न केवल झामुमो की नींव रखी, बल्कि एक समतामूलक और स्वाभिमानी झारखंड की कल्पना को साकार किया। आज जब वे हमारे बीच नहीं हैं, तो यह केवल एक नेता का जाना नहीं, बल्कि हमारे संघर्ष की जीवित आत्मा का पृथ्वी से विलीन हो जाना है। वे हमारे लिए संगठनकर्ता, विचार पुरुष, मार्गदर्शक और अपनेपन का दूसरा नाम थे। उन्होंने हमें सिखाया कि राजनीति लोगों की सेवा का माध्यम है, और समाज के अंतिम व्यक्ति के अधिकारों की रक्षा सबसे बड़ा धर्म है। उनकी सादगी, सिद्धांतवाद और संघर्ष की भावना आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा है।

दिशोम गुरु शिबू सोरेन के निधन पर प्रदेश कांग्रेस ने दी श्रद्धांजलि

झारखंड प्रदेश कांग्रेस कमेटी, झारखंड के पुरोधा आदिवासी समाज की आवाज और झारखंड आंदोलन के जननायक दिशोम गुरु शिबू सोरेन जी के निधन पर गहरा शोक व्यक्त करती है। इनका देहांत न केवल राजनीतिक क्षति है, बल्कि झारखंड की आत्मा का एक अहम स्तंभ हमारे बीच से चला गया। प्रदेश प्रभारी के राजू एवं प्रदेश अध्यक्ष केशव महतो कमलेश ने अपने संयुक्त शोक संदेश में कहा कि शिबू सोरेन जी का जीवन सामाजिक न्याय, संघर्ष और आत्मसम्मान की एक जीवंत मिसाल रहा है। उन्होंने भूमि अधिग्रहण, शोषण, आदिवासी अधिकार, और स्थानीय स्वशासन के लिए दशकों तक अथक संघर्ष किया। प्रदेश कांग्रेस कमेटी दिवंगत आत्मा की शांति के लिए ईश्वर से प्रार्थना करती है और शोक-संतप्त परिजनों, समर्थकों एवं समस्त झारखंड वासियों के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त करती है।

शिबू सोरेन का निधन राज्य को शोक में डुबो गया : सुबोधकांत

पूर्व केंद्रीय मंत्री सुबोधकांत सहाय ने कहा कि शिबू सोरेन कर निधन पूरे झारखंड को गहरे शोक में डुबो गया है। यह दुखद समाचार सुनकर में अपने आंसुओं को रोक नहीं सका। मुझे या सौभाग्य मिला कि मैंने उनके साथ दशकों तक राजनीतिक जीवन की यात्रा की। उनका जाना मानों एक युग के अंत जैसा महसूस होता है। यह अपूरणीय क्षति।

अपूरणीय क्षति है गुरुजी शिबू सोरेन का जाना : गौतम सागर राणा

राजद के वरिष्ठ नेता गौतम सागर राणा ने गुरुजी शिबू सोरेन के निधन को अपूरणीय क्षति बताया है। उन्होंने कहा कि निकट भविष्य में इसकी भरपायी संभव नहीं है। इनके संघर्ष की गाथा स्कूल के पाठ्यक्रम में शामिल किया जाना चाहिए। ताकि आज के बच्चे सीख ले सकें। उन्होंने कहा कि शिबू सोरेन के निधन से पूरा देश स्तब्ध है। वहीं राजद के अर्जुन यादव ने कहा कि शिबू सोरेन के साथ उन्हें काम करने का मौका मिला था। कई चीज उनसे सीखने को मिली। बोकारो महाविद्यालय के शिबू सोरेन अध्यक्ष थे उस समय हम सदस्य थे। उनकी मौत की खबर सुनकर दुखी हूं। झारखंड ने एक पुरोधा खो दिया है। सोरेन परिवार को राजद की ओर से संवेदना है।

शिबू सोरेन का जाना झारखंड के लिए अपूरणीय क्षति : बाबूलाल

पूर्व सीएम और नेता प्रतिपक्ष बाबूलाल मरांडी ने झामुमो के संरक्षक शिबू सोरेन के निधन पर कहा कि यह समाचार अत्यंत दु:खद है। यह झारखंड के लिए एक अपूरणीय क्षति है। ईश्वर उनकी आत्मा को शांति दे।

झारखंड आंदोलन के प्रणेता थे गुरुजी : दीपक प्रकाश

राज्यसभा सदस्य दीपक प्रकाश ने कहा कि शिबू सोरेन आज हमारे बीच नहीं है। वे झारखंड की आवाज थे। वे झारखंड की अस्मिता और झारखंड अलग राज्य के आंदोलन के प्रणेता के रूप में वे जाने जायेंगे। ईश्वर उनकी आमा को अपने चरणों में स्थान दे।

शिबू सोरेन एक नेता नहीं, बल्कि झारखंड की आत्मा थे : आदित्य साहू

राज्यसभा सदस्य आदित्य प्रसाद साहू ने कहा कि शिबू सोरेन केवल एक नेता नहीं, बल्कि झारखंड की आत्मा थे। वे झारखंड आंदोलन के जनक और संघर्ष के पर्याय रहे। शोषण और अन्याय के खिलाफ विद्रोह और हक के लिए जीवन गुजार दिया।

गुरुजी के निधन से झारखंड की राजनीति में बड़ा शून्य उत्पन्न हुआ : सरयू राय

जमशेदपुर पश्चिम के विधायक सरयू राय ने झारखंड के पूर्व मुख्यमंत्री और राज्यसभा के सांसद शिबू सोरेन के निधन को मर्माहत करने वाला बताया है। यहां जारी शोक संदेश में सरयू राय ने कहा कि स्वर्गीय शिबू सोरेन झारखंड की राजनीति के प्रतीक पुरुष के रूप में स्थापित हुए थे। उन्होंने झारखंड की राजनीति को नयी दिशा दी और प्रयास किया था कि झारखंड अपने विशेषताओं के साथ उतरोत्तर विकास करे। श्री राय ने कहा कि वर्ष 2000 में जब एकीकृत बिहार में नीतीश कुमार के नेतृत्व में अल्पकालीन सरकार बनी थी तो शिबू सोरेन और झारखंड मुक्ति मोर्चा ने उसका समर्थन किया था। उस समय वह राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (एनडीए) के बिहार प्रदेश संयोजक थे। उस नाते उन्हें इस मुहिम में शिबू सोरेन के साथ नजदीक से काम करने का मौका मिला था। तब उन्हें नजदीक से जाना था। इसके बाद वर्ष 2004 में 29 मई से दामोदर बचाओ आंदोलन आरंभ किया तो उसके बारे में भी शिबू सोरेन से विस्तृत चर्चा की थी।

शिबू सोरेन के निधन पर प्रदेश जदयू ने शोक प्रकट किया

पूर्व मुख्यमंत्री सह राज्यसभा सांसद शिबू सोरेन जी के निधन पर प्रदेश जदयू ने शोक प्रकट किया। प्रदेश अध्यक्ष सह राज्यसभा सांसद खीरू महतो ने कहा कि झारखंड ने एक मूर्धन्य नेता खो दिया। शिबू सोरेन झारखंड आंदोलन के अगुवा रहे और अलग झारखंड राज्य के निर्माण में बड़ी भूमिका निभायी। शिबू सोरेन के निधन से झारखंड को अपूर्णीय क्षति हुई है, जिसकी भरपायी असंभव है। जदयू नेता डॉ आफताब जमिल, श्रवण कुमार, भगवान सिंह, धर्मेंद्र तिवारी, सागर कुमार, उपेंद्र सिंह, अखिलेश राय, पिंटू सिंह, संजय सिंह सहित अन्य ने भी शिबू सोरेन के निधन पर शोक व्यक्त किया है।

झारखंड आंदोलन के अग्रदूत थे दिशोम गुरु : संजय सेठ

रक्षा राज्य मंत्री संजय सेठ ने शोक जताते हुए कहा कि दिशोम गुरु, शिबू सोरेन झारखंड आंदोलन के अग्रदूत थे। अभिभावक के रूप में सभी राजनीतिक विचारधाराओं से ऊपर उठकर उन्होंने हमेशा सभी के साथ प्रेम और सम्मान के साथ व्यवहार किया।

राजनीतिक और सामाजिक चेतना को क्षति : अर्जुन मुंडा

पूर्व मुख्यमंत्री अर्जुन मुंडा ने कहा कि दिशोम गुरु के साथ हमारा रिश्ता केवल राजनीतिक नहीं बल्कि पारिवारिक और आत्मीय था। उनका जाना न केवल मेरे लिए, बल्कि झारखंड की राजनीतिक और सामाजिक चेतना के लिए अपूरणीय क्षति है।

एक युग का अंत, गुरुजी के साथ बिताये पल याद आ रहे : चंपाई

पूर्व सीएम चंपाई सोरेन ने कहा कि दिशोम गुरु शिबू सोरेन के निधन की दुखद सूचना से शोकाकुल हूं। यह एक युग का अंत है झारखंड आंदोलन की भूमिका सराहनीय रही।

गुरुजी सार्वजनिक जीवन के आदर्श थे : महेश पोद्दार

पूर्व राज्यसभा सांसद महेश पोद्दार ने दिशोम गुरु शिबू सोरेन के निधन को भारतीय राजनीति में लोकसंघर्ष एवं आम जीवन की समस्याओं चुनौतियों की मुख्य वैचारिकी के लिए अपूरणीय क्षति बताया है। आदिवासी समाज की संघर्षशीलता त्रासद जीवन चर्या एवं शोषण के विरुद्ध हर मोर्चे पर जुझारू जन आंदोलन खड़ा करना, उसे परिणति देना उनकी विशेषता थी। सत्तात्मक राजनीति के सभी मूर्धन्य पदों के माध्यम से आम जनजीवन की चुनौतियों को स्वर देने वाला उनके जैसा नेता बिरले मिलते हैं। देश और खासकर झारखंड के लिए गुरुजी सार्वजनिक जीवन के आदर्श थे। उनकी कीर्ति और उपलब्धि अमर रहेगी।

झारखंड की राजनीति के एक युग का अंत : डॉ प्रदीप वर्मा

रांची। भाजपा के प्रदेश महामंत्री एवं राज्यसभा सांसद डॉ प्रदीप कुमार वर्मा ने झारखंड आंदोलन के अग्रणी नेता, झारखंड के पूर्व मुख्यमंत्री एवं पूर्व केंद्रीय मंत्री दिशोम गुरु शिबू सोरेन जी के निधन पर गहरा शोक व्यक्त किया है। डॉ वर्मा ने अपने शोक संदेश में कहा कि शिबू सोरेन जी का संपूर्ण जीवन झारखंड के आदिवासी समाज, गरीब, वंचित और पिछड़े वर्गों के अधिकारों की लड़ाई के लिए समर्पित रहा। उन्होंने झारखंड राज्य के निर्माण के आंदोलन में जो ऐतिहासिक भूमिका निभाई, उसे युगों-युगों तक याद किया जायेगा। उन्होंने राजनीतिक जीवन में संघर्ष, नेतृत्व और जनसेवा की एक मिसाल कायम की। डॉ वर्मा ने कहा कि शिबू सोरेन जी का निधन झारखंड की राजनीति के एक युग का अंत है। उनके विचार, योगदान और संघर्षों को हमेशा स्मरण किया जायेगा। भारतीय जनता पार्टी शोक की इस घड़ी में सोरेन परिवार एवं उनके शुभचिंतकों के प्रति अपनी गहरी संवेदना व्यक्त करती है। ईश्वर पुण्यात्मा को चिर शांति प्रदान करें और शोक संतप्त परिवार को इस अपार दुख को सहने की शक्ति दें।

मेरे पितातुल्य दिशोम गुरु का जाना मेरी व्यक्तिगत क्षति : रघुवर दास

पूर्व सीएम रघुवर दास ने कहा कि झारखंड आंदोलन के अनुआ, गुरु आदरणीय शिबू सोरेन जी के निधन मेरे लिए व्यक्तिगत क्षति है। वह मेरे पिलातुल्य रहे हैं। सदैव उनका सानिध्य मुझे मिला।

संघर्ष और बलिदान के एक युग का अंत : प्रतुल शाह देव

भाजपा के प्रदेश प्रवक्ता प्रतुल शाहदेव ने पूर्व मुख्यमंत्री शिबू सोरेन के असामयिक निधन को संघर्ष और बलिदान के एक युग का अंत बताया। प्रतुल ने कहा कि पूरा झारखंड आज शोक में डूबा है। गुरुजी ने अपने सामाजिक जीवन की शुरुवात महाजनी प्रथा और शराब के खिलाफ आंदोलन से की थी। एक गरीब परिवार का बेटा ने अपने संघर्ष के बदौलत अलग राज्य के आंदोलन में महती भूमिका निभाई और मुख्यमंत्री भी बनेगुरुजी आदिवासी अस्मिता के प्रतीक थे। उनका सादगी भरा जीवन अंत तक एक मिसाल रहा। प्रतुल ने कहा कि आने वाली पीढ़ियों को गुरुजी के जीवन के संघर्ष से प्रेरित होकर अनुसरण करना चाहिए। प्रतुल ने कहा कि मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने पुत्रधर्म बहुत अच्छे से निभाया। ईश्वर उनको और उनके परिजनों को इस बड़े दुख को सहने की शक्ति दें।

दिशोम गुरु का निधन एक युग का अवसान : सुदेश कुमार महतो

आजसू पार्टी के केंद्रीय अध्यक्ष एवं पूर्व उपमुख्यमंत्री सुदेश महतो ने गुरुजी के निधन पर कहा है कि एक युग का अवसान हो गया। जयपाल सिंह के बाद बिखर चुके झारखंड आंदोलन को गुरुजी ने एकजुट किया और नयी दिशा दी। उन्होंने आदिवासी समाज के सम्मान और अधिकारों की लड़ाई को जिस संकल्प और संघर्ष के साथ लड़ा, हम सभी के लिए प्रेरणा का स्रोत है। श्री महतो ने कहा कि मैंने व्यक्तिगत रूप से गुरुजी को नजदीक से देखा और जाना है। उनसे संवाद करना और आंदोलन के प्रत्येक मोड़ पर उनके अनुभवों से सीखना मेरे राजनीतिक जीवन की अमूल्य धरोहर है। उनका जाना झारखंड के एक युग का अंत है। श्री महतो ने कहा कि हमलोग छात्र जीवन से झारखंड आंदोलन और आजसू से जुड़ चुके थे। राह अलग होने के बावजूद गुरुजी की आत्मीयता हमेशा कायम रही और मुलाकात होने पर हमेशा उत्साहवर्द्धन करते रहे। झारखंड के भविष्य के लिए वह हमेशा चिंतित रहते थे। झारखंड बनने के बाद वह इसे देश के नंबर एक राज्य के रूप में देखना चाहते थे। उनकी कमी हम सब को हमेशा खलती रहेगी।

झारखंड ने एक महान भूमि पुत्र को खोया है : परिमल नथवानी

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। राज्यसभा सांसद परिमल नथवानी झारखंड के सम्माननीय नेता दिशोम गुरुजी शिबू सोरेन जी के निधन की खबर सुनते ही मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन से मिलने पहुंचे और अपनी शोक संवेदना प्रकट की। परिमल नथवानी ने कहा कि हेमंत सोरेन में मुझे एक शोक संतप्त पुत्र के अलावा अपने पिता के कार्यों और विरासत को आगे ले जाने की अटूट कर्मठता और प्रतिबद्धता की छवि दिखाई। नाथवानी ने कहा कि गुरुजी एक किंवदंती समान महान व्यक्ति थे जो न केवल आदिवासी समाज अपितु समाज के सभी वर्गों के कल्याण के लिए कार्य करते थे। उनके निधन से झारखंड ने एक महान भूमि पुत्र को खोया है। मैं दिवंगत आत्मा की चिर शांति के लिए प्रार्थना करता हूं।

दिशोम गुरु के निधन पर झारखंड पेरेंट्स एसोसिएशन ने जताया गहरा शोक

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। झारखंड पेरेंट्स एसोसिएशन के अध्यक्ष अजय राय ने झारखंड के पूर्व मुख्यमंत्री, आदिवासी चेतना के अग्रदूत एवं झारखंड मुक्ति मोर्चा के संस्थापक दिशोम गुरु शिबू सोरेन जी के निधन पर गहरा शोक व्यक्त किया है। राय ने कहा कि शिबू सोरेन जी का निधन केवल एक राजनीतिक नेता के जाने की खबर नहीं है, बल्कि यह झारखंड की आत्मा, उसकी पहचान और संघर्षशील चेतना के एक युग का अंत है। उन्होंने जनजातीय समाज, गरीबों, वंचितों और श्रमिकों की आवाज को राष्ट्रीय मंच तक पहुंचाया। वे एक ऐसे व्यक्तित्व थे, जिन्होंने न केवल झारखंड राज्य के गठन में अहम भूमिका निभाई बल्कि जन आकांक्षाओं के प्रतीक बनकर दशकों तक जनहित में संघर्ष किया। दिशोम गुरु के रूप में उनकी पहचान आज भी जनमानस में जीवित है और सदैव रहेगी। अजय राय ने कहा कि शिबू सोरेन जी का जीवन संघर्ष, समर्पण और नेतृत्व का अनुपम उदाहरण है। उनका निधन झारखंड ही नहीं, संपूर्ण भारतवर्ष के लिए अपूरणीय क्षति है। झारखंड पेरेंट्स एसोसिएशन की ओर से हम उनके प्रति अपनी हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं और ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्मा को शांति प्रदान करें एवं शोक संतप्त परिवार को इस कठिन समय में धैर्य व शक्ति प्रदान करें।

दिशोम गुरु शिबू सोरेन का निधन झारखंड की अपूरणीय क्षतिः भाकपा

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के रांची स्थित राज्य कार्यालय में झारखंड के पूर्व मुख्यमंत्री झारखंड आंदोलन के पुरोधा दिशोम गुरु शिबू सोरेन के निधन पर श्रद्धांजलि अर्पित किया। कहा कि झारखंड की अपूरणीय क्षति हुई है। श्रद्धांजलि सभा में मुख्य रूप से भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के राज्य सचिव महेंद्र पाठक, राष्ट्रीय परिषद के सदस्य पीके पांडेय, जिला सचिव अजय कुमार सिंह, वरिष्ठ नेता बाबूलाल झा, प्रोफेसर अली अंसारी, इम्तियाज खान मजदूर नेता लालदेव सिंह, सुनील शाह मौजूद थे। नेताओं ने कहा कि शिबू सोरेन जी का जाना झारखंड के लिए अपूरणीय क्षति है। दिशोम गुरु शिबू सोरेन जी ने भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी से राजनीति की शुरुआत किये थे और फिर बाद में उन्होंने झारखंड मुक्ति मोर्चा का गठन किया। अपनी पार्टी को राज्य की सत्ता तक पहुंचा कई बार सांसद एवं राज्यसभा सांसद भी रहे है। गुरु जी के भी राजनीतिक गुरुजी मजरूल हसन खान रामगढ़ विधायक के नेतृत्व में झारखंड की महाजनी प्रथा के खिलाफ आंदोलन में शामिल हुए थे। आज हम सब के बीच से जाना झारखंड के अमन पसंद शोषित पीड़ित दलित की आवाज को पहचानने वाले सभी दुखित हैं। भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी कार्यालय में उनके चित्र पर पुष्प अर्पित कर श्रद्धांजलि अर्पित की गयी। वहीं प्रण लिया कि उनके अधूरे सपने जल जंगल जमीन की हिफाजत के लिए कम्युनिस्ट पार्टी लड़ेगी। गुरुजी की यही सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

आजाद सिपाही
रांची, मंगलवार, 05 अगस्त, 2025
www.azadsipahi.in

अपने लाल की याद में शोक के महासागर में डूबा नेमरा

नेमरा गांव में लगा मंत्री से लेकर अधिकारियों तक का तांता, अंतिम संस्कार की तैयारी पूरी

दिशोम गुरु शिबू सोरेन का पैतृक गांव नेमरा में होगा अंतिम संस्कार

आजाद सिपाही संवाददाता

रामगढ़। झारखंड के लाल दिशोम गुरु शिबू सोरेन ने 81 वर्ष की उम्र में अंतिम सांस ली। दिल्ली के गंगाराम हॉस्पिटल में सोमवार को उनका निधन हो गया। रामगढ़ जिले के नेमरा गांव में अपने लाल का अंतिम दर्शन करने के लिए गांव के लोग शोक में डूबे रहे। सोमवार को जैसे ही शिबू सोरेन के निधन की खबर गांव में पहुंची, लोग हतप्रभ रह गये। वे तो बहा पर्व के लिए बाबा शिबू सोरेन का इंतजार कर रहे थे। उन्हें तो पूरा विश्वास था कि वह चिकित्सीय इलाज के बाद स्वस्थ होकर एक बार फिर वे बहा पर्व में शामिल होंगे। लेकिन विधाता के आगे किसी की नहीं चली। अपने लाल के मुखड़े के अंतिम दर्शन के लिए पूरा नेमरा गांव शोक के समुंद्र में डूबा रहा। गांव की हर गली में पसरा सन्नाटा साफ संकेत दे रहा था कि आदिवासियों का नेतृत्वकर्ता आज दुनिया से विदा हो गया है। आदिवासियों का कोई ऐसा पर्व और त्योहार नहीं था जब शिबू सोरेन अपने पूरे परिवार के साथ नेमरा गांव में उपस्थित नहीं होते थे। उनकी हाजिरी लोगों के दिलों में एक नया जोश पैदा करती थी। आज गांव का हर एक सदस्य उस ऐतिहासिक पुरुष को दिल से नमन करता हुआ दिखायी दिया।

मंत्री से लेकर अधिकारियों तक का लगा तांता : मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन के पिता दिशोम गुरु शिबू सोरेन के निधन के बाद नेमरा गांव में लोगों का जमावड़ा लग गया। यहां झारखंड राज्य के मंत्री से लेकर अधिकारियों तक का तांता लग रहा। सोमवार को झारखंड सरकार के मंत्री योगेंद्र प्रसाद, सुदिव्य कुमार सोनू नेमरा गांव पहुंचे और वहां की तैयारी का जायजा लिया। उन्होंने गांव में पहुंचे रामगढ़ डीसी फैज अक अहमद मुमताज, एसपी अजय कुमार, डीडीसी आशीष अग्रवाल सहित अन्य अधिकारियों से तैयारियों की जानकारी ली। जिस स्थान पर दिशोम गुरु का अंतिम संस्कार होगा वहां की व्यवस्था कैसी होगी, इस पर भी चर्चा की। अंतिम संस्कार के दौरान लगभग 50000 से अधिक की संख्या में लोग पहुंचेंगे। देश के कोने-कोने से आने वाले मुख्यमंत्री और दिग्गज नेताओं के अलावा आम जनता का भी जमघट यहां लगेगा। उन सभी लोगों के लिए गांव और निकटवर्ती स्थान पर होने वाली व्यवस्था के बारे में भी जानकारी हासिल की।

बढ़की नाला तट पर होगा अंतिम संस्कार

दिशोम गुरु शिबू सोरेन का पार्थिव शरीर मंगलवार की दोपहर उनके पैतृक गांव नेमरा में पहुंचेगा। यहां गांव वाले उस ऐतिहासिक महापुरुष का अंतिम दर्शन करेंगे। झारखंड राज्य के निर्माण में अहम भूमिका निभाने वाले शिबू सोरेन के पार्थिव शरीर का अंतिम संस्कार उनके घर के पास ही होगा। उनके घर के पीछे बढ़की नाला तट पर अवस्थित श्मशान घाट पर उन्हें मुखाग्नि दी जाएगी।

दिशोम गुरु शिबू सोरेन के निधन पर कांग्रेस नेता मुन्ना सिंह ने जताया शोक

हजारीबाग (आजाद सिपाही)। झारखंड आंदोलन के प्रणेता दिशोम गुरु शिबू सोरेन के निधन पर पूरे राज्य में शोक की लहर दौड़ गयी है। झारखंड की राजनीति के इस युगपुरुष के जाने से न केवल एक नेता, बल्कि एक संकल्प, एक विचार और एक आंदोलन की आवाज थम गयी है। पूर्व सदर विधानसभा कांग्रेस प्रत्याशी मुन्ना सिंह ने सोमवार को शोक व्यक्त करते हुए कहा कि दिशोम गुरु का जाना झारखंड की आत्मा का मौन हो जाना है। उन्होंने न केवल झारखंड राज्य की परिकल्पना की, बल्कि उसे अपने संघर्ष, त्याग और अनगिनत बलिदानों से मूर्त रूप दिया। उन्होंने आगे कहा कि शिबू सोरेन केवल एक राजनेता नहीं, बल्कि सामाजिक चेतना और आदिवासी अस्मिता के प्रतीक थे। उनका पूरा जीवन वंचितों, किसानों, श्रमिकों और आदिवासी समाज के अधिकारों के लिए संघर्ष करते हुए बीता। वे आंदोलनों की उपज नहीं थे, वे स्वयं एक आंदोलन थे। सिंह ने उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि शिबू सोरेन जी सत्ता में रहकर भी हमेशा जनता के बीच रहे। उन्होंने अपने आदर्शों से कभी समझौता नहीं किया। झारखंड उनके नाम से ही पहचाना जाता है। उनका संघर्ष और योगदान आने वाली पीढ़ियों को मार्गदर्शन देता रहेगा। उन्होंने ईश्वर से प्रार्थना की कि दिवंगत आत्मा को चिरशांति प्रदान करें और परिवारजनों, शुभचिंतकों तथा अनुयायियों को इस अपार दु:ख को सहने की शक्ति दें।

दिशोम गुरु शिबू सोरेन के निधन पर श्रद्धांजलि सभा का आयोजन

बरही (आजाद सिपाही)। राज्यसभा सांसद शिबू सोरेन के निधन पर सोमवार को बरही अनुमंडल कार्यालय और अवर निबंधन कार्यालय में श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया। इस दौरान एसडीओ जोहन टुडू के अगुवाई में अनुमंडल कर्मियों और अवर निबंधन कार्यालय के कर्मियों ने भाग लिया। सभा की शुरूआत दो मिनट के मौन श्रद्धांजलि से की गयी, जिसमें सभी उपस्थित लोगों ने दिवंगत नेता की आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना की। एसडीओ जोहन टुडू ने उन्हें याद करते हुए कहा कि पूर्व मुख्यमंत्री शिबू सोरेन झारखंड के संघर्षशील इतिहास के एक जीवंत प्रतीक थे। शोक सभा के दौरान मौके पर मौजूद अन्य कर्मियों ने भी अपने विचार को साझा किया। वहीं सभी ने उनके विचारों और योगदान को याद करते हुए कहा कि झारखंड उन्हें सदैव सम्मान और कृतज्ञता के साथ याद रखेगा।

अभिभावक तुल्य गुरु शिबू सोरेन के निधन से गहरा आघात पहुंचा : संजीव बेदिया

उरीमारी (आजाद सिपाही)। झारखंड मुक्ति मोर्चा के संरक्षक सह झारखंड के पूर्व मुख्यमंत्री सह झारखंड आंदोलन के जननायक और आदिवासी समाज की बुलंद आवाज आदरणीय दिशोम गुरु शिबू सोरेन जी का दिल्ली स्थित गंगा राम अस्पताल में सोमवार को निधन हो गया। इनके निधन पर झारखंड मुक्ति मोर्चा के केंद्रीय सदस्य सह हजारीबाग जिला अध्यक्ष संजीव बेदिया ने शोक व्यक्त करते हुए कहा कि झारखंड की राजनीति ने आज एक युगपुरुष खो दिया। अभिभावक तुल्य गुरु जी के निधन से गहरा आघात पहुंचा है। झारखंड के पूर्व मुख्यमंत्री सह झारखंड मुक्ति मोर्चा का स्तंभ शिबू सोरेन जी का निधन भारतीय राजनीति सह झारखंड राज्य में एक अपूरणीय क्षति है। शिबू सोरेन जी का संपूर्ण जीवन आदिवासी समाज के न्याय और उत्थान का प्रतीक है। उनका जाना एक युग का अंत है। झारखंड के आदिवासी दिलेर योद्धा, जननायक, दिशोम गुरु, मेरे आदर्श शिबू सोरेन जी को अंतिम जोहार।

शिबू सोरेन के निधन से झारखंड ने एक अनमोल हीरा खो दिया : जय शंकर पाठक

हजारीबाग (आजाद सिपाही)। हिन्दू धार्मिक न्यास बोर्ड के अध्यक्ष जय शंकर पाठक ने राज्यसभा के सदस्य दिशोम गुरु शिबू सोरेन के आकस्मिक निधन पर गहरा शोक व्यक्त किया है। श्री पाठक ने अपने शोक संदेश में कहा कि दिशोम गुरु सिबू सोरेन के निधन से झारखंड ने एक अनमोल हीरा खो दिया है। उन्होंने कहा कि झारखंड आंदोलन के पुरोधा और आदिवासी अस्मिता के प्रतिक और जन-जन के नेता सिबू सोरेन के निधन का समाचार अत्यंत दु:खद है उनका संपूर्ण जीवन संघर्ष, न्याय और अधिकार की लड़ाई को समर्पित रहा।

हर-हर महादेव के जयघोष से गूंजा रजरप्पा कोयलांचल

गिरिडीह सांसद चंद्रप्रकाश चौधरी ने रजरप्पा मंदिर से केशरिया ध्वज दिखाकर शिव भक्तों को रवाना किया

आजाद सिपाही संवाददाता

रजरप्पा। सावन के पवित्र महीना के अंतिम सोमवारी के मौके पर रजरप्पा स्थित छिन्नमस्तिके मंदिर में श्रद्धालुओं की भारी भीड़ उमड़ी हुई थी। इस दौरान लगभग 50 हजार की संख्या में श्रद्धालुओं ने रजरप्पा मंदिर पहुंचकर दामोदर भैरवी संगम स्थल से जल उठा कर चितरपुर प्रखंड के विभिन्न शिवालयों में हजारों की संख्या में श्रद्धालुओं ने जलाभिषेक किया। इससे पूर्व मुख्य अतिथि के रुप में मौजूद गिरिडीह सांसद चंद्रप्रकाश चौधरी द्वारा कांवरियों को विदा किया गया। इस दौरान उन्होंने भक्तों को सावन के अंतिम सोमवारी की बधाई दी। साथ ही उन्होंने कहा कि कांवरियां भगवान भोलेनाथ से राज्य की समृद्धि, खुशहाली और विकास की कामना करें। कांवर यात्रा के दौरान चारों ओर बोल बम का नारा है, हर हर महादेव, बाबा नगरिया दूर है, जैसे गगनभेदी नारों से पूरा रजरप्पा कोयलांचल क्षेत्र दिन भर गूंजता रहा। वही बाबा के गीतों की धुन पर हजारों कांवरिया झूमते नजर आए। सोमवार को पूरे रामगढ़ जिला सहित चितरपुर प्रखंड के हजारों श्रद्धालु सूरज निकलने के पूर्व ही रजरप्पा स्थित दामोदर भैरवी संगम पहुंचे। यहां से जल उठा कर हजारों श्रद्धालु अपने अपने क्षेत्र के शिवालयों में जलाभिषेक किया। इस दौरान पूर्व चितरपुर प्रखंड कांवरियों की भीड़ से फट गया। दामोदर और भैरवी नदी के संगम स्थल से उठाकर कांवरियों में जल्दी-जल्दी अपने क्षेत्र के शिवालय में पहुंचने की होड़ देखी गई। इस कांवर यात्रा में क्या बच्चे क्या बूढ़े सब शिव भक्ति में मस्त थे। इस दौरान महिलाओं का उत्साह देखते ही बनता था। अहले सुबह से ही शिव भक्तों का तांता विभिन्न वाहनों पर सवार होकर रजरप्पा मंदिर पहुंचने के लिए देखी गयी। इस दौरान जगह-जगह यात्रियों के स्वागत के लिए विभिन्न स्वयंसेवी संस्थाओं, क्लबो व राजनीतिक पार्टी के कार्यकर्ताओं द्वारा शिविर भी लगाया गया था। इन शिविरों में कांवर यात्रियों के लिए फल, फूल, शरबत और पीने के पानी की व्यवस्था की गई थी। कई शिविर में तो पानी के फुहारे भी लगाए गए थे। जिस पर कांवरियों ने खूब मस्ती की। चितरपुर प्रखंड के विभिन्न शिव मंदिरों में जलाभिषेक के लिए श्रद्धालुओं की भारी भीड़ देखी गयी। जिसमें चितरपुर महादेव मंदिर सहित मारंगमरचा, सौंढ़, छोटकीपोना, मुरूबन्दा, बडकीपोना, छोटकीलारी, कुंदरूकलां और रजरप्पा आवासीय कॉलोनी के शिव मंदिर शामिल है। जहां सावन के अंतिम सोमवारी को लेकर श्रद्धालुओं की भारी भीड़ देखी गयी। सावन के अंतिम सोमवार में उमड़ी भीड़ को देखते हुए रजरप्पा पुलिस द्वारा सुरक्षा के चाक चौबंद व्यवस्था किया गया था। चप्पे-चप्पे पर पुलिस के जवान तैनात किए गए थे। जो श्रद्धालुओं को कतारबद्ध होकर चलने का सलाह देते रहे। इसके अलावा लगभग 3 किलोमीटर पूर्व ही बड़े वाहनों को रोक दिया गया था। ताकि जाम की स्थिति ना बने। सुरक्षा व्यवस्था में रजरप्पा थाना प्रभारी कृष्ण कुमार सदल बल मंदिर क्षेत्र में पहुंचे श्रद्धालुओं के लिए तैनात रहे।

हाथियों ने लाखों रुपये की फसलों को रौंदा, घर तोड़ा

आजाद सिपाही संवाददाता

बड़कागांव। बड़कागांव प्रखंड के आंगो पंचायत के बाद बीती रात नापोखुर्द गांव के सुंदर साव के घर में हाथियों ने कहर बरपाया। हाथियों का आतंक दिन प्रतिदिन बढ़ता ही जा रहा है। जिन क्षेत्रों में हाथियों द्वारा आतंक मचाया जा रहा है, उस क्षेत्र के लोग रात भर भयभीत रह रहे हैं। प्रखंड के नापोखुर्द के सुंदर साव के घर में बीती रात हाथियों द्वारा मोटरसाइकिल, एलइडी टीवी सहित अन्य सामग्रियों का नुकसान किया जिससे लाखो रुपये की क्षति हुई। वहीं दर्जनों एकड़ भूमि में लगे फसलों को रौंद डाला। बड़कागांव में एक महीने से हाथियों का उत्पात जारी है। इससे फसलों का नुकसान ज्यादा हुआ है। इस संबंध में रेंजर कमलेश सिंह ने बताया कि हाथियों को भगाने के लिए वन विभाग की टीम लगी हुई है। जिन लोगों का नुकसान हुआ है, वे आवेदन दे सकते हैं।

कुजू में विशाल जलाभिषेक यात्रा निकाली गयी

कुजू (आजाद सिपाही)। हिंदू संगठनों ने श्रावण माह की अंतिम सोमवारी पर टूटीझरना शिव मंदिर से कुजू चौक शिव मंदिर तक विशाल जलाभिषेक यात्रा निकाला। इस यात्रा में हजारों की संख्या में शामिल शिवभक्तों ने उमंग और भक्तिभाव के साथ पैदल नाचते गाते जल लेकर मंदिर पहुंचे। साथ ही, जलार्पण कर आशीर्वाद मांगा। वहीं, समाजसेवी अर्जुन मेहता और जॉनी सिन्हा ने शरबत का व्यवस्था कराया। यात्रा के दौरान समाजसेवी आकाश सिंह ने कुजू ओपी प्रभारी आशुतोष सिंह समेत शामिल अतिथियों को अंग वस्त्र भेंटकर सम्मानित किया। यात्रा में कुजू पश्चिमी मुखिया जयकुमार ओझा उर्फ बुच बाबा, कुजू दक्षिणी मुखिया राकेश कुमार मेहता, जिला परिषद सदस्य सर्वेश सिंह, विश्वजीत कुमार, सुनील मेहता, सोनू केसरी, श्रवण शाह, अमर विश्वकर्मा, सुदीप मेहता, संजू मिश्रा, दीपक सिंह, सोनू गुप्ता, सुमित, वीरेंद्र करमाली, आकाश केसरी, नीरज, प्रवीण विश्वकर्मा, हिमांशु गुप्ता, रितिक, अमन, गौरव तांबेकर, शुभम सिंह, अभिषेक पासवान, राजकुमार राजू समेत हजारों की संख्या में धर्मप्रेमी शामिल रहे।

सावन की अंतिम सोमवारी पर आस्था का सैलाब, निकाली गयी कलश यात्रा

हिंदू धर्म की रक्षा करना, प्रत्येक हिन्दू का पहला कर्तव्य है : किशोरी राणा

आजाद सिपाही संवाददाता

हजारीबाग। सावन का अंतिम सोमवार के उप लक्ष्य में कटकमसांडी प्रखंड के ग्राम पंचायत लूपुंग और कंचनपुर में सोमवारी पूजा धूमधाम के साथ मनाया गया। इस दौरान कई जगहों पर कलश यात्रा निकाली गयी इस कलश यात्रा में हजारीबाग के चर्चित समाजसेवी श्रद्धानंद सिंह और कटकमसांडी के पूर्व विधायक प्रतिनिधि किशोरी राणा शामिल हुए पूजा समिति के सदस्यों ने दोनों अतिथियों को अंग वस्त्र देकर के सम्मानित किये। आज कलश यात्रा के साथ साथ मंदिरों में जलाभिषेक के साथ रुद्राभिषेक किया गया और श्रद्धालुओं के बीच भोग वितरण किया गया। शिवालयों में हर-हर महादेव, बोल-बम और ऊं नमः शिवाय गूंजायमान रहा। शोभायात्रा में लगभग 1001 महिला व युवतियां शामिल हुई। जल उठाने के समय मंत्रोच्चार के साथ पवित्र जल लेकर सभी श्रद्धालु मंदिर पहुंचे। मंदिर में भागवान शिव का जलाभिषेक व शिव का श्रृंगार किया गया। इसके बाद सभी श्रद्धालुओं ने भोलेनाथ की विधिवत पूजा-अर्चना की। पूजन के बाद श्रद्धालुओं के बीच महाभोग का वितरण किया गया। बता दे कि कंचनपुर के प्राचीन शिव मंदिर में महिलाएं द्वारा हर सोमवार को शिव चर्चा किया जाता है इस उपलक्ष्य में यहां उपस्थित महिलाएं द्वारा आज से पूर्व, हजारीबाग के सांसद मनीष जायसवाल से कालीन का मांग किया गया था ताकि महिलाएं उस कालीन में बैठ कर अच्छे से शिव चर्चा कर पाये। जिस में आज कटकमसांडी के पूर्व विधायक प्रतिनिधि किशोरी राणा ने सांसद के निर्देशानुसार द्वारा महिलाएं को चार पिस कालीन का व्यस्था करा दिया। मौके पर पूर्व विधायक प्रतिनिधि किशोरी राणा, पूर्वी मंडल अध्यक्ष प्रकाश कुशवाहा, पूर्व मंडल अध्यक्ष जीवन मेहता, मुखिया प्रतिनिधि अशोक राणा, युवा मोर्चा के प्रखंड अध्यक्ष दीपक मेहता, बीरेंद्र ओझा, उमेश गुप्ता, विकाश मेहता, लेखराज यादव और दर्जनों गणमान्य लोग मौजूद थे।

कांवर यात्रा में हजारों श्रद्धालुओं ने लिया भाग

कोडरमा (आजाद सिपाही)। सावन माह की अंतिम सोमवारी के पावन अवसर पर हजारों श्रद्धालुओं ने झरना कुंड धाम से ध्वजाधारी धाम तक भव्य कांवर पद यात्रा निकाली। इस पुण्य यात्रा में श्रद्धालुओं की आस्था और उत्साह देखते ही बन रहा था। इस क्रम में उपायुक्त ऋतुराज स्वयं ध्वजाधारी धाम पहुंचे और मौके पर सुरक्षा, विधि-व्यवस्था और यातायात प्रबंधन की समीक्षा की। उन्होंने प्रतिनियुक्त दंडाधिकारी और पुलिस पदाधिकारियों को कांवर यात्रा के सफल और शांतिपूर्ण संचालन हेतु आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। इस दौरान भव्य कांवर यात्रा निकली जिसमें हजारों की संख्या में श्रद्धालुओं ने भाग लिया। उपायुक्त ने कहा कि श्रद्धालुओं की सुरक्षा सर्वोच्च प्राथमिकता है और इसके लिए जिला प्रशासन पूरी तरह से सतर्क और प्रतिबद्ध है। इस अवसर पर पुलिस अधीक्षक अनुदीप सिंह, अनुमंडल पदाधिकारी रिया सिंह, अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी अनिल कुमार सिंह, पुलिस उपाधीक्षक रतिभान सिंह सहित अन्य दंडाधिकारी व पुलिस बल के जवान उपस्थित रहे। जिला प्रशासन ने सभी श्रद्धालुओं से अपील की है कि वे यात्रा के दौरान नियमों का पालन करें और प्रशासन के साथ सहयोग करें ताकि यह धार्मिक आयोजन शांतिपूर्ण व सफलतापूर्वक संपन्न हो सके।

दिशोम गुरु शिबू सोरेन के निधन पर शोक सभा का आयोजन

चतरा (आजाद सिपाही)। झारखंड में तीन बार मुख्यमंत्री रह चुके और वर्तमान में राज्य सभा सांसद और झारखंड की अस्मिता और आदिवासी अधिकारों की आवाज बुलंद करने वाले दिनों गुरु शिबू सोरेन के निधन से जिले में शोक की लहर है। जिले के सरकारी और गैर-सरकारी संस्थानों, शिक्षण संस्थानों, समेत अन्य स्थानों में शोक सभा का आयोजन कर उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि दी गयी। इस मौके पर जिले में तीन दिवसीय राजकीय शोक होने के कारण सभी सरकारी कार्यालयों में शोक सभा का आयोजन कर बंद कर दिया गया। समाहरणालय के सभागार में एक शोक सभा का आयोजन किया गया। इस अवसर पर जिला प्रशासन के सभी वरीय पदाधिकारी और कर्मी उपस्थित थे। इस मौके पर दिवंगत आत्मा की शांति के लिए दो मिनट का मौन रखा गया। उपस्थित अधिकारियों और कर्मचारियों ने शिबू सोरेन द्वारा झारखंड के सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक क्षेत्र में दिये गये योगदान को स्मरण करते हुए गहरी संवेदना व्यक्त की। सदर अस्पताल परिसर में भावपूर्ण शोक सभा आयोजित की गयी। शोक सभा में अस्पताल के सभी चिकित्सक, नर्सिंग स्टाफ, स्वास्थ्यकर्मी और कर्मचारियों ने दो मिनट का मौन रखकर उन्हें श्रद्धांजलि दी। इस शोक सभा का नेतृत्व सदर अस्पताल के उपाधीक्षक डॉक्टर पंकज कुमार ने किया। इस दौरान उन्होंने कहा कि शिबू सोरेन का निधन झारखंड के लिए अपूरणीय क्षति है। राज्य की राजनीति और जनजीवन में उनका योगदान दिया भुलाया नहीं जा सकता। इस मौके पर बताया गया कि शिबू सोरेन पिछले कई महीनों से अस्वस्थ चल रहे थे और उनका इलाज दिल्ली के एक प्रतिष्ठित अस्पताल में चल रहा था। रविवार देर रात उनका निधन हो गया, जिससे पूरे राज्य में शोक की लहर दौड़ गयी।

कल लगेगा नि:संतानता परामर्श शिविर

लोहरदगा (आजाद सिपाही)। सनराइज हॉस्पिटल, नयी रोड एमआर मार्केट, पटेल भवन के पास (कटहल पेड़ के बगल) में 6 अगस्त 2025, दिन बुधवार को नि:शुल्क नि:संतानता परामर्श शिविर का आयोजन किया जा रहा है। यह शिविर देश की प्रसिद्ध स्त्री एवं आइवीएफ रोग विशेषज्ञ डॉ जया भट्टाचार्य (एमबीबीएस, स्त्री रोग एवं नि:संतानता विशेषज्ञ) के मार्गदर्शन में आयोजित होगा। सनराइज हॉस्पिटल के संचालक विकास अग्रवाल ने जानकारी देते हुए बताया कि यह एकदिवसीय शिविर सुबह 10 बजे से दोपहर 2 बजे तक चलेगा। उन्होंने बताया कि जो महिलाएं लंबे समय से संतान सुख से वंचित हैं, वे इस शिविर में आकर विशेषज्ञ चिकित्सक से नि:शुल्क परामर्श प्राप्त कर सकती हैं। सभी इच्छुक महिलाएं समय पर पहुंचकर इस विशेष अवसर का लाभ उठाएं।

दिशोम गुरु शिबू सोरेन और वरिष्ठ पत्रकार हरिनारायण सिंह के निधन पर भाजपा ने जताया शोक

लोहरदगा (आजाद सिपाही)। झारखंड आंदोलन के अग्रणी नेता, झारखंड मुक्ति मोर्चा के संस्थापक, राज्यसभा सांसद दिशोम गुरु शिबू सोरेन और वरिष्ठ पत्रकार हरिनारायण सिंह के निधन पर भारतीय जनता पार्टी लोहरदगा जिला इकाई ने गहरा शोक व्यक्त किया है। पार्टी ने दिवंगत आत्मा की शांति और शोक संतप्त परिजनों को धैर्य प्रदान करने की ईश्वर से प्रार्थना की है। शोक प्रकट करने वालों में जिला अध्यक्ष मनीर उरांव, समीर उरांव (पूर्व राज्यसभा सांसद), सुदर्शन भगत (पूर्व केंद्रीय मंत्री), प्रवीण सिंह (पूर्व विधान पार्षद), ओम प्रकाश सिंह, श्रीचंद्र प्रजापति, राजकिशोर महतो, अजात शत्रु, राजमोहन राम, विनोद राय, रिपुसूदन साहू, हर्षनाथ महतो, अजय मित्तल, देवाशीष कार, राजकुमार वर्मा, राजेश महतो, संजय कुमार, मिथुन तमेड़ा, मीणा बाखला, कैलाश महतो, विमलकांत सिंह, विश्वजीत सहदेव, भारती सिन्हा, संगीता कुमारी, निधि प्रसाद, विवेक चौहान, अमरेश भारती, राजू शर्मा, धनंजय तिवारी, बजरंग करूवा, अशोक कास्यकार, लालू सिंह सहित सैकड़ों भाजपा कार्यकर्ता एवं पदाधिकारी शामिल हैं।

दिशोम गुरु के निधन पर जमीयतुल कुरैश चौरासी पंचायत के प्रदेश अध्यक्ष ने जताया शोक

लोहरदगा (आजाद सिपाही)। झारखंड राज्य के निर्माता, दिशोम गुरु शिबू सोरेन के निधन पर जमीयतुल कुरैश चौरासी पंचायत के झारखंड प्रदेश अध्यक्ष हाजी अफसर कुरैशी ने गहरा शोक व्यक्त किया है। उन्होंने अपने शोक संदेश में कहा दिशोम गुरु शिबू सोरेन न सिर्फ झारखंड आंदोलन के प्रणेता थे, बल्कि उन्होंने आदिवासियों, वंचितों और पिछड़ों की आवाज को राष्ट्रीय मंच तक पहुंचाया। उनके नेतृत्व और संघर्ष की मिसाल सदियों तक दी जाती रहेगी। उनका निधन झारखंड ही नहीं, पूरे देश के लिए अपूरणीय क्षति है। हम उनके प्रति गहरी श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं और ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्मा को शांति प्रदान करें। हाजी अफसर कुरैशी ने शिबू सोरेन के परिवारजनों, झारखंड मुक्ति मोर्चा के कार्यकर्ताओं और पूरे राज्यवासियों के प्रति संवेदना प्रकट की और कहा कि झारखंड की धरती एक महान सपूत को खो चुकी है, लेकिन उनकी विचारधारा और योगदान हमेशा जीवित रहेंगे।

शिबू सोरेन को समाहरणालय में दी गयी श्रद्धांजलि

लोहरदगा (आजाद सिपाही)। झारखंड आंदोलन के प्रणेता, झारखंड मुक्ति मोर्चा के संस्थापक, राज्यसभा सांसद दिशोम गुरु शिबू सोरेन के निधन पर लोहरदगा जिले में शोक की लहर है। सोमवार प्रात: दिल्ली के गंगाराम अस्पताल में उनके निधन की सूचना मिलते ही जिला प्रशासन ने उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की। समाहरणालय परिसर में जिला के वरीय पदाधिकारियों एवं कर्मियों द्वारा दिवंगत नेता के सम्मान में दो मिनट का मौन रखा गया। इस दौरान अधिकारियों ने उनके चित्र पर माल्यार्पण कर श्रद्धासुमन अर्पित किए और उनके संघर्षपूर्ण राजनीतिक जीवन तथा राज्य के प्रति योगदान को स्मरण किया। कार्यक्रम में जिले के अनेक प्रशासनिक अधिकारी एवं कर्मचारीगण उपस्थित रहे।

नारी सम्मान ग्रुप ने सावन महोत्सव मनाया

लोहरदगा (आजाद सिपाही)। नारी सम्मान ग्रुप द्वारा होटल अमृत पैलेस में सावन महोत्सव का आयोजन किया गया। इस सावन महोत्सव में लोहरदगा के विभिन्न क्षेत्र के महिलाओं ने उल्लास पूर्वक भाग लिया। कार्यक्रम की शुरूआत दीप प्रज्वलित तथा गणेश वंदना से हुई। तत्पश्चात ग्रुप की महिलाओं ने रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम पेश किया। इस अवसर पर सावन के गीतों पर महिलाओं ने विभिन्न प्रकार के नृत्य प्रस्तुत करते हुए अपने प्रतिभाओं को पेश किया। अध्यक्ष रचना रॉय ने सावन के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि सावन एक बहुत पवित्र और शिव भक्ति का महीना है इसमें हर रंग का अपना विशेष महत्व है जो भगवान शिव को बहुत प्रिय है। सावन में सोलह श्रृंगार का भी अपना विशेष महत्व है। इस अवसर पर वनवासी कल्याण केंद्र नगर समिति की अध्यक्षा सुमन राय, रीता अग्रवाल तथा लक्ष्मी अग्रवाल ने ग्रुप की सभी सदस्यों तथा अध्यक्ष रचना राय को क्राउन पहनाकर सम्मानित किया तथा उन्होंने ग्रुप के सभी सदस्यों को बधाई देते हुए कहा कि विषम परिस्थितियों में भी आपसी सहयोग के द्वारा आपलोगों के द्वारा चलाए जा रहे हैं। विभिन्न सामाजिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम को हमेशा आगे बढ़ाते रहें। इस अवसर पर अध्यक्ष रचना राय,रिमझिम पांडे, आकांक्षा पाठक रचना पाठक, अनु अग्रवाल, मंजू सोनी, संगीता प्रजापति, संगीता गुप्ता,मुक्ता पांडे, विनीत वर्मा, नवोनीता विश्वकर्मा, प्रेरणा खत्री,रुना पाठक, लक्ष्मी देवी, प्रीति एवं सुंदर कला आदि उपस्थित थी।

निष्पक्ष पत्रकारिता के लिए जाने जाते थे हरिनारायण सिंह : रवि डे

चंदवा (आजाद सिपाही)। चंदवा के समाजसेवी रवि कुमार डे ने एक प्रेस विज्ञप्ति जारी करते हुए कहा कि झारखंड ने अपने प्रख्यात और सम्मानित वरिष्ठ पत्रकार हरि नारायण सिंह को खो दिया है। पत्रकारिता में एक युग का अंत हुआ स्वर्गीय सिंह पत्रकारिता के जगत में एक मजबूत स्तंभ के रूप में जाने जाते थे। अपने लेखनी के माध्यम से हमेशा जनहित सामाजिक सरोकार और निष्पक्ष पत्रकारिता का मिसाल कायम करते थे। उनकी लेखन शैली न केवल प्रभावशाली थी बल्कि समाज के विभिन्न मुद्दों को उजागर करने में भी सक्षम रहती थी। उन्हें खोने से आज पूरा झारखंड ही नहीं पूरे देश में पत्रकारिता जगत में मायूसी छा गया है। मैं उनके कार्य को देखते हुए व्यक्तिगत रूप में उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और भगवान से आशा करता हूं कि प्रलोक में श्री चरणों में स्थान दें। आज अपने दम पर पूरे झारखंड के अंदर सैकड़ो लोगों का प्रेरणा स्रोत बने हुए हैं। झारखंड के पत्रकारिता जगत में हमेशा हरिनारायण सिंह का नाम पहले स्थान में रहेगा।

आंगनबाड़ी सेविकाओं ने सरकारी कर्मी का दर्जा देने की मांग की, सौंपा मांग पत्र

दिशोम गुरु के निधन पर जताया शोक

आजाद सिपाही संवाददाता

लातेहार। लातेहार समाहरणालय के समक्ष झारखंड प्रदेश आंगनबाड़ी वर्कर्स यूनियन, रांची द्वारा मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन को संबोधित एक ज्ञापन उपायुक्त को सौंपा गया। ज्ञापन के माध्यम से राज्य की 36,500 आंगनबाड़ी सेविकाओं और सहायिकाओं के लिए सात सूत्री मांग पत्र प्रस्तुत किया गया। यूनियन की प्रमुख मांगों में सरकारी कर्मचारी का दर्जा, सेवानिवृत्ति पर 5 लाख की आर्थिक सहायता, मानदेय का आधा पेंशन और बीएलओ कार्य से तत्काल मुक्ति शामिल है। यूनियन के प्रदेश कार्यकारी अध्यक्ष बालमुकुंद सिन्हा, प्रदेश संयोजक रामचन्द्र पासवान, प्रदेश अध्यक्ष वीणा सिन्हा, जिला अध्यक्ष कविता नागसिया समेत विभिन्न जिलों और प्रखंडों के पदाधिकारियों ने अपनी पीड़ा व्यक्त करते हुए कहा कि आंगनबाड़ी योजना की शुरूआत 02 अक्टूबर 1975 को हुई थी और आज देशभर में 26 लाख से अधिक सेविकाएं कार्यरत हैं। झारखंड में इनकी संख्या 36,500 है। लेकिन 62 वर्ष की उम्र पूर्ण होते ही इन्हें बिना किसी सेवानिवृत्ति लाभ के बाहर कर देना, अन्यायपूर्ण और अमानवीय है। ज्ञापन में पश्चिम बंगाल सरकार का उदाहरण देते हुए मांग की गई कि झारखंड में भी उसी तर्ज पर सेविकाओं को 5 लाख आर्थिक लाभ एवं मानदेय का आधा पेंशन लागू किया जाए। यूनियन ने वर्ष 2022 के झारखंड सरकार के संकल्प पत्र का हवाला देते हुए कहा कि उसमें हर वर्ष सेविकाओं के मानदेय में 500 और सहायिकाओं के लिए 250 की वृद्धि का वादा किया गया था। लेकिन अब मांग की जा रही है कि इसे बढ़ाकर क्रमशः ?1000 और 500 किया जाए और अनुशंसा की बाध्यता समाप्त की जाए। एक अहम मुद्दा केंद्र सरकार द्वारा लागू फेस रिकग्निशन सिस्टम है, जिससे सेविकाओं को भारी तकनीकी कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है। इसके अलावा, यूनियन ने पिछले दस वर्षों से बंद पड़ी विभागीय पदोन्नति प्रक्रिया को चालू करने, सहायिका को सेविका और सेविका को पर्यवेक्षिका के पद पर प्रोन्नत करने तथा उम्र सीमा की बाध्यता हटाने की भी मांग की है। साथ ही, समाज कल्याण निदेशालय के 07 अप्रैल 2025 के पत्र का हवाला देते हुए बीएलओ कार्य से सेविकाओं को तत्काल मुक्त करने की आवश्यकता पर बल दिया गया है।

शिबू सोरेन का संपूर्ण जीवन झारखंड की अस्मिता के लिए समर्पित रहा : धीरज साहू

आजाद सिपाही संवाददाता

लोहरदगा। झारखंड आंदोलन के अग्रणी नेता, दिशोम गुरु शिबू सोरेन के निधन पर जिला कांग्रेस कमिटी, लोहरदगा द्वारा गहरा शोक व्यक्त किया गया। कांग्रेस के वरिष्ठ और पूर्व राज्यसभा सांसद धीरज प्रसाद साहू ने राज्यसभा सांसद और जेएमएम के संस्थापक शिबू सोरेन के निधन पर गहरा शोक व्यक्त किया है। कहा कि झारखंड के पूर्व मुख्यमंत्री, आदिवासी समाज की आवाज, संघर्ष और जनसेवा की जीवंत प्रतीक दिशोम गुरु शिबू सोरेन के निधन का अत्यंत दुःखद समाचार प्राप्त हुआ। उनका संपूर्ण जीवन जनहित, सामाजिक न्याय और झारखंड की अस्मिता के लिए समर्पित रहा। उन्होंने जिस दृढ़ता से आदिवासी समुदाय के अधिकारों की लड़ाई लड़ी, वह आने वाली पीढ़ियों को सदैव प्रेरित करती रहेगी। इस कठिन समय में मैं झारखंड के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन एवं शोकसंतप्त परिवार के प्रति गहरी संवेदना प्रकट करता हूं। ईश्वर दिवंगत आत्मा को चिरशांति प्रदान करें।

इधर जिला कांग्रेस कमिटी के अध्यक्ष सुखैर भगत के अध्यक्षता में एक शोक सभा का आयोजन किया गया, जिसमें दिवंगत नेता के प्रति मौन धारण कर श्रद्धांजलि अर्पित की गयी। शोक सभा में उपस्थित नेताओं एवं कार्यकर्ताओं ने झारखंड आंदोलन में शिबू सोरेन के योगदान को याद किया और उनके आदिवासी समाज के प्रति संघर्ष, नेतृत्व एवं त्याग को नमन किया। जिला अध्यक्ष सुखैर भगत ने कहा कि झारखंड आंदोलन के जननेता शिबू सोरेन ने अलग झारखंड राज्य की मांग को राष्ट्रीय पहचान दिलाई। वे झारखंड मुक्ति मोर्चा (जेएमएम) के संस्थापक नेताओं में से थे। आदिवासी अधिकारों की आवाजः उन्होंने आदिवासी समुदाय के जल, जंगल, जमीन के हक के लिए संसद से लेकर सड़कों तक संघर्ष किया।

झारखंड ने अपना अभिभावक खो दिया : बन्ना गुप्ता

जमशेदपुर (आजाद सिपाही)। झारखंड सरकार के पूर्व मंत्री बन्ना गुप्ता ने दिशोम गुरु शिबू सोरेन के निधन पर गहरा शोक व्यक्त की। उन्होंने कहा आज झारखंड ने अपना अभिभावक और देश ने एक आंदोलनकारी युग को खो दिया है।बन्ना गुप्ता ने कहा शिबू सोरेन ने आदिवासी, गरीब, शोषित और वंचितों के अधिकारों के लिए जीवनभर संघर्ष किया और झारखंड को अलग राज्य का स्वरूप दिलाया।मेने जब भी उनसे मिला उन्होंने मुझे मार्गदर्शन दिए।पूर्व मंत्री ने कहा जल-जंगल-जमीन के लिए उनका संघर्ष इतिहास में स्वर्ण अक्षरों में लिखा जाएगा। उन्होंने कहा इस दुख की घड़ी में वे मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन और उनके परिवार के साथ खड़े हैं।

सीआरपीएफ ने चलाया पौधरोपण अभियान

आजाद सिपाही संवाददाता

लातेहार। लातेहार सोमवार को 11वीं वाहिनी, केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के मुख्यालय, किनामाड़ कैम्प, लातेहार में वृक्षारोपण अभियान का आयोजन किया गया। इस अभियान के अंतर्गत कमांडेंट याद राम बुनकर, 11 वीं बटालियन, अन्य अधिकारीगण एवं बटालियन के जवानों ने अपने परिवारजनों के साथ विभिन्न प्रकार के पौधों का रोपण किया। इस अवसर पर कमांडेंट याद राम बुनकर ने संबोधित करते हुए कहा कि सभी कार्मिकों द्वारा अपने-अपने परिवार के साथ मिलकर दो-दो पौधे लगाए गए हैं। उन्होंने यह भी कहा कि केवल पौधे लगाना ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि उनकी देखभाल करना भी उतना ही आवश्यक है। पेड़ लगाने से वायु प्रदूषण को कम किया जा सकता है और गर्मी से भी राहत मिलती है।वृक्षारोपण अभियान 2025 के तहत 11वीं बटालियन, उफ्द्धत्र्ह द्वारा कुल 5000 पौधे लगाने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। इस अभियान की शुरूआत 05 जून 2025 को विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर पौधारोपण करके की गयी थी। अब तक बटालियन द्वारा सरयू, सीमाखास, टोंगारी एवं लाभर क्षेत्रों में लगभग 2000 पौधे लगाए जा चुके हैं।

सरायकेला पुलिस ने अपहरण कांड के चार आरोपी को पकड़ा

आजाद सिपाही संवाददाता

सरायकेला। सरायकेला खरसावां जिले में एक बड़े अपहरण कांड का सरायकेला पुलिस ने सफलतापूर्वक खुलासा कर दिया। सोमवार को एसपी मुकेश कुमार लुणायत के नेतृत्व में डीएसपी समीर कुमार सवैया, इंस्पेक्टर नितिन कुमार सिंह, थाना प्रभारी विनय कुमार,सीनी ओपी प्रभारी राजेंद्र कुमार और खरसावां ओपी प्रभारी गौरव कुमार ने कारवाई करते हुए चार आरोपियों को गिरफ्तार कर न्यायिक हिरासत में भेज दिया। गिरफ्तार आरोपियों में शेख अजहरुद्दीन, मो.कलिम,अमीर खान उर्फ भोन्दा और अब्दुल्ला खान उर्फ अब्दुल्ला फैजी शामिल हैं। पुलिस ने इनके पास से एक देशी कट्टा, छह जिंदा कारतूस,टाटा विस्टा कार और एक मोबाइल फोन बरामद किया। पुलिस के अनुसार शेख अजहरुद्दीन और मो. कलिम के खिलाफ विभिन्न थानों में आपराधिक मामले दर्ज हैं। जबकि अब्दुल्ला पहले भी इस मामले में जेल जा चुका है।सरायकेला पुलिस की सफलता से क्षेत्र में अपराध पर लगाम लगाने में मदद मिलेगी।

शिबू सोरेन झारखंड के प्रेरणास्त्रोत थे : अरविंद

आदित्यपुर (आजाद सिपाही)। ईचागढ़ के पूर्व विधायक अरविंद कुमार सिंह उर्फ मलखान सिंह ने पूर्व मुख्यमंत्री और राज्यसभा सांसद शिबू सोरेन के निधन पर गहरा शोक व्यक्त की। उन्होंने कहा गुरुजी झारखंड के प्रेरणास्त्रोत थे और उनके निधन से आदिवासी समाज सहित पूरे देश को अपूरणीय क्षति हुई है।अरविंद सिंह ने कहा शिबू सोरेन ने आंदोलन के जरिए अपनी पहचान बनाई और महाजनी प्रथा के खिलाफ संघर्ष कर झारखंड को अलग राज्य दिलाने में अहम भूमिका निभाई। उन्होंने दिवंगत आत्मा की शांति और शोकाकुल परिवार को संबल प्रदान करने की ईश्वर से प्रार्थना की।

दाहीगोड़ा डेली मार्केट में दिशोम गुरु शिबू सोरेन को दी श्रद्धांजलि

आजाद सिपाही संवाददाता

घाटशिला। झारखंड के पूर्व मुख्यमंत्री और झारखंड आंदोलन के पुरोधा दिशोम गुरु शिबू सोरेन के निधन की खबर मिलते ही दाहीगोड़ा स्थित डेली मार्केट में श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया। सोमवार को सभा मे विधायक प्रतिनिधि जगदीश भगत ने कहा गुरुजी शोषितों की आवाज और आदिवासी समाज के हक-हूकूक के लिए संघर्ष करने वाले महान नेता थे।उन्हें सत-सत नमन करते हुए उनकी पुण्य आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना करते है।जगदीश भगत ने बताया उनके सम्मान में इस बाजार का नाम वर्षों से गुरुजी के नाम पर रखा गया था। मौके पर बाबूलाल मुर्मू, प्रताप दास, आजाद बेहरा सहित कई सब्जी विक्रेता ने श्रद्धांजलि अर्पित कर नमन किया।

फरार चोर को पुलिस ने पकड़ा

लोहरदगा (आजाद सिपाही)। जिले की सक्रिय पुलिस टीम को एक बार फिर बड़ी सफलता हाथ लगी है। बीते 24 जून की रात जुरिया रोड स्थित एक घर में चोरी की घटना के मामले में फरार चल रहे आरोपी अरुण उरांव उर्फ लैला (उम्र 21 वर्ष) को पुलिस ने रविवार शाम मैना बगीचा से गिरफ्तार कर लिया। ज्ञात हो कि घटना के दिन मौके से पुलिस ने दो आरोपियों –संतोष उरांव और जीतराम उरांव को गिरफ्तार किया था। इनके पास से एक देशी कट्टा, चोरी की गयी मोटरसाइकिल, 7.5 केवी का जनरेटर और एक पिकअप वैन बरामद की गयी थी। जबकि तीन अन्य आरोपी मौके से फरार हो गये थे। फरार अभियुक्तों की गिरफ्तारी के लिए पुलिस लगातार छापेमारी कर रही थी। इसी क्रम में 3 अगस्त को शाम 7:30 बजे लोहरदगा थाना की टीम ने अरुण उरांव को गिरफ्तार किया। पुलिस ने उसकी निशानदेही पर चोरी की गयी पैशन प्रो मोटरसाइकिल (रजि नं जेएच 08 जी 9996) भी बरामद कर ली है। पुलिस के अनुसार अरुण उरांव एक शातिर और सक्रिय अपराधी है, जो अपने साथियों के साथ रांची और लोहरदगा जिले के विभिन्न थाना क्षेत्रों में चोरी और लूट की घटनाओं को अंजाम देता रहा है। उसके खिलाफ लोहरदगा, टाटीसिलवे, बेड़ो, चतरा व लापुंग थानों में एक दर्जन से अधिक मामले दर्ज हैं। गिरफ्तारी में थाना प्रभारी रत्नेश मोहन ठाकुर, पुअनि रवि रंजन कुमार, रमेश कुमार सिंह, सअनि रमेश तिवारी, अमरनाथ पांडेय, चंद्रदीप मेहता, चापु मुकेश कुमार शर्मा एवं सत्यकिशोर कुमार आदि की भूमिका रही।

भड़गांव पंचायत में पुलिया निर्माण में गड़बड़ी मुखिया और सचिव से मांगा गया स्पष्टीकरण

सेन्हा/ लोहरदगा (आजाद सिपाही)। भड़गांव पंचायत में एक आरसीसी पुलिया निर्माण योजना में सरकारी राशि के गबन का मामला सामने आया है। इस संबंध में प्रखंड विकास पदाधिकारी संग्राम मुर्मू ने पंचायत के मुखिया और पूर्व पंचायत सचिव को शोकॉज नोटिस जारी किया है। प्राप्त जानकारी के अनुसार, 15वें वित्त आयोग के तहत योजना संख्या 01/2024-25 के अंतर्गत ग्राम निवासी ब्रजेश उरांव के घर के पास आरसीसी पुलिया का निर्माण किया गया था। इस योजना की प्राक्कलित राशि 1,08,100 निर्धारित की गयी थी, लेकिन मापी पुस्तिका में 59,650 की राशि ही दर्शायी गयी है। इसके बावजूद 75,000 की राशि लाभुक समिति को बिना किसी एफटीओ (फंड ट्रांसफर ऑर्डर) के भुगतान कर दी गयी। बीडीओ ने इसे पंचायती राज अधिनियम 2001 के नियमों का उल्लंघन और सरकारी धन का गबन करार दिया है। मामले को गंभीर मानते हुए ज्ञापांक 767, दिनांक 2 अगस्त 2025 के तहत दोनों से स्पष्टीकरण मांगा गया है। उन्होंने स्पष्ट किया कि यदि जवाब संतोषजनक नहीं पाया गया, तो वरीय अधिकारियों को अग्रेतर कार्रवाई के लिए प्रस्ताव भेजा जायेगा। गौरतलब है कि इससे पूर्व भी भड़गांव पंचायत में 15वें वित्त आयोग की योजना संख्या 04/2023-24 के तहत महादेव उरांव के घर के पास पैरापेट निर्माण कार्य में अनियमितता उजागर हुई थी। उस योजना में केवल एक ओर पैरापेट का निर्माण किया गया, जबकि दूसरी ओर निर्माण अधूरा छोड़ दिया गया, जो आज भी स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है।

सड़क हादसे में कांवरिया की मौत, एक घायल

सेन्हा/ लोहरदगा (आजाद सिपाही)। लोहरदगा जिले के सेन्हा थाना क्षेत्र अंतर्गत एनएच-143ए पर अमन चौक के पास स्थित शुभम गैस एजेंसी के सामने रविवार को एक दर्दनाक सड़क हादसा हुआ, जिसमें कांवर यात्रा से लौट रहे एक युवक की मौके पर ही मौत हो गई, जबकि दूसरा गंभीर रूप से घायल हो गया। मिली जानकारी के अनुसार, दोनों युवक स्कूटी पर सवार होकर गुमला जिले के आंजन धाम से कांवर यात्रा पूरी कर अपने घर लोहरदगा लौट रहे थे। इसी दौरान विपरीत दिशा से आ रहा एक लाल रंग का वीक्टा वाहन अचानक स्कूटी को टक्कर मारते हुए फरार हो गया। इस हादसे में स्कूटी सवार एक युवक की मौके पर ही मौत हो गई, जबकि दूसरा युवक गंभीर रूप से घायल हो गया। मृतक की पहचान लोहरदगा हटिया गार्डन निवासी पप्पू गुप्ता के पुत्र आशीष कुमार गुप्ता के रूप में हुई है। वहीं घायल युवक की पहचान थाना टोली निवासी ऋषभ केशरी के रूप में की गई है। हादसे की सूचना मिलते ही स्थानीय ग्रामीणों और पुलिस की मदद से घायल को इलाज के लिए सदर अस्पताल लोहरदगा भेजा गया, जबकि मृतक के शव को पुलिस ने कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। ग्रामीणों के अनुसार, मृतक का सिर और पेट बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गया था, जिससे उसकी मौके पर ही मृत्यु हो गई। पुलिस फरार वाहन की तलाश में जुट गई है और पूरे मामले की जांच जारी है।

दिशोम गुरु का आशीर्वाद सदा स्मरणीय रहेगा : गणेश माहली

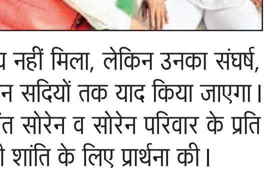

सरायकेला (आजाद सिपाही)। झामुमो सरायकेला विधानसभा के पूर्व प्रत्याशी गणेश माहली ने दिशोम गुरु शिबू सोरेन के निधन पर गहरा शोक व्यक्त की। उन्होंने कहा गुरुजी का आशीर्वाद और प्रेम उनके लिए सदैव प्रेरणास्रोत रहेगा।गणेश माहली ने कहा भले ही उन्हें गुरुजी के साथ अधिक समय नहीं मिला, लेकिन उनका संघर्ष, बलिदान और झारखंड आंदोलन में योगदान सदियों तक याद किया जाएगा। उन्होंने इस दुख की घड़ी में मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन व सोरेन परिवार के प्रति संवेदना व्यक्त करते हुए दिवंगत आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना की।

हरि नारायण सिंह का जाना समाज के लिए अपूरणीय क्षति : सुधीर कुमार पप्पू

जमशेदपुर (आजाद सिपाही)। वरिष्ठ पत्रकार एवं संपादक हरि नारायण सिंह के निधन पर समाजवादी चिंतक सुधीर कुमार पप्पू ने गहरा शोक व्यक्त किया। उन्होंने कहा हरि नारायण सिंह का जाना न केवल पत्रकारिता जगत के लिए, बल्कि पूरे राज्य और समाज के लिए अपूरणीय क्षति है। जिसकी भरपाई निकट भविष्य में संभव नहीं है।सुधीर पप्पू ने कहा हरि नारायण सिंह ने अपने पूरे जीवन में निर्भीक और निष्पक्ष पत्रकारिता की मिसाल पेश की। वे न केवल समाचार लिखते थे, बल्कि समाज को दिशा देने का कार्य भी करते थे। उनकी लेखनी में सामाजिक सरोकार, जनता की पीड़ा, शोषण के खिलाफ आवाज और सत्ता के गलियारों तक सच्चाई पहुंचाने की ताकत थी।उन्होंने आगे कहा झारखंड अलग राज्य निर्माण आंदोलन के दौरान हरि नारायण सिंह ने पत्रकारिता के माध्यम से आंदोलन को व्यापक समर्थन दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनके लेख राज्य के हित में जनजागरण का माध्यम बने। वे हमेशा जनहित को प्राथमिकता देने वाले पत्रकार रहे, जिन्होंने कलम को केवल सूचनाओं के लिए नहीं, बल्कि परिवर्तन के औजार के रूप में इस्तेमाल किया।

दिशोम गुरु शिबू सोरेन के निधन से शोक में डूबा पूरा गढ़वा

झामुमो ने शिबू सोरेन के निधन पर शोक सभा का आयोजन किया

आजाद सिपाही संवाददाता

गढ़वा। गढ़वा जिला झामुमो के तत्वाधान में झारखंड राज्य के निर्माता दिशोम गुरू शिबू सोरेन के निधन पर शोक सभा आयोजन किया गया। वक्ताओं ने कहा कि इस उनके निधन की खबर से मन अत्यंत ही मर्माहत है। दिशोम गुरू शिबू सोरेन को झारखंड मुक्ति मोर्चा ही नहीं, पूरे राज्य की जनता बाबा के नाम से संबोधित करती थी। गुरू जी 81 वर्ष के उम्र में हम सभी को छोड़कर चले गये। इसकी भरपाई भविष्य में संभव नहीं है। दिशोम गुरू 18 वर्ष की उम्र से ही सेठ-साहूकारों एवं महाजनों के सुदखोरी के खिलाफ लंबी लड़ाई लड़े, साथ ही झारखंड राज्य के निर्माण के लिए आर्थिक नाकेबंदी, धरना-प्रदर्शन, रैली तथा जेल भरो आंदोलन के फलस्वरूप बिहार सरकार को स्वायत परिषद का गठन करना पड़ा। दिशोम गुरू शिबू सोरेन जी को इसका अध्यक्ष बनाया गया। झारखंड के लड़ाई गुरूजी के नेतृत्व में लड़ी गयी, जिसमें हजारों लोग शहीद हो गये। परंतु सरकार के सारे यातनाओं को सहने के बाद भी झारखंड राज्य के लिए लड़ाई को इनके द्वारा कमजोर होने नहीं दिया गया और अविभाजित बिहार राज्य से अलग झारखंड राज्य का निर्माण हुआ। इनके द्वारा कभी भी अपने आदर्शों से समझौता नहीं किया गया। इन्होंने आदिवासी समाज को एकजूट करने एवं मुख्यधारा में लाने का जो प्रयास किया, वह झारखंड ही नहीं बल्कि भारतीय राजनीति में मिशाल है। दिशोम गुरू द्वारा अपना पूरा जीवन आदिवासी समाज के कल्याण एवं उनके हितों के लिए समर्पित कर दिया गया था। देश में जब भी आदिवासियों का हक एवं अधिकार की बात होगी, तो दिशोम गुरू शिबू सोरेन का नाम सम्मान के साथ लिया जायेगा। इस मौके पर जिला सचिव, शरीफ अंसारी, मनोज ठाकुर, अनिता दत्त, अंजली गुप्ता, रेखा चौबे, फुजैल अहमद, फरीद खां, अशर्फी राम, आलमगीर अंसारी, संजय सिंह छोटू, वंदना जायसवाल, धन्नजय तिवारी, फखरे आलम, इस्तेखार अंसारी, पूरन तिवारी, रतन सिंह खरवार, मंजर खान, रसीद अंसारी, रविंद्र तिवारी सहित सैकड़ों कार्यकर्त्ता उपस्थित थे।

दिशोम गुरु शिबू सोरेन का जाना झारखंड के लिए गहरा आघात, इसकी क्षतिपूर्ति संभव नहीं : मिथिलेश ठाकुर

आजाद सिपाह संवाददाता

गढ़वा। झारखंड के पूर्व मुख्यमंत्री राज्यसभा सांसद दिशोम गुरु शिबू सोरेन के निधन पर झारखंड सरकार के पूर्व मंत्री झामुमो के केंद्रीय महासचिव मिथिलेश कुमार ठाकुर ने गहरी संवेदना व्यक्त की है। संवेदना व्यक्त करते हुए श्री ठाकुर ने कहा कि हम सबों के बीच से दिशोम गुरु का जाना झारखंड के लिए गहरा आघात है। उनके निधन से हुए क्षति का पूर्ति कर पाना संभव नहीं है।

श्री ठाकुर ने कहा कि दिशोम गुरु ने अपना सब कुछ न्योछावर कर झारखंड अलग राज्य की लड़ाई लड़ी। अंततः इस लड़ाई में उनकी जीत हुई। आज उन्हीं के दम पर झारखंड राज्य खड़ा है। झारखंड ही नहीं पूरा देश युगों युगों तक दिशोम गुरु शिबू सोरेन को याद रखेगा। उनके निधन से देश ने महान क्रांतिकारी नेता खो दिया है। दिशोम गुरू ने लड़कर झारखंड राज्य लिया, अब अलग झारखंड के सपने को उनके पुत्र हेमंत सोरेन के नेतृत्व में पूरा किया जा रहा है। श्री ठाकुर ने कहा कि आज झारखंड में बहुत बड़े खालीपन का एहसास हो रहा है। उनके निधन से झारखंड को जो क्षति हुई है, उसका शब्दों में वर्णन नहीं किया जा सकता है। श्री ठाकुर ने कहा कि भगवान अपने श्री चरणों में उन्हें स्थान दें।

शिबू सोरेन के निधन पर पेंशनर्स समाज ने शोक जताया

गढ़वा (आजाद सिपाही)। पूर्व मुख्यमंत्री सह राज्य सभा सांसद का आकस्मिक निधन हो गया। इस दुखद समाचार को सुनकर झारखंड पेंशनर्स कल्याण समाज गढ़वा की ओर से कार्यालय में एक शोक सभा का आयोजन करके दिवंगत आत्मा की शांति के लिए भगवान से प्रार्थना किया गया। उपस्थित सदस्यों ने स्वर्गीय शिबू सोरेन को शत-शत नमन करते हुए उन्हें विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित की गयी। प्रार्थना किया गया कि भगवान उनकी आत्मा को शांति दे और शोक संतृप्त परिवार को सहनशक्ति दें। यह झारखंड के लिए एक अपूर्ण क्षति हुई है। संपूर्ण झारखंड में शोक की लहर है।

डीएवी मॉडल स्कूल में शोक सभा का आयोजन

गढ़वा (आजाद सिपाही)। शिबू सोरेन के निधन के अवसर पर डीएवी मॉडल स्कूल में एक शोक सभा का आयोजन किया गया, जिसमें श्री शिबू सोरेन जी के आत्मा की शांति के लिए सभी बच्चे और शिक्षक 2 मिनट मौन रहकर प्रार्थना किया। इस अवसर पर निदेशक सुशील केसरी ने बताया कि शिबू सोरेन राज्यसभा सांसद तथा वर्तमान मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन के पिताजी भी हैं। आज का दिन झारखंड के लिए काफी दुखदाई रहा। हम सभी उनकी आत्मा की शांति की प्रार्थना करते हैं।

गुरुजी के निधन पर केतार में शोक सभा

केतार (आजाद सिपाही)। झारखंड मुक्ति मोर्चा पार्टी के संस्थापक, पूर्व मुख्यमंत्री, राज्यसभा सांसद एवं झारखंड आंदोलन के जननायक कहे जाने वाले नेता दिशोम गुरु शिबू सोरेन का सोमवार को दिल्ली के गंगाराम अस्पताल में निधन हो गया। इस दुखद घटना के उपरांत झामुमो प्रखंड इकाई केतार की ओर से एक शोक सभा का आयोजन किया गया। सभा में दो मिनट का मौन रखकर दिवंगत नेता को श्रद्धांजलि अर्पित की गयी और गहरी शोक संवेदना व्यक्त की गयी। शोक सभा में झामुमो प्रखंड अध्यक्ष लालेश्वर राम, संजय वर्मा, दिनेश वर्मा, जयमाल प्रसाद, उपप्रमुख शंभु सिंह, रामविचार साहू, सुरेश प्रसाद, कामेश्वर सिंह, महेन्द्र पाल, मनोरंजन प्रसाद गुप्ता, बिंदु राम, ताजामुल अंसारी, आनंद गुप्ता, नागेंद्र ठाकुर, गोपाल विश्वकर्मा, जसमुदिन अंसारी, सतेंद्र गुप्ता, मदन पटेल, गोविंद सिंह, जहीर अंसारी सहित अन्य कार्यकर्ता एवं ग्रामीण बड़ी संख्या में उपस्थित रहे।

ज्ञान निकेतन स्कूल में शोकसभा का आयोजन

गढ़वा (आजाद सिपाही)। झारखंड मुक्ति मोर्चा के संस्थापक और झारखंड के पूर्व मुख्यमंत्री शिबू सोरेन के निधन पर गढ़वा स्थित ज्ञान निकेतन स्कूल में एक शोकसभा का आयोजन किया गया, जिसमें विद्यालय के शिक्षकगण, छात्र-छात्राएं और प्रबंधन के सदस्य उपस्थित रहे। शोकसभा में विद्यालय के निदेशक मदन प्रसाद केसरी ने शिबू सोरेन के जीवन पर प्रकाश डालते हुए कहा कि उनका जीवन सर्घषों से भरा रहा। उन्होंने झारखंड की पहचान और अस्मिता के लिए लंबी लड़ाई लड़ी। उन्होंने यह भी कहा कि उनकी सोच, विचारधारा और जनहित में किये गये कार्यों से आज भी लाखों लोग प्रेरणा लेते हैं।

रंका झामुमो कार्यालय में दिशोम गुरु शिबू सोरेन के निधन पर शोक सभा का आयोजन

रंका (आजाद सिपाही)। झारखंड राज्य निर्माण में अहम भूमिका निभाने वाले पूर्व मुख्यमंत्री दिशोम गुरु शिबू सोरेन के निधन पर झारखंड मुक्ति मोर्चा के रंका प्रखंड कार्यालय में शोक सभा का आयोजन किया गया। इस अवसर पर गुरु जी के तस्वीर पर पुष्प अर्पित कर उन्हें श्रद्धांजलि दी गई। इस मौके पर प्रखंड अध्यक्ष जैनुल्लाह अंसारी, जिला उपाध्यक्ष रौशन पाठक, प्रखंड सचिव सह दक्षिणी जिपस प्रतिनिधि रतन सिंह, जिला उपाध्यक्ष अल्पसंख्यक आफताब आलम, पूर्व प्रखंड अध्यक्ष आशीष कुमार गुप्ता, खरडीहा पंचायत मुखिया प्रतिनिधि सह युवा नेता पप्पू यादव, पूर्व मुखिया सह पूर्व विधायक प्रतिनिधि अनिल कुमार चंद्रवंशी, पूर्व प्रखंड सचिव दीपक कुमार सोनी, मुमताज रंगसाज, पूर्व बीस सूत्री प्रखंड अध्यक्ष अहमद अली अंसारी, पूर्व प्रखंड सचिव इरफान अंसारी, बीडीसी असमुद्दीन अंसारी, छोटू दूबे, आशीष सिंह, मो० अलिम, हसिब, सूरज रजक, नौशाद राय सहित अन्य झामुमो कार्यकर्ता उपस्थित थे।

भंडरिया में शोक सभा का आयोजन

भंडरिया (आजाद सिपाही)। दिशोम गुरु शिबू सोरेन के निधन पर भंडरिया प्रखंड स्थित इंदिरा गांधी चौक के पास प्रखंड अध्यक्ष हरिदास तिर्की के नेतृत्व मे झामुमो नेता व कार्यकर्ताओं के द्वारा इंदिरा गांधी चौक पर शोक सभा का आयोजन कर दो मिनट का मौन धारण किया गया तथा उनकी आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना किया गया। वहीं इधर सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र भंडरिया में भी चिकित्सा पदाधिकारी डॉ संजय कुमार के नेतृत्व में चिकित्सा कर्मियों के द्वारा 2 मिनट का मौन धारण कर दिशोम गुरु शिबू सोरेन को श्रद्धांजलि अर्पित की गयी। मौके पर झामुमो प्रखंड अध्यक्ष हरिदास तिर्की, उपाध्यक्ष रविशंकर कश्यप, मिडिया प्रभारी अशोक प्रसाद, अनुमंडल उपा अध्यक्ष चंद्रशेखर सिंह, गजेंद्र सिंह लॉरेंस कुजूर, सुसीला केरकेट्टा, लॉरेंस बाखला मोबिन अंसारी, इबरार अंसारी हारून रसीद बरगढ़ प्रखंड अध्यक्ष अर्जुन मिंज जेपी मिंज, सुरेश प्रसाद, अयूब खान, संदीप गुप्ता, सोनू पासवान सहित काफी संख्या मे झामुमो कार्यकर्ता उपस्थित थे।

गुरुजी का निधन पार्टी और राज्य के लिए अपूरणीय क्षति उनकी जीवनी को पाठ्यक्रम में जोड़ा जाये : धीरज दुबे

आजाद सिपाही संवाददाता

गढ़वा। झारखंड आंदोलन के प्रणेता और झारखंड मुक्ति मोर्चा के संस्थापक संरक्षक दिशोम गुरु शिबू सोरेन के निधन पर झामुमो मिडिया पैनलिस्ट सह केंद्रीय सदस्य धीरज दुबे ने गहरा शोक व्यक्त किया है। उन्होंने कहा कि गुरुजी का जीवन संघर्ष, साहस और समाज के प्रति समर्पण की मिसाल है। गुरुजी ने झारखंड राज्य के निर्माण के लिए जो संघर्ष किया, वह इतिहास में स्वर्ण अक्षरों में लिखा जाएगा।

उनके विचार और योगदान को नई पीढ़ी तक पहुंचाना अत्यंत आवश्यक है, इसलिए उनकी जीवनी को स्कूली और उच्च शिक्षा के पाठ्यक्रम में शामिल किया जाना चाहिए।

धीरज दुबे ने कहा कि गुरुजी केवल एक राजनेता नहीं थे, वे झारखंड की आत्मा थे। उन्होंने जल, जंगल, जमीन की रक्षा के लिए संघर्ष किया और आदिवासी अस्मिता को राष्ट्रीय मंच पर पहचान दिलायी। धीरज ने कहा कि गुरुजी का जीवन केवल झारखंड तक सीमित नहीं रहा, बल्कि उन्होंने पूरे देश में हाशिए पर पड़े समाजों के लिए आवाज उठाई। चाहे संसद में जनहित की लड़ाई हो या झारखंड में आदिवासी अधिकारों की बात, उन्होंने हमेशा जनता का पक्ष मजबूती से रखा।

गुरुजी का योगदान हमेशा अमर रहेगा और उन्हें सच्ची श्रद्धांजलि यही होगी कि आने वाली पीढ़ियां उनके संघर्षों से सीखें और समाज के लिए सकारात्मक बदलाव का हिस्सा बनें।

शिबू सोरेन जी का निधन भारतीय राजनीति के लिए अपूरणीय क्षति: रविंद्र ठाकुर

गढ़वा (आजाद सिपाही)। झारखंड के पूर्व मुख्यमंत्री दिशोम गुरु शिबू सोरेन के निधन पर युवा आजसू प्रदेश संयोजक रविंद्र नाथ ठाकुर ने गहरा दुख जताया है। उन्होंने कहा कि शिबू सोरेन जी का निधन भारतीय राजनीति की अपूरणीय क्षति है। उनका जीवन आदिवासी समाज के अधिकार और न्याय के लिए समर्पित रहा 'दिशोम गुरु' आदिवासियों की बुलंद आवाज, झारखंड मुक्ति मोर्चा के जनक और झारखंड के पूर्व मुख्यमंत्री एंव वर्तमान मे राज्यसभा सांसद अब इस दुनिया में नहीं रहे। आपने आदिवासियों के स्वाभिमान और जल जंगल जमीन की रक्षा में अपना सर्वस्व दिया।

किस्मती कॉलेज ऑफ नर्सिंग एंड फार्मेसी में शोकसभा का आयोजन कर दी गयी श्रद्धांजलि

मेराल (आजाद सिपाही)। दिशोम गुरु शिबू सोरेन के निधन पर प्रखंड मुख्यालय स्थित किस्मती कॉलेज ऑफ नर्सिंग एंड फार्मेसी परिसर में शोक सभा का आयोजन कर उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि दी गयी। कॉलेज के सचिव वीरेंद्र प्रसाद ने कहा कि दिशोम गुरु शिबू सोरेन झारखंड राज्य के निमार्ता के साथ-साथ आठ बार लोकसभा और तीन बार राज्यसभा के सदस्य तथा तीन बार झारखंड के मुख्यमंत्री रहे। वे गरीब, दलित, शोषित, आदिवासी मूलवासी के मसीहा थे। उनके निधन से झारखंड राज्य और झारखंड मुक्ति मोर्चा के लिए अपूर्णीय क्षति हुआ है, इसकी भरपाई संभव नहीं है। इस अवसर पर उनकी आत्मा की शांति के लिए 2 मिनट का मौन रखकर ईश्वर से प्रार्थना की गयी। तत्पश्चात संस्थान को एक दिन के लिए बंद कर दिया गया। शोक सभा में कॉलेज के निदेशक लव कुमार, उप प्राचार्य विकास कुमार मिश्रा, कॉलेज कर्मी और विद्यार्थी शामिल थे।

मझिआंव गोलीकांड का खुलासा, एक आरोपी गिरफ्तार

मझिआंव (गढ़वा)। थाना क्षेत्र के करमडीह चौक पर हुई गोलीबारी कांड में पुलिस को बड़ी सफलता हाथ लगी है। अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी नीरज कुमार एवं मझिआंव थाना प्रभारी सह पुलिस निरीक्षक सुनील कुमार तिवारी ने संयुक्त रूप से प्रेस वार्ता कर जानकारी दी कि गोलीकांड में शामिल एक आरोपी शेख लड्डु को छत्तीसगढ़ से गिरफ्तार कर लिया गया है। पुलिस ने आरोपी की निशानदेही पर दो देसी कट्टा एवं जिंदा गोली भी बरामद किया है।

ज्ञात हो कि 10 जुलाई 2025 को इस कांड के वादी सकीब खान नामक व्यक्ति अपने तीन दोस्तों के साथ वैगनॉर कार से करमडीह चौक पर पान खाने के लिए रुके हुए थे। इसी दौरान दिन के करीब 12:30 बजे एक लाल रंग की पल्सर बाइक पर सवार दो हमलावर पहुंचे और कार की अगली सीट पर बैठे सकीब खान पर तीन राउंड फायरिंग कर दी। सकीब खान ने मामले में प्राथमिकी दर्ज कराई थी।

अनुसंधान और बरामदगी: जांच में खुलासा हुआ कि इस कांड को अंजाम ट्विंकल खान और शेख लड्डु ने मिलकर दिया था। पुलिस ने छापेमारी कर बभनी गांव निवासी शेख लड्डु (उम्र 22 वर्ष, पिता शेख इस्माइल) को गिरफ्तार किया। पूछताछ में उसने अपराध स्वीकार किया और घुरुआ गांव के एक पुराने खपरैल मकान से छुपाकर रखे गये हथियारों की जानकारी दी।

एक 315 बोर का देसी कट्टा, 315 बोर की दो जिंदा गोली, 12 बोर का एक नाली कट्टा, 12 बोर की दो जिंदा गोली, बरामद किया गया है।

शिबू सोरेन के निधन पर कांडी प्रखंड में शोक की लहर

कांडी (आजाद सिपाही)। झारखंड के पूर्व मुख्यमंत्री एवं राज्यसभा सांसद दिशोम गुरु शिबू सोरेन के निधन की खबर से पूरे प्रखंड क्षेत्र में शोक की लहर दौड़ गयी। शनिवार को बीआरसी कार्यालय समेत प्रखंड के सभी विद्यालयों में भावभीनी शोकसभा का आयोजन किया गया। बीआरसी कार्यालय में आयोजित शोकसभा की अध्यक्षता बीईईओ कानन पात्रा ने की। उन्होंने कहा कि शिबू सोरेन झारखंड राज्य के गठन के संघर्ष के अग्रणी सेनानी थे। उनके निधन से प्रदेश ने एक महान नेता को खो दिया है और यह अपूरणीय क्षति है। इस मौके पर बीपीओ वीरेंद्र प्रसाद, बीआरपी जय प्रकाश लाल, एमडीएम प्रभारी रामाकांत प्रसाद, लेखापाल रौशन टिर्की, सीआरपी धर्मेंद्र कुमार दुबे, मनीष कुमार (एमआईएस प्रभारी), आदेशपाल प्रदीप कुमार यादव, शिक्षक मनोज कुमार मिश्र, रेणुबाला सिंह, राजेश दुबे सहित कई कर्मी एवं शिक्षक मौजूद रहे। इसके अलावा स्तरोन्नत उच्च विद्यालय चोका, बुनियादी विद्यालय कुशहा, मध्य विद्यालय अधौरा समेत प्रखंड के सभी विद्यालयों में भी शोकसभा कर श्रद्धांजलि अर्पित की गयी। दिवंगत आत्मा की शांति के लिए दो मिनट का मौन रखा गया। इस दौरान निर्णय लिया गया कि 5 अगस्त तक शिक्षण कार्य स्थगित रहेगा।

सड़क दुर्घटना में बच्ची की मौत, मुआवजे की मांग

आजाद सिपाही संवाददाता

बंशीधर नगर। श्री बंशीधर नगर शहर के गर्ल्स हाईस्कूल के समीप एनएच 75 पर हुई सड़क दुर्घटना में दो वर्षीय बच्ची इनाया खातून की मौके पर ही दर्दनाक मौत हो गयी। घटना सोमवार की दोपहर करीब 12 बजे की है। श्री बंशीधर नगर थाना क्षेत्र के बरडीहा गांव निवासी शाहिद रजा अपनी बेटी को आधार कार्ड बनवाने के लिये श्री बंशीधर नगर लाये थे।

वापस लौटते वक्त गर्ल्स हाईस्कूल के समीप एनएच-75 पर एक तेज रफ्तार ट्रक ने बाईक को अपने चपेट में ले लिया। जिससे मासूम इनाया की घटनास्थल पर ही मौत हो गयी। मौत से आक्रोशित लोगों ने बच्ची का शव सड़क पर रखकर एनएच-75 को जाम कर दिया और पीड़ित परिवार को मुआवजे की मांग करने लगे।

जामस्थल पर पूर्व मंत्री रामचंद्र केशरी, झामुमो जिला उपाध्यक्ष मुक्तेश्वर पांडेय समेत कई नेता पहुंचे और परिजनों को मुआवजा देने की मांग की। उधर घटना की सूचना मिलने पर एसडीओ प्रभाकर मिर्धा, एसडीपीओ सत्येंद्र नारायण सिंह एवं पुलिस इंस्पेक्टर रतन कुमार सिंह ने जामस्थल पर पहुंच कर आक्रोशित लोगों को समझाने बुझाने का खूब प्रयास किया।

एसडीओ ने आक्रोशित लोगों को आश्वस्त किया कि पीड़ित परिवार को एक लाख रुपये की सहायता राशि के साथ सरकारी प्रावधानों के तहत अन्य लाभ भी दिये जाने का भरोसा दिलाया उसके बाद लोगों ने जाम हटा लिया।

झारखंड की राजनीति के एक युग का अंत हो गया : अलखनाथ

दिशोम गुरु शिबू सोरेन के निधन पर आरके ग्रुप ऑफ इंस्टिट्यूशन में श्रद्धांजलि सभा का आयोजन

आजाद सिपाही संवाददाता

गढ़वा। झारखंड की राजनीति के एक युग का अंत हो गया। झारखंड के पूर्व मुख्यमंत्री, झारखंड मुक्ति मोर्चा (जेएमएम) के संस्थापक और जनजातीय समाज के मसीहा दिशोम गुरु शिबू सोरेन जी के निधन की खबर ने पूरे राज्य को शोक में डुबो दिया है। उनके सम्मान में सोमवार को आरके ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूशंस द्वारा संचालित विभिन्न संस्थानों–आर. के. पब्लिक स्कूल, गढ़वा, हूर, ऊंचरी, मंझिआंव, नगर वंशीधर और आरकेवीएस संस्थान गढ़वा (बीएड एवं डीएलएड कॉलेज)–में श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया।

सभा की शुरूआत दो मिनट के मौन व्रत से हुई, जिसमें सभी उपस्थित शिक्षकों, छात्रों, प्राचार्यों और विद्यालय परिवार ने दिवंगत आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना की। इस अवसर पर निदेशक सह शिक्षाविद् अलखनाथ पांडेय ने गहन शोक व्यक्त करते हुए कहा कि झारखंड ने आज अपना एक युगपुरुष खो दिया है। दिशोम गुरु शिबू सोरेन जी न केवल एक राजनेता थे, बल्कि वे इस राज्य की आत्मा थे। उनका जीवन संघर्ष, संघर्षों में सिद्धांतों की जीत और जनसेवा की मिसाल है। उन्होंने आगे कहा कि शिबू सोरेन एक जमीनी नेता थे, जिन्होंने आदिवासी समाज, दलितों, वंचितों और शोषितों के अधिकारों के लिए हमेशा संघर्ष किया। चाहे वे झारखंड के मुख्यमंत्री रहे हों या केंद्र सरकार में मंत्री–उनका संपूर्ण जीवन समाज के अंतिम व्यक्ति तक न्याय पहुंचाने के लिए समर्पित रहा।

शोक सभा में समाजसेवी अवधेश कुशवाहा, सभी शिक्षण संस्थानों के प्राचार्य, चंद्रदीप पांडेय, अनूप पांडेय, क.आर. झा, प्रमोद कुमार झा, विजय चौबे, संतोष पांडेय, सतीश तिवारी, राजन चौबे, रितेश जायसवाल, प्रवीण दुबे, आनंद मिश्रा, रोहित दुबे, रौशन धर दुबे, रंजना दुबे, आशीष सहित शिक्षक-शिक्षिकाएं, विद्यार्थी तथा अन्य कर्मचारीगण शामिल हुए।

शपथ पत्र

शपथ पत्र संख्या 1190, दिनांक 01.08.2025 के अनुसार, मैं बासो महतो पिता स्व० गिरधारी महतो ग्राम पिपराडीह, पो-सरंडा, थाना-बिरनी, जिला-गिरिडीह शपथ पूर्वक ब्यान करता हूँ कि :-
1. यह कि मेरी उम्र लगभग 62 वर्ष है।
2. यह कि मेरा आधार कार्ड संख्या - 3246 6196 4547 में मेरा नाम बासो महतो (BASO MAHTO) चर्ज है।
3. यह कि मेरा बैंक ऑफ इण्डिया शाखा पेशम के संयुक्त बचत खाता संख्या 478610110000885 में मेरा नाम बासुदेव यादव (BASUDEO YADAV) दर्ज हैं। 4. यह कि बासो महतो (BASO MAHTO) उर्फ बासुदेव यादव (BASUDEO YADAV) दोनों नाम एक ही व्यक्ति का है जो स्वंय मैं ही हूँ।
5. यह कि मैं अपने गाँव पंचायत में उपरोक्त दोनों नामों से जाना पहचाना जाता हूँ। 6. यह कि यह शपथ पत्र मैं अपने दोनों नामों की सत्यता कि पुष्टि करते हुए बैंक ऑफ इण्डिया शाखा पेशम के संयुक्त बचत खाता संख्या 478610110000885 में नाम सुधार कर बासो महतो (BASO MAHTO) दर्ज कराने हेतु कर रहा हूँ।

दक्षिण पूर्व रेलवे - निविदा

ई-निविदा सूचना सं.: ई-डीआरएम-ईएनजीजी-एडीआरए-50-56-25, दिनांक: 01.08.2025। भारत के राष्ट्रपति के लिए तथा उनकी ओर से मंडल रेल प्रबंधक (अभियांत्रिकी), दक्षिण पूर्व रेलवे, आद्रा नीचे उल्लिखित विवरणों के अनुसार पोर्शन, यार्ड, आरयूबी/सबवे, एफओबी एवं विविध कार्यों के लिए 07 अदद ई-निविदायें आमंत्रित करते हैं: **क्रम संख्या:** 1। **निविदा संख्या: ई-डीआरएम-ईएनजीजी-एडीआरए-50-25। कार्य का विवरण:** आद्रा मंडल में नवीनतम आरडीएसओ दिशानिर्देशों के अनुसार आरडीएसओ अनुमोदित एटी वेल्ड पोर्शन की आपूर्ति द्वारा ट्रैक के रखरखाव के लिए 60 किग्रा. 90 यूटीएस/60ईआई-आर260 के लिए एलुमिनो थर्मिट वेल्डिंग पोर्शन की आपूर्ति तथा एटी वेल्डिंग का सम्पादन। **निविदा मूल्य:** ₹ 2,79,93,757.95। **क्रम संख्या:** 2। **निविदा संख्या: ई-डीआरएम-ईएनजीजी-एडीआरए-51-25। कार्य का विवरण:** आद्रा मंडलः आद्रा मंडल में (1) एसएसई/पी.वे/पुरुलिया के अधिकार क्षेत्र के अधीन यार्ड का सुधार एवं (2) एसएसई/पी.वे/चांडिल के अधिकार क्षेत्र के अधीन यार्ड का सुधार। **निविदा मूल्य:** ₹ 3,45,49,771.92। **क्रम संख्या:** 3। **निविदा संख्या: ई-डीआरएम-ईएनजीजी-एडीआरए-52-25। कार्य का विवरण:** आद्रा मंडल में कुसतौर-छर्रा (केएसयू-सीएचआरए) खंड के बीच किमी. 311/29-31 पर प्रहरी युक्त समपार फाटक संख्या जेसी-12 के उन्मूलन के लिए आरयूबी/सबवे का निर्माण। **निविदा मूल्य:** ₹ 8,18,26,702.33। **क्रम संख्या:** 4। **निविदा संख्या: ई-डीआरएम-ईएनजीजी-एडीआरए-53-25। कार्य का विवरण:** (1) आद्रा मंडल: एसएसई (पी.वे)/कोटशिला के अधिकार क्षेत्र के अधीन यार्ड का सुधार। (2) एसएसई (पी.वे)/ बोकारो स्टील सिटी के अधिकार क्षेत्र के अधीन यार्ड का सुधार। **निविदा मूल्य:** ₹ 5,41,04,237.57। **क्रम संख्या:** 5। **निविदा संख्या: ई-डीआरएम-ईएनजीजी-एडीआरए-54-25। कार्य का विवरण:** आद्रा मंडल में बांकुड़ा-छतना के बीच किमी. 237/26-28 पर प्रहरी युक्त समपार केए-99 के स्थान पर आरयूबी का निर्माण। **निविदा मूल्य:** ₹ 7,56,30,600.92। **क्रम संख्या:** 6। **निविदा संख्या: ई-डीआरएम-ईएनजीजी-एडीआरए-55-25। कार्य का विवरण:** आद्रा मंडल के झंटीपहाड़ी (जेपीएच) स्टेशन पर अप एवं डाउन मेन लाइन क्रॉस ओवर तथा एक अप पैसेंजर प्लेटफॉर्म तथा एक गुड्स शेड लाइन की डिस्मैंटलिंग कार्य के सम्बन्ध में दो अदद ईआई भवन, ड्रेन का निर्माण, विंग वाल सहित पुल का विस्तार तथा पी.वे कार्य का सम्पादन। **निविदा मूल्य:** ₹ 5,81,47,766.69। **क्रम संख्या:** 7। **निविदा संख्या: ई-डीआरएम-ईएनजीजी-एडीआरए-56-25। कार्य का विवरण:** आद्रा मंडल के झंटीपहाड़ी (जेपीएच) स्टेशन पर अप एवं डाउन मेन लाइन क्रॉस ओवर तथा एक अप पैसेंजर प्लेटफॉर्म तथा एक गुड्स शेड लाइन की डिस्मैंटलिंग कार्य के सम्बन्ध में पैदल ऊपरी पुल का निर्माण। **निविदा मूल्य:** ₹ 4,51,95,217.66। **ई-निविदा बंद होने की तारीख और समय:** 01.09.2025 को अपराह्न 3:00 बजे (क्रम संख्या 1 से 7 प्रत्येक के लिए)। उपर्युक्त ई-निविदाओं के विवरण के लिए कृपया वेबसाइट: **www.ireps.gov.in** देखें। (PR-476)

जंगल से बियाबान लोकतंत्र की मुंडेरों तक

जंगल से निकलकर आया एक आदिवासी नेता आज चला गया। नाम था शिबू सोरेन। शिबू सोरेन की उस राजनीतिक और सामाजिक यात्रा को समझने की बहुत जरूरत है, जो भारतीय समाज के पेचदार, उलझे हुए और बेहद ऊबड़-खाबड़ लोकतंत्र से होकर गुजरती है। यह दरअसल 'भारत' के भीतर के 'झारखंड' भर की कहानी नहीं है। यह कच्ची जमीन, पक्के इरादे और अस्मिता के संघर्ष की एक विचित्र गाथा है। यह बताती है कि आप अलग होकर तो कुछ कर सकते हैं, लेकिन साथ रह कर नहीं। इसका दूसरा पहलू यह भी है कि वर्चस्वशाली जातियां हाशिए के समाजों को सत्ता में हिस्सेदारी करने ही नहीं देती। इसलिए सवर्ण वर्चस्व और अन्य पिछड़ी जातियों के बलशाली समूहों के बीच आदिवासी और वंचित शिबू सोरेन जन्म लेते हैं और अलग होने और अपनी ताकत का लोहा मनवा लेने के बावजूद समाज में ताकत के झरने का मटियाला पानी ही उनके हिस्से आता है। शिबू सोरेन की कहानी किसी काल्पनिक नायक की नहीं है। यह उस भारत का पीड़ाकाव्य है, जिसे अक्सर मुख्यधारा की राजनीति और मीडिया ने अनदेखा किया। एक ऐसा भारत, जो जंगलों में सांस लेता है, जो जमीन से जुड़ा है और जो बार-बार यह सवाल उठाता है कि 'विकास' किसका होता है। सवालों का यह सिलसिला इतना गहरा है कि लोकतंत्र के झरने से यह आवाज छुलक-छुलक करती आदिवासी जनता के लिए नयी उम्मीदों के गीतों की टेर बन कर जंगल-जंगल फैल जाती है। लेकिन फिर भी उनके सिर नये-नये डर मंडराते हैं। शिबू सोरेन की छवि दो ध्रुवों पर बंटी रही। एक ओर आदिवासियों के लिए वे 'गुरुजी' थे, जिन्होंने उन्हें पहचान दी, और दूसरी ओर सत्ता के लिए वे एक 'अप्रिय प्रश्न' बनकर उभरे। उनके जीवन में जितनी जीतें थीं, उससे ज्यादा लांछन, जितने सपने थे, उससे ज्यादा संघर्ष। लेकिन इसके बावजूद उन्होंने जो सबसे बड़ा काम किया, वह था एक आदिवासी चेतना को राजनीतिक जुबान देना। शिबू सोरेन किसी नेता की तरह नहीं, एक आंदोलन की तरह इतिहास में दर्ज हुए। उनके पीछे सिर्फ राजनीतिक विरासत नहीं, वह अस्मिता बची है, जो अब झारखंड की हर घाटी में गूंजती है कि एक आदिवासी सिर्फ सहने के लिए नहीं, शासन करने के लिए भी जन्म ले सकता है। सच कहा जाये, तो शिबू सोरेन वह चेहरा थे, जिसे समय मिटा नहीं पाया। पहाड़ों और जंगलों की कोख से पैदा होने वाले लोग अक्सर इतिहास में केवल एक पंक्ति बन पाते हैं 'आदिवासी'। लेकिन कुछ लोग होते हैं, जो उस एक शब्द के भीतर पूरा महाकाव्य रच जाते हैं। शिबू सोरेन उन गिने-चुने लोगों में थे। वे किसी रैली के बुलावे से नहीं, जमीन की धड़कनों से उठे थे। उनका जीवन कोई राजनीतिक बायोडाटा नहीं, सदियों से झेलते आये अन्याय का एक असहमति-गीत था, जिसे उन्होंने सड़क से संसद तक अपनी आदिवासी भाषा, चाल और गंध में गाया। उनका नेतृत्व शोर नहीं, सुनवाई से जन्मा था। वह हर उस जगह पहुंचे, जहां नक्शे में झारखंड लिखा होता था, पर हक में नहीं होता था। वह नेता नहीं थे, वह घने जंगल में बना पथ थे, जो किसी राजमार्ग जैसा सुंदर और आलीशान नहीं होता। वह नैसर्गिक राह होता है, जिस पर चलते हुए झारखंड ने खुद को पहली बार देखा कि आदिवासी और शासक दोनों एक साथ हैं। और आज झरखंड का वह पथिक चला गया है।

पहाड़ों और जंगलों की कोख से पैदा होने वाले लोग अक्सर इतिहास में केवल एक पंक्ति बन पाते हैं 'आदिवासी'। लेकिन कुछ लोग होते हैं, जो उस एक शब्द के भीतर पूरा महाकाव्य रच जाते हैं। शिबू सोरेन उन गिने-चुने लोगों में थे।

अभिमत
आजाद सिपाही

गुरुजी नब्ज को पहचानते थे। किस समय, कौन सा निर्णय लेना है, इसे बखूबी जानते थे। राज्य और झारखंडियों के हित को सबसे ऊपर मानते थे। बिनोद बिहारी महतो और एके राय के साथ मिल कर झारखंड मुक्ति मोर्चा नामक इतना मजबूत संगठन बनाया, जिसने बाद में झारखंड की सत्ता संभाली। निर्मल महतो को खोज कर निकाला और उन्हें भरपूर सम्मान दिलाया। खुद अध्यक्ष न बन उन्हें अध्यक्ष बनाया। सच्चे लीडर यानी जमीन पर उतर कर उन्होंने झारखंड आंदोलन या धनकटनी आंदोलन का नेतृत्व किया था।

कोई ऐसे ही नहीं बनता है दिशोम गुरु

अनुज सिन्हा

दिशोम गुरु शिबू सोरेन नहीं रहे। देश के सबसे बड़े आदिवासी जननेता का जाना भारतीय राजनीति, खास कर आदिवासी राजनीति को प्रभावित करेगी। शिबू सोरेन का क्या कद था, इसका अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि जब वे बीमार होकर दिल्ली के अस्पताल में भर्ती थे, तो उनके स्वास्थ्य की जानकारी लेने के लिए राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू खुद अस्पताल गयी थीं। सिर्फ झारखंड मुक्ति मोर्चा या उसके सहयोगी दल के नेता ही नहीं, भारतीय जनता पार्टी के बड़े-बड़े नेता (इसमें गडकरी भी शामिल थे), भी गुरुजी का हाल जानने के लिए अस्पताल गये थे। उनका यह सम्मान था। पदों से ऊपर। झारखंड के अभिभावक के तौर पर उनकी पहचान रही है। एक ऐसा व्यक्ति, जिसने अपना पूरा जीवन झारखंड राज्य के निर्माण-पुनर्निर्माण और महाजनी प्रथा को खत्म करने में लगा दिया, जिसने पूरे झारखंड को अपना परिवार माना, जिसने आदिवासी समाज को मान-सम्मान के साथ जीना सिखाया, जिसने आदिवासी समाज के उत्थान के लिए संघर्ष किया, सामाजिक बुराइयों को दूर करने के लिए सामाजिक आंदोलन चलाया, उस व्यक्ति का नहीं रहना झारखंड के लिए असहनीय है।

गुरुजी का जाना एक युग का अंत है। सच तो यही है कि गुरुजी की कमी को भरा नहीं जा सकता।

गुरु जी से अंतिम मुलाकात : इसी साल 11 जनवरी को गुरुजी से मेरी अंतिम मुलाकात हुई थी। उस दिन उनका जन्मदिन था। लगभग 38 साल का मेरा संबंध रहा। यह संबंध एक आंदोलनकारी-राजनेता और पत्रकार का ही नहीं, उससे बढ़ कर था। लंबे समय तक उनका साथ रहा। गुरु जी को बेहतर तरीके से समझा था। यही कारण था कि देश-दुनिया को उनके बारे में बताने के लिए मैंने 'दिशोम गुरुः शिबू सोरेन' नामक किताब लिखी। कारण था, देश को असली शिबू सोरेन के बारे में बताना। उनके संघर्ष, उनके योगदान और उनकी महत्ता को ध्यान में रखते हुए मैंने यह काम किया था। इस किताब का विमोचन खुद शिबू सोरेन और उनके पुत्र हेमंत सोरेन ने किया था। उनके प्रति श्रद्धा और पत्रकारिता में अपनी जिम्मेवारी निभाने का यह एक प्रयास रहा।

गुरुजी को जो मान-सम्मान मिलता है, वह मुख्यमंत्री रहने या केंद्रीय मंत्री रहने के कारण नहीं, बल्कि उस संघर्ष के कारण, जिसने महाजनी प्रथा को खत्म कराया, जिसने अलग झारखंड राज्य दिलाया, जिसने अन्याय के खिलाफ संघर्ष कर आदिवासियों को मान-सम्मान दिलाया। उनके जीवन का बड़ा हिस्सा संघर्ष के दौरान पहाड़ों और जंगलों के बीच गुजरा। नेमरा से निकल कर देश के सबसे बड़े आदिवासी जननेता के तौर पर खुद को स्थापित करना कोई मामूली बात नहीं, बल्कि बड़ी उपलब्धि है।

झारखंड मुक्ति मोर्चा का गठन : गुरुजी जमीनी हकीकत को बेहतर जानते थे और जानने का प्रयास भी करते थे। सही मामले में लोकतांत्रिक थे। सलाह लेते, जानकारी लेते, फिर निर्णय लेते थे। मुझे उनका स्नेह बराबर मिला। जमशेदपुर जब भी आते, जरूर मुलाकात होती। एक बार तो खुद मिलने के लिए मेरे दफ्तर में आ गये। वर्ष 2000 में एक बार हटिया-हावड़ा ट्रेन जब जमशेदपुर पहुंची, तो ट्रेन को रुकवा कर मुझे देर रात में बुला लिया और ट्रेन में ही झारखंड से जुड़ी कुछ बात की। मैं एक सामान्य पत्रकार, पर गुरुजी का मुझ पर इतना भरोसा था कि अपने राजनीतिक जीवन के कई बड़े फैसलों में उन्होंने मेरी राय ली और मैंने पूरी ईमानदारी से उन्हें अपनी राय दी। उन्हें खुश करने के लिए कभी मैंने कोई राय नहीं दी। इतने बड़े नेता ने मुझ पर इतना भरोसा किया, यही मेरे जीवन की सबसे बड़ी उपलब्धि है। उनके बारे में सैकड़ों स्मृतियां-जानकारियां हैं, जिनमें कुछ का उल्लेख आज करूंगा।

गुरुजी नब्ज को पहचानते थे। किस समय, कौन सा निर्णय लेना है, इसे बखूबी जानते थे। राज्य और झारखंडियों के हित को सबसे ऊपर मानते थे। बिनोद बिहारी महतो और एके राय के साथ मिल कर झारखंड मुक्ति मोर्चा नामक इतना मजबूत संगठन बनाया, जिसने बाद में झारखंड की सत्ता संभाली। निर्मल महतो को खोज कर निकाला और उन्हें भरपूर सम्मान दिलाया। खुद अध्यक्ष न बन उन्हें अध्यक्ष बनाया। सच्चे लीडर यानी जमीन पर उतर कर उन्होंने झारखंड आंदोलन या धनकटनी आंदोलन का नेतृत्व किया था। पारसनाथ की पहाड़ियों और जंगलों में रह कर लोगों को एकजुट किया था। सिर्फ राजनेता या आंदोलनकारी ही नहीं, समाज सुधारक के तौर पर भी गुरुजी को याद किया जायेगा। आदिवासी समाज में व्याप्त बुराइयों को दूर करने का आंदोलन उन्होंने चलाया था। खुद कभी शराब नहीं पी। शराबबंदी के लिए गांव से लेकर संसद तक में आवाज उठायी। शुद्ध शाकाहारी। मांस-मछली का सेवन नहीं करते थे और बिल्कुल सादा जीवन जीने में विश्वास किया। संथालों को शिक्षित करने के लिए रात्रि पाठशाला खोली और खुद भी पढ़ाया, सामूहिक खेती का मॉडल बनाया और त्योहारों पर अधिक पैसा खर्च करने के बजाय उसे बच्चों की पढ़ाई पर खर्च करने के लिए प्रेरित किया।

कार्यकर्ताओं और सहयोगियों का सम्मान : गुरुजी दिल के बिल्कुल साफ व्यक्ति थे। छल-कपट से दूर, जो मन में बात है, वही जुबान पर भी। कोई दोहरा चरित्र नहीं। किसी से नाराजगी हुई, तो पीठ पीछे बोलते नहीं थे, सामने ही उसको डांट देते या जो बोलना होता था, बोल देते थे। कोई बुरा माने तो माने, फर्क नहीं पड़ता था। अपने पुराने सहयोगियों को भूलते नहीं थे। हाल-हाल तक उनके पुराने साथी अगर उनसे मिलने आ जाते, तो पूरा सम्मान देते और जाते समय गाड़ी भाड़ा तक के बारे में पूछते या सहयोगियों के पॉकेट में कुछ राशि रख देते। सबसे बड़ा सम्मान मानते थे।

गुरुजी सभी को बराबर मानते थे। बाहरी-भीतरी में फर्क नहीं करते थे। कर्म के बल पर फर्क करते थे। बिहारी हो या अन्य राज्य का, अगर उसने झारखंड का अहित नहीं किया, झारखंड के लिए लड़ा, तो उसे सबसे ज्यादा मानते थे। अगर झारखंड का ही हो, आदिवासी भी हो और अगर उसने झारखंड विरोधी कार्य किया, तो उस पर भरोसा नहीं करते थे। साल 1975 में समर्पण के बाद गुरुजी धनबाद जेल में थे, तो गीता नाम की एक बिहारी महिला को छठ पूरा कराने के लिए गुरुजी ने सारे कैदियों को एक शाम उपवास रखने के लिए तैयार किया था। इससे जो पैसा बचा था, उससे गीता ने छठ किया था। ऐसे दर्जनों उदाहरण हैं। झारखंड में जब डोमिसाइल का आंदोलन चल रहा था, रांची-जमशेदपुर में पुलिस फायरिंग में पांच लोग मारे गये थे। झारखंड जल रहा था और गुरुजी ने बंदी का आह्वान किया था। उस दिन जब फोन पर मैंने उनसे बात की, तो गुरुजी ने बंदी वापस लेने का फैसला कर लिया, ताकि झारखंड जलने से बच सके। गुरुजी हिंसा में नहीं, बल्कि शांति से मामले को सलटाने में विश्वास करते थे।

महिलाओं का सम्मान : धनकटनी आंदोलन और झारखंड आंदोलन के दौरान भी उनका स्पष्ट आदेश था कि खेत की लड़ाई खेत में होगी, किसी के घर में घुस कर कोई कार्रवाई नहीं होगी। अगर महाजन का भी परिवार भी हो, तब भी किसी महिला के साथ कोई भी दुर्व्यवहार नहीं करेगा, उनका सम्मान करेगा। उनका यह आदेश बताता है कि महिलाओं की वे कितनी इज्जत करते थे। यही कारण है कि गुरुजी के पूरे आंदोलन के दौरान किसी भी महिला के साथ कोई अप्रिय घटना नहीं घटी।

जो भी हो, शिबू सोरेन यानी गुरुजी यानी दिशोम गुरु का कद इतना बड़ा है, जिस तक पहुंचना किसी और के लिए असंभव है। स्वार्थ से दूर। आंदोलन में पूरा समय लगाया और परिवार देखने का जिम्मा अपनी पत्नी रूपी सोरेन को सौंप दिया। जब उन्हें लगा कि उनका स्वास्थ्य अब ठीक नहीं चल रहा, तो उन्होंने धीरे-धीरे सारी जिम्मेवारी अपने पुत्र हेमंत सोरेन को सौंप दी। जब गुरुजी इस बार बीमार पड़े, तो मुख्यमंत्री पद की जिम्मेवारी निभाते हुए हेमंत सोरेन ने पुत्र का भी दायित्व बखूबी निभाया। अपना पूरा समय अस्पताल में उनकी देख-रेख में बिताया। तमाम प्रयास के बाद भी इस बार गुरुजी को बचाया नहीं सका। गुरुजी का जाना एक युग का अंत है। सच तो यही है कि गुरुजी की कमी को भरा नहीं जा सकता।

(लेखक झारखंड के वरिष्ठ पत्रकार हैं। इस लेख में व्यक्त विचार उनके निजी हैं।)

श्रद्धांजलि

इस शिबू सोरेन को आप नहीं जानते

'दिशोम गुरु' के नाम से प्रख्यात झारखंड मुक्ति मोर्चा के संस्थापक शिबू सोरेन अब हमारे बीच नहीं हैं। उनके जीवन, उनके संघर्ष और उनके राजनीतिक सफर पर तमाम जानकारियां प्रकाशित-प्रसारित होती रही हैं और झारखंड ही नहीं, दुनिया भर में उनकी शख्सियत अब किसी परिचय की मोहताज नहीं है। उनके जीवन से जुड़ी ऐसी घटनाओं-कहानियों से आजाद सिपाही के राकेश सिंह और राहुल सिंह आपको रू-ब-रू करा रहे हैं, जिनके बारे में शायद दुनिया को पता नहीं है। शिबू सोरेन के जीवन से जुड़ी इन घटनाओं-कहानियों से साफ हो जाता है कि झारखंड के इस सबसे बड़े राजनीतिक शख्सियत ने खुद को खुद की कसौटी पर ही कसा और गढ़ा था। एक चिंगारी से मशाल बनने की यह कहानी उस शिबू सोरेन को सामने रखती है, जिसे दुनिया नहीं जानती है।

वह 23 दिसंबर, 2019 का दिन था, जब विधानसभा चुनाव का परिणाम घोषित हुआ था और झारखंड की जनता ने झारखंड मुक्ति मोर्चा और उसके सहयोगी दलों को सत्ता में बैठने का फैसला सुनाया था। जश्न और राजनीतिक गहमा-गहमी के बीच वह शख्स रांची में अपने आवास पर उसी गंभीरता और निश्छल मुस्कान लिये बैठा था, जिसने झारखंड के लिए अपना सब कुछ होम कर दिया था। उस शख्स का नाम है शिबू सोरेन। चुनाव परिणाम आने के बाद एक पत्रकार से बात करते हुए शिबू सोरेन ने कहा था, तुम एक कहानी की बात करते हो, जबकि कहानियां ही कहानियां हैं मेरे जीवन में। समझ में नहीं आता, कहां से शुरू करूं और कहां खत्म करूं। मेरे जीवन का हर दिन नयी कहानी लिखता है। गुरूजी ने सच ही कहा था। जिस तरह से चट्टानें हजारों साल का इतिहास अपने सीने में संजोये रखती हैं, उसी तरह दिशोम गुरु का जीवन किस्सों-कहानियों और असंख्य दुखों से रंगा हुआ है। वह संघर्ष और आंदोलन की जीती-जागती मिसाल हैं।

**चादर में बच्चे को पीठ पर लटकाये
धान रोपती पहाड़ी स्त्री
रोप रही है अपना पहाड़ सा दुख
सुख की एक लहलहाती फसल के लिए**

प्रसिद्ध कवियित्री निर्मला पुतुल की ये पंक्तियां झारखंड की चर्चा होते ही जेहन को ऐसे कुतरने लगती हैं, जैसे भूख से व्याकुल चुहिया किसी सड़ते चमरौधे जूते को कुतरने लगती है। कविता की बांह पकड़े सैकड़ों संघर्ष याद आने लगते हैं, जो अपनी माटी, पहाड़, पेड़, पानी और जिंदगी की हिफाजत में लड़े गये। हजारों कविताएं बादल बन कर आकाश को ढंक लेती हैं। याद आने लगते हैं सिदो-कान्हू, तिलका मांझी, बिरसा और तानाजी भगत और याद आने लगती हैं सिनगी दई। अपनी धरती की हिफाजत के लिए आदिवासियों की अनगिनत शहादतों से मस्तिष्क में उजास फैलने लगता है।

**पोखरिया आश्रम की खामोशी आज भी बुलाती है
पहाड़ पर गुमसुम बैठे
पहाड़ी आदमी के चेहरे पर दिख रहा है पहाड़ का भूगोल
उसके भीतर चुप्पी साधे बैठा है पहाड़ का इतिहास**

अगर कभी आपका चंदू या कभी टुंडी जाना हुआ, तो निर्मला पुतुल की ये पंक्तियां जरूर आपके साथ हो लेंगी। आप जब टुंडी जायेंगे, तो हो सकता है कि राजमहल की पहाड़ियों पर बैठा आदिवासी आपको इस कविता का नायक लगने लगे, क्योंकि यही वह जमीन है, जहां से झारखंड मुक्ति मोर्चा की शुरुआत हुई और शिबू सोरेन जन नायक के रूप में उभरे। इतना ही नहीं, इसी मिट्टी ने उन्हें दिशोम गुरु बनाया। 1972 के पहले यह पूरा क्षेत्र महाजनों के चंगुल में कराह रहा था। आदिवासियों और खेतिहर कुर्मियों-कोयरियों की हालत खराब थी। भूख और रोग की फसल पूरे क्षेत्र में लहलहा रही थी। इन परिस्थितियों के बीच झारखंड मुक्ति मोर्चा का गठन हुआ था। दिशोम गुरु पार्टी के महासचिव बनाये गये थे।

आपातकाल और शिबू सोरेन

आपातकाल ने झामुमो को उसी तरह डंस लिया, जिस तरह बाढ़ के पानी के सहारे घर में घुस आया सांप घर की संचालन शक्ति अर्थात घरनी को डंस लेता है और बिना किसी कसूर के घरनी मारी जाती है तथा घर अनाथ हो जाता है। घटना का बाढ़ से संबंध नहीं है, लेकिन बाढ़ के वक्त ही घटा था यह, जब सांप ने मुझे काटा

(बोडो कवयित्री अंजली बसुमतारी की कविता 'बेहुला की मत्यु' से)

झामुमो के आंदोलन के कारण महाजनों से टकराहट होती रहती थी। दुश्मनों की संख्या लगातार बढ़ती जा रही थी और इसी बीच चिरूडीह कांड हो गया, जिसमें कई आदिवासियों के साथ महाजनों के पक्ष के दर्जन भर आदमी मारे गये, जो अल्पसंख्यक समुदाय से थे। इसके साथ-साथ शिबू सोरेन दूसरे कई मामलों में आरोपी हो चुके थे। वे दिन-प्रतिदिन कानून के शिकंजे में फंसते चले जा रहे थे। उन्हें जिंदा या मुर्दा पकड़ने तक की बात भी प्रशासन में उठने लगी थी। झामुमो द्वारा किये जा रहे आंदोलनों, जिसमें उनके कई साथी मारे गये थे से, वे लगातार कमजोर महसूस करते जा रहे थे। आपातकाल के दौरान पूंजीवाद और महाजनी सभ्यता के लोग अवसर का इस्तेमाल तमाम जनवादी संगठनों को मिटाने में करने लगे थे। प्रशासन से उनको किसी न किसी रूप में सहयोग मिल रहा था। वे शिबू सोरेन को रोकना चाहते थे। इसी क्रम में केबी सक्सेना को उपायुक्त बनाकर धनबाद भेजा गया। उनके कहने पर एवं साथियों की मौत और झामुमो के बिखरते भविष्य को देखते हुए शिबू सोरेन ने आत्मसमर्पण कर दिया। कुछ दिन धनबाद जेल में रखने के बाद उन्हें मुक्त कर दिया गया।

कोयल की मौत ने झकझोर कर रख दिया

दिशोम गुरु शिबू सोरेन ने नौ वर्ष की आयु में ही उस वक्त पूरी तरह से अहिंसा धर्म अपना लिया, जब उनके पिता सोबरन सोरेन की भूल के कारण घर में पलने वाली चिड़िया भेंगराज (कोयल) की मौत हो गयी। सोबरन सोरेन दशहरा के दिन अपने घर में बैठ कर मोर का पंख निकाल रहे थे। उस वक्त भेंगराज बार-बार उनके पैर पर चोंच मार कर उन्हें परेशान कर रही थी। चिड़िया के बार-बार झिड़कने के बावजूद पैर में आकर चोंच मारने से परेशान शिबू सोरेन के पिता ने अपनी बंदूक की नोक से जब भेंगराज को झिड़कने का प्रयास किया, तो भेंगराज की मौत हो गयी। थोड़ी देर बाद जब शिबू सोरेन को अपनी प्यारी चिड़िया की मौत का पता चला, तो वह उसे जिंदा करने की मांग अपने पिता से करने लगे। इस दौरान शिबू सोरेन ने घर में रखा फरसा उठा लिया और अपने पिता को ही मारने दौड़े। बाद में शिबू सोरेन के बड़े भाई ने किसी तरह से समझा-बुझा कर उन्हें शांत किया। उसके बाद शिबू सोरेन ने बांस का खटिया बनाया और कफन आदि की व्यवस्था कर चिड़िया का दाह-संस्कार किया। इस घटना ने शिबू सोरेन को पूरी तरह से झकझोर कर रख दिया और उन्होंने मांस-मछली तथा जीव हत्या को पाप मान कर पूरी तरह से अहिंसा धर्म अपना लिया।

दिशोम गुरु शिबू सोरेन को याद कर शोक में डूबे गुमलावासी

आजाद सिपाही संवाददाता

गुमला। पूर्व मुख्यमंत्री और झारखण्ड राज्य निर्माण के मुख्य आंदोलनकारी दिशोम गुरु शिबू सोरेन के निधन पर लोगों ने गहरा शोक जताया है। अपनी संवेदना व्यक्त करते लोगों ने कहा कि झारखंड ही नहीं, सम्पूर्ण भारत में बहुचर्चित आंदोलनकारी के रूप गुरु जी की पहचान हैं। उनके पास सिद्धांत पहले और स्वार्थ बाद में आता था। उन्होंने अपने जीवन को आंदोलन के लिए समर्पित कर दिया। उनके निधन पर लोगों ने शोक संवेदना प्रकट किया।

रमेश कुमार चीनी : दिशोंम गुरु का जाना केवल व्यक्तिगत क्षति नहीं, बल्कि राजनितिक क्षेत्र की नैतिक शक्ति का क्षरण है। वे हम सबके लिए प्रेरणा के स्त्रोत थे। ठोस निर्णय और मजबूत विचारधारा की सालाहियत रखने वाले गुरुजी का निधन राज्य की राजनीति में एक खालीपन पैदा कर गया है।

चैतू उरांव, जिला अध्यक्ष कांग्रेस पार्टी गुमला : गुरु जी झारखण्ड की राजनीती के ध्रुव थ। उन के निधन की सूचना से अत्यंत व्यथित हूं। उन्होंने आंदोलन के माध्यम से कई दशकों तक राज्य की सेवा की। अभिभावक बतौर हमेशा मार्गदर्शन किया उनका जीवन, हम सबके लिए प्रेरणादायक है।

कलीम अख्तर कल्लन, नगर अध्यक्ष झारखंड मुक्ति मोर्चा गुमला : झारखंड राज्य को राजनीति के गुर सिखाने वाले गुरु शिबू सोरेन का दुनिया से चला जाना बेहद अफसोसजनक है' वह पूरे भारत में झारखंड की पहचान थे। उनका राजनीतिक सफर संघर्षशील था। उन्होंने झारखंड राज्य के लिए काफी संघर्ष किया। इसके लिए झारखंड की जनता उनका आभारी रहेगी' बस ऐसा महसूस होता है कि एक चिराग हमेशा के लिए बुझ गया।

मो. आले हसन लड्डन जिला अल्पसंख्यक अध्यक्ष झारखंड मुक्ति मोर्चा गुमला : गुरुजी जो कहते थे वह करके दिखा देते थे। राज्य निर्माण का ताना-बाना बुनने से लेकर यहां की राजनितिक सरगर्मी को भांपने की सलाहियत गुरुजी के अंदर कूट-कूट कर भरी हुई थी। हमें उनसेऔर उनके जीवन से सीख लेनी चाहिए। अपनी माटी अपना राज्य के लिए कुछ कर गुजरने का जज्बा पैदा करना चाहिए। गुरु जी को विनम्र श्रद्धांजलि।

विनय कुमार लाल, जिला अध्यक्ष भाजपा, गुमला : इस निधन से जो क्षति हुई है उस की भरपाई नहीं की जा सकती है। गुरु जी के सानिध्य में कई बड़े नेताओं ने झारखंड की राजनीति में अपना स्थान बनाया। वह राजनेता नहीं बल्कि राजनेता पैदा करने वाली शख्सियत थे। उनके शोकाकुल परिवार की सांत्वना के लिए और उनकी आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना करता हूं।

यशवंत सिंह, जिला महामंत्री, भाजपा गुमला : दिशोंम गुरु शिबू सोरेन के जाने से झारखंड वासियों को गहरा सदमा लगा है। लंबी बीमारी के बाद वो ईश्वर को प्यारे हो गये। उन्होंने अपने लंबे संघर्ष से झारखंड राज्य निर्माण में जो भूमिका अदा की उसे तत्कालीन प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेई जी ने महसूस किया और झारखंड को अलग राज्य बनाया। गुरु जी की आत्मा की शांति के लिए विनम्र श्रद्धांजलि।

कुमुदिनी प्रभवती, प्रदेश महासचिव अल्पसंख्यक कांग्रेस, केंद्रीय महिला अध्यक्ष, आदिवासी सेना : गुरु जी का जाना झारखंड की राजनीति और आंदोलन के क्षेत्र में अपूरणीय क्षति है। हमलोग उनके आंदोलनकारी जीवन से सीख लेते हैं। और उनके पद चिन्हो पर चलने का प्रयास करते हैं।

बॉबी भगत, जवाइंट कॉडीनेटर आदिवासी विभाग, ऑल इंडिया कांग्रेस, सह वरीय उपाध्यक्ष प्रदेश महिला कांग्रेस : जब भी झारखंड की राजनीति की बात आएगी गुरु जी का नाम सबसे ऊपर लिखा जाएगा। वे राजनीति के क्षेत्र में झारखंड में महापुरुष के रूप में जाने जाते थे। उनकी पहचान जमीन से जुड़े मुद्दों पर आंदोलन करने के कारण हुई है। जो लेखनी आज बंद हो गई। यह हम सबों के लिए बहुत बड़ी क्षति है। इसकी कमी कभी पूरी नहीं की जा सकती।

फिरोज आलम, महा सचिव कांग्रेस पार्टी गुमला : गुरु जी ने जिस अंदाज से झारखण्ड आंदोलन को संचालित करते हुए एक मिसाल कायम की। वह आज के समय में और भी मूल्यवान है। उनका जाना अपूरणीय क्षति है।

रामनिवास प्रसाद, महा सचिव कांग्रेस पार्टी गुमला : गुरु जी जैसे व्यक्तित्व का प्रभाव केवल शब्दों से बयां नहीं किया जा सकता। उनके अंदर आदिवासी-मुलवासी के लिए एक ज्वाला थी। उनका निधन राज्य की राजनीति में एक खालीपन पैदा कर गया है।

उमर फारूक अंसारी, निवर्तमान जिला उपाध्यक्ष, झायुमो गुमला : राजनीति के महापुरुष थे शिबू सोरेन। वह आंदोलन के सहारे समाज के हर वर्ग का आवाज उठाने का कार्य करते रहे। सरल स्वभाव तथा व्यक्तित्व के धनी थे। ईश्वर उन्हें अपने चरणों में स्थान दें।

सैयद खालिद शाह महा सचिव कांग्रेस : गुरु जी के निधन का समाचार अत्यंत दुखद है। उन्होंने अपने दीर्घ राजनितिक जीवन में निष्ठा और संवेदनशीलता के साथ राज्य की सेवा की है।

मो कलाम राय, सचिव कांग्रेस पार्टी गुमला : गुरु जी आंदोलन क्षेत्र में काफी एग्रेसिव रहे हैं। जन भावना के अनुकूल उन्होंने अलग राज्य का सपना देखा और उसे पूरा भी किया।

गुलाम सरवर, प्रखंड अध्यक्ष, कांग्रेस पार्टी, गुमला : गुरु जी लोगों की समस्याओं को हमेशा समझते थे और उसे दूर करने का प्रयास किया करते थे। लोगों को जागृत कर अनवरत आंदोलन को जारी रखने का हुनर उन्हें आता था। यह निधन एक अपूरणीय क्षति है।

दिलीप नाथ साहू, जिला अध्यक्ष, आजसू गुमला : गुरु जी के निधन से पूरा झारखण्ड मर्माहत है। राज्य के लिए अभिभावक तुल्य थे और उनका मार्गदर्शन हर परिस्थिति में युवा राजनेताओं को मिलता रहता था। उनके निधन से राज्य की राजनितिक शक्ति की क्षति हुई है।

आनंद गुप्ता, जिला महामंत्री आजसू गुमला : गुरुजी का दुनिया से जाना पूरे राज्य के लिए सदमे का सबब है। गुरुजी की हिम्मत जहाँ चट्टानों जैसी थी वही वाणी में सरलता और दूरदर्शिता उन्हें एक कुशल राजनीतिक और एक हिम्मतवर आंदोलनकारी के रूप में उन्हें पहचान दिलाता था। उनका जाना झारखंड के लिए काफी दुखद है।

मनीष हिंदुस्तान, विधायक प्रतिनिधि, पालकोट : दिशोंम गुरु हमारे लिए प्रेरणा स्त्रोत थे। राजनीति जगत की यह अपूरणीय क्षति है। वो भारत के नक़्शे में झारखंड को उभारने वाली शख्सियत थे।

राजेश सिंह, अध्यक्ष चेंबर ऑफ कामर्स, गुमला : आज झारखण्ड ने राजनीति के एक मजबूत स्तंभ को खो दिया है। राज्य में एक अभिभावक की भूमिका में गुरु जी ने अपना जीवन व्यतीत किया। उन्हें विनम्र श्रद्धांजलि।

बबलू वर्मा, सचिव, चेंबर ऑफ कामर्स, गुमला : गुरु जी विगत कुछ महीनो से बीमार चल रहे थे। जिनका सोमवार को निधन हो गया। आंदोलन का एक दीपक बुझ गया। राजनीति के क्षेत्र पुरे झारखण्ड के लिए अपूरणीय क्षति है।

विजय सिंह, केंद्रीय संयोजक, झारखंड नवनिर्माण दल : दिशोम गुरु ने महाजनि व्यवस्था के विरुद्ध लंबा संघर्ष करते हुए अलग झारखंड के लिए ऐतिहासिक लड़ाई लड़ी थी। गुरु जी को राज्यवासी हमेशा बड़े ही आदर के साथ याद करते रहेंगे' इस दुख की घड़ी में मृतक के आश्रितों के प्रति मेरी संवेदना है शोक प्रकट करने वालों में पुष्पा उरांव, अर्चना लकड़ा, कुसमा मिंज, उर्मिला देवी, बिलों भगत, लॉरेंसिया मिंज, आदित्य सिंह, शिवप्रसाद साहू, बसंत बड़ाईक, फबयानुस सारस, सहदेव बड़ाईक, धर्मपाल उरांव, रोपना उरांव, ललन साहू, मनी उराँव, कृष्णा गोप, गोपेश्वर गोप, रामप्यार तूरी, शिवप्रसाद नायक, मंगरा उरांव, रामलाल असुर मुख्य के नाम भी शामिल हैं।

शिबू सोरेन ने दिया अलग राज्य का उपहार : मेरी लकड़ा

चैनपुर (आजाद सिपाही)। आदिवासी एकता मंच चैनपुर ने झारखंड के पूर्व मुख्यमंत्री और दिशोम गुरु शिबू सोरेन के निधन पर गहरा शोक व्यक्त किया है। सोमवार को आदिवासी एकता मंच ने शोक सभा आयोजित की, जिसमें 2 मिनट का मौन धारण किया गया और सभा का विसर्जन किया गया। आदिवासी एकता मंच ने अपने शोक संदेश में कहा कि स्वर्गीय शिबू सोरेन ने झारखंड राज्य के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने अपने साथी कार्यकताओं के साथ कर्तव्य पराक्रम से लगातार आंदोलन किया, जिसके परिणामस्वरूप कई बार जेल जाना पड़ा और घर छोड़कर नदी-नाले एवं जंगल में जीवन बिताना पड़ा। जीप सदस्य मेरी लकड़ा ने कहा की दिशोम गुरु शिबू सोरेन का निधन पूरे झारखंड राज्य के लिए एक अपूरणीय क्षति है। उन्होंने झारखंड के लोगों के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया और हमें एक अलग राज्य का उपहार दिया। आदिवासी एकता मंच ने विश्व आदिवासी दिवस के अवसर पर 10 अगस्त रविवार को निर्धारित कार्यक्रम को अगले आदेश तक स्थगित करने का निर्णय लिया है।

हर्षोल्लास के साथ मनाया गया संत जोन मेरी वियान्नी का पर्व

जारी (आजाद सिपाही)। जारी प्रखंड में संत जोन मेरी वियान्नी का पर्व बड़े उत्साह और हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। आरसीप्रावि तोगो और आरसीप्रावि चटकपुर के बच्चों और शिक्षकों ने इस अवसर पर विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया। सबसे पहले विशेष मिस्सा अनुष्ठान जरमान पल्ली में विशेष मिस्सा अनुष्ठान का आयोजन किया गया, जिसमें फादर निरंजन एक्का ने मुख्य आधिष्ठाता के रूप में और फादर लौरेन्स टोप्पो ने सहयोगी के रूप में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। वहीं तोगो स्कूल और चटकपुर स्कूल के बच्चों ने आकर्षक सांस्कृतिक कार्यक्रम पेश किए, जिसमें उनकी प्रतिभा और उत्साह का प्रदर्शन हुआ। वहीं मौके पर उपस्थित एचम फादर निरंजन एक्का ने अपने संदेश मे कहा कि संत जोन मेरी वियान्नी का पर्व शिक्षा और सेवा के महत्व को दशार्ता है। यह पर्व बच्चों को शिक्षा के प्रति प्रेरित करता है और उन्हें समाज सेवा के लिए प्रोत्साहित करता है। इस प्रकार, संत जोन मेरी वियान्नी का पर्व न केवल एक धार्मिक आयोजन है, बल्कि यह शिक्षा और सेवा के मूल्यों को बढ़ावा देने का भी एक महत्वपूर्ण अवसर है। मौके पर जग जीवन लकड़ा,रफैल केरकेट्टा, उषा किरण लकड़ा, ओलिभा बेक, अनिता एक्का, सुस्मिता बड़ा,लोयला खाखा,प्रियंका टोप्पो, मनीषा केरकेट्टा, रोशन कुजूर सहित चटकपुर और तोगो स्कूल के स्कूली बच्चे उपस्थित थे।

सेवानिवृत शिक्षक के निधन से क्षेत्र में शोक

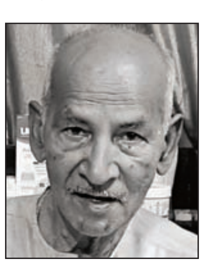

चैनपुर (आजाद सिपाही)। चैनपुर स्थित लुथरन उच्च विद्यालय के सेवा निवृत शिक्षाविद सह झारखंड राज्य माध्यमिक शिक्षक संघ के भूतपूर्व सचिव रामानुज शर्मा का निधन इलाज के दौरान अहमदाबाद के एक निजी अस्पताल में हो गया। स्व शर्मा विगत कुछ महीनों से अस्वस्थ्य चल रहे थे लोगों ने घर जाकर उनके परिजनों को सांत्वना दी। निधन के पश्चात इनका अंतिम संस्कार मंगलवार को चैनपुर के साफी नदी के तट पर किया जायेगा। स्व शर्मा ने 1967 ई लेकर 2008 तक लूथरन स्कूल चैनपुर में योगदान दिया। लगभग 41 वर्षों तक लगातार शिक्षा का अलख जगा कर उन्होंने छात्रों को जागरूक करने का कार्य किया। साथ ही उन्होंने माध्यमिक शिक्षक संघ के सचिव पद पर रहते हुए शिक्षकों की समस्याओं का निराकरण करते हुए शिक्षा के उन्नयन के लिए निरंतर सक्रिय एवं संघर्षरत रहे। स्कूल की प्रधानाध्यापिका प्रतिमा एक्का ने कहा कि उनके निधन से हम सभी काफी मर्माहत हैं, उनके मार्गदर्शन और ज्ञान के लिए हम सभी उनके आभारी रहेंगे। वहीं सेवानिवृत शिक्षक उमेश कुमार वर्मा ने कहा कि एक महान शिक्षक और मार्गदर्शक के रूप में उन्होंने हमारे जीवन पर एक अमिट छाप छोड़ी है उनका स्नेह और मार्ग दर्शन हमेशा याद रहेगा उनके शोकाकुल परिवार के प्रति मेरी गहरी संवेदना है। विनम्र श्रद्धांजलि देने वालों में शिक्षक रोहित कुमार, शांति प्रकाश बेक, अनमोल एक्का, कमल किशोर, राजेंद्र सिंह व्यवसायी पूर्णेंदु शर्मा, रंजीत कुमार, घनश्याम कुमार मुकेश कुमार, अवधेश प्रताप शाहदेव, मनोहर बड़ाइक, बुधराम नायक, अरविंद मौर्य, मनोज कुमार, दिलबाग कुमार सहित कई लोग शामिल हैं।

गुमला में प्रतिबंधित सीरप और टैबलेट के साथ दो गिरफ्तार

आजाद सिपाही संवाददाता

गुमला। एसपी को मिली गुप्त सूचना के आधार पर गुमला पुलिस ने खरका से कोटाम जाने वाले रास्ते पर रविवार को वाहन चेकिंग लगाया। कुछ देर बाद दो व्यक्ति बाइक और स्कूटी में सवार होकर आये और पुलिस को देखकर भागने लगे। जिन्हें खदेड़ कर पकड़ा गया। पूछताछ करने पर उन्होंने अपना नाम घाघरा थाना क्षेत्र क्षेत्र के गोया गांव निवासी 50 वर्षीय नइम खान पिता स्वर्गीय सिद्धीक खान और पुटो रोड निवासी 50 वर्षीय मिथिलेश सिंह पिता कामाख्या नाथ सिंह बताया। तलाशी लेने पर उनके पास से एक थैली में विनस्पास्मो फोर्ट कैप्सूल मिला। कड़ाई से पूछने पर बताया कि घर में भारी मात्रा में नशीली दवा एवं कफ सिरप रांची से मंगा कर रखा है। उनके निशानदेही पर उनके घर में संचालित सीमा सिलाई सेंटर वाले कमरे से 23 कार्टून कोरेक्स और 31 120 पीस कैप्सूल मिला। नइम खान 2020 में घाघरा थाना से जेल जा चुका है। सोमवार की अपराह्न 3 बजे दोनों को गिरफ्तार करते हुए जेल भेज दिया गया। छापामारी दल में अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी सुरेश प्रसाद यादव, पुलिस अवर निरीक्षक उदेश्वर पाल, गफ्फार अंसारी, नौशाद पावरिया, पंकज महतो, अशफाक अंसारी, प्रवीण टोप्पो शामिल थे।

घाघरा प्रखंड कार्यालय में शोक सभा

आजाद सिपाही संवाददाता

घाघरा। झारखंड आंदोलन के प्रणेता झारखंड मुक्ति मोर्चा के संस्थापक और राज्य के पूर्व मुख्यमंत्री शिबू सोरेन के निधन पर घाघरा प्रखंड कार्यालय में गहरा शोक व्यक्त किया गया। बीडीओ दिनेश कुमार के नेतृत्व में शोक सभा का आयोजन किया गया, जिसमें कार्यालय के सभी कर्मियों, पदाधिकारियों और स्थानीय लोगों ने भाग लिया। शोक सभा में दो मिनट का मौन रखकर दिवंगत आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना की गयी। इस अवसर पर बीडीओ दिनेश कुमार ने कहा कि गुरूजी शिबू सोरेन का जीवन संघर्ष, जनसेवा और समाज के शोषित वर्गों के लिए समर्पण का प्रतीक रहा है। उन्होंने झारखंड की पहचान को राष्ट्रीय स्तर पर स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। सभा में मौजूद अन्य अधिकारियों और कर्मचारियों ने भी शिबू सोरेन के सामाजिक और राजनीतिक योगदान को याद करते हुए उन्हें विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित की।

स्वामी विवेकानंद पब्लिक स्कूल में स्काउट गाइड प्रशिक्षण शुरू

आजाद सिपाही संवाददाता

बिशुनपुर। प्रखंड मुख्यालय के दीपू मैदान स्थित स्वामी विवेकानंद पब्लिक स्कूल में स्काउट गाइड प्रवेश प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि सुशील टोप्पो और विशिष्ट अतिथि गुरूदेव उरांव, मणि उरांव, बादल कुमार आदि अतिथियों ने भारत माता की तस्वीर पर पुष्प अर्पित एवं दीप प्रज्वलित कर प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्घाटन किया। प्रथम दिन प्रशिक्षण में विद्यालय के लगभग 100 बच्चों ने भाग लिया। जिन्हें स्टेट ट्रेनर सुभाष कुमार के द्वारा विभिन्न गतिविधियों की प्रशिक्षण दी गयी।

इस अवसर पर सुशील टोप्पो ने कहा कि स्काउट एंड गाइड शिविर आप छात्रों के लिए एक महत्वपूर्ण अवसर है प्रशिक्षण से आपका शारीरिक, मानसिक और नैतिक विकास के साथ-साथ राष्ट्र भावना की सोच भी विकसित करने में मदद मिलेगी, जिससे आप सभी अपने देश के प्रति जिम्मेदार और समर्पित नागरिक बन सकेंगे। प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले छात्र-छात्राओं को राष्ट्रीय बाल पुरस्कार पाने का अवसर मिलेगा जो आप लोगों के लिए एक महत्वपूर्ण सम्मान होगा। विद्यालय के डायरेक्टर बिंदेश्वर साहू ने कहा कि प्रशिक्षण का उद्देश्य छात्रों को स्काउट गाइड की मूल बातों और कौशलों से परिचित कराना है जिससे वे अपने व्यक्तित्व का विकास कर सकें उन्होंने कहा कि इस प्रशिक्षण के लिए विद्यालय का रजिस्ट्रेशन हो गया है छात्र-छात्राओं को प्रत्येक माह में दो दिन स्काउट गाइड के मूल सिद्धांत, प्रथमोचार, शिविर निर्माण और सामुदायिक सेवा जैसे विषय पर प्रशिक्षित किया जायेगा जिसके लिए प्रशिक्षक नियुक्त किये गये हैं। इस अवसर पर अतिथियों ने प्रशिक्षण के आयोजन के लिए विद्यालय प्रबंधन को धन्यवाद एवं शुभकामनाएं दी। इस मौके पर प्रधानाध्यापक जयपाल बरवा झुमरानी देवी गुड़िया कुमारी, प्रतीक खलखो हिलकोरेन तिर्की कुसुम बेक संतोष कुमार बसिल रोशनी देवी कई लोगों उपस्थित थे।

सीमेंट दुकानदार से आठ हजार की ठगी

आजाद सिपाही संवाददाता

घाघरा। घाघरा के नेतरहाट रोड स्थित सीमेंट दुकानदार आकाश कुमार ठगी का शिकार हो गया। पीड़ित आकाश कुमार ने बताया की वह अपने सीमेंट छड़ दुकान पर बैठे हुए थे। इसी क्रम में एक व्यक्ति उनके पास आया और सीमेंट और छड़ लेने की बात कही। जिस पर उन्होंने सीमेंट और छड़ का रेट बताया। कुछ देर बैठने के बाद वह व्यक्ति पिकअप गाड़ी बुक कर लाने की बात कह कर निकला और घाघरा हाइ स्कूल मैदान से एक पिकअप गाड़ी लेकर पहुंचा। गाड़ी में पिकअप ड्राइवर की पत्नी भी बैठी हुई थी। ठग ने पिकअप में पांच बोरा सीमेंट लदवाने के क्रम में दुकानदार आकाश कुमार से 8000 मांगते हुए कहा कि उसकी पत्नी को कुछ सामान लेना है पिकअप में बैठी हुई है। एक साथ पूरा पैसा फोनपे में डलवा देंगे तब तक मैं लोड करवाता हूं। उन्हें पैसा देकर भेज देता हूं। यह बात सुनकर आकाश कुमार द्वारा 8000 नगद उक्त व्यक्ति को दे दिया। जिसके बाद दुकान में अन्य दूसरे कस्टमर की भीड़ लगी। इस क्रम में मौके का फायदा उठाकर ठग भाग गया। भागने का पूरा वीडियो सीसीटीवी में कैद हो गया। जो साफ-साफ देखा जा सकता है। सर पर केसरिया रंग के गमछा बंधे हुए हैं। घटना की जानकारी आकाश को तब हुई, जब वह उस व्यक्ति को भीड़ में नहीं पाया। गाड़ी में उक्त महिला को बैठा देखकर दुकानदार आकाश ने ड्राइवर से उस महिला को बुलाने की बात कही गयी। जिस पर ड्राइवर ने उस महिला को अपनी पत्नी बताते हुए परिचय दिया। जैसे ही इस बात की जानकारी हुई तो पता चला कि वह ठगी का शिकार हो गया है और वह व्यक्ति भाग गया है। ड्राइवर को भी पता नहीं था कि वह व्यक्ति कौन था और कहां से आया था और कहां उसे जाना था। वहीं पीड़ित ने इस संबंध में घाघरा थाने में लिखित आवेदन देकर कार्रवाई की मांग की है।

अलग-अलग सड़क दुर्घटना में दो घायल

बिशुनपुर (आजाद सिपाही)। प्रखंड के चटकपुर एवं बनारी गांव में सोमवार को हुए दो अलग अलग सड़क दुर्मघटना में दो लोग चटकपुर निवासी 60 वर्षीय अस्तर लकड़ा एवं जोभी पाठ निवासी 45 वर्षीय बिमला उरांव घायल हो गए दोनो घायलो को समाज सेवी महात्मा उरांव एवं नरमा पंचायत समिति सदस्य धर्मेंद्र उरांव सामुदायिक स्वस्थ केंद्र लाए जहां घायलों का इलाज हो रहा है। घटना के संबंध में मिली जानकारी के अनुसार सोमवार को बनारी में लगने वाले साप्ताहिक हाट में दोनों लोग आए हुए थे।

लायंस क्लब ने भंडारे का किया आयोजन

गुमला (आजाद सिपाही)। लायंस क्लब गुमला के द्वारा फूड फॉर हंगर के अंतर्गत अध्यक्ष ला मुरली मनोहर प्रसाद की अगुवाई में पटेल चौक गुमला में मौसम खराब के वाबजूद क्लब के भंडारे का आयोजन किया। जिसमें बड़ी संख्या में लगभग 500 लोगों ने भंडारे का लाभ लिया और लायंस क्लब के कार्यों की सराहना की। लायंस क्लब सेवा के प्रति समर्पित है और मौसम के अनुसार हर कार्य को अंजाम देता है। अध्यक्ष ने कहा लायंस क्लब सेवा के प्रति समर्पित है और आम नागरिकों के बीच में एक संदेश देता है। लायंस क्लब के द्वारा लगातार अभी बहुत से कार्यक्रम किये जायेंगे। जिला 322 अ के आह्वान पर सभी कार्यक्रम आयोजित किये जायेंगे। आने वाले दिनों में वृक्षारोपण, ब्लीचिंग पाउडर की छिड़काव, पौधों का वितरण और नशे के खिलाफ अभियान जैसे कार्यक्रम आयोजित किये जायेंगे। मौक पर अध्यक्ष ला मुरली मनोहर प्रसाद, रीजन चेयरपर्सन अशोक कुमार जायसवाल, जोन चेयरपर्सन एमजेएफ शंकर लाल जाजोदिया, मनमोहन लाल केसरी, सतयेंद्र गुप्ता, विशाल कुमार बिट्टू , महेश प्रसाद गुप्ता, संजय अग्रवाल, पवन कुमार अग्रवाल, दामोदर कसेरा, अनिल अग्रवाल, शिवकुमार लाल, शशि किरण जयसवाल, सरस्वती प्रसाद, किरण केसरी, रीता लाल मौजूद रहे। लायंस क्लब गुमला के इस आयोजन से गुमला जिले का नाम झारखंड में रोशन होगा और सेवा से परम धर्म का सभी को लाभ मिलेगा।

जरडा पंचायत भवन में शिबू सोरेन को दी श्रद्धांजलि

जारी (आजाद सिपाही)। झारखंड के महान क्रांतिकारी, आदिवासी हितों के सशक्त स्वर और झारखंड आंदोलन के अग्रणी नेता तथा राज्य के पूर्व मुख्यमंत्री शिबू सोरेन के 81 वर्ष की उम्र में निधन पर पूरे राज्य में शोक की लहर दौड़ गई है। इसी क्रम में जारी प्रखंड अंतर्गत जरडा पंचायत भवन में एक शोकसभा का आयोजन किया गया, जहां लोगों ने उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की। इस अवसर पर झामुमो के कार्यकताओं और क्षेत्रीय नेताओं की उपस्थिति देखी गयी। शोकसभा में जारी प्रखंड संगठन सचिव गुलामे मुस्तफा, जरडा पंचायत के मुखिया विनय एक्का, फरमान आलम उर्फ बीतू, दीप जूलियस कुजूर सहित कई झामुमो कार्यकर्ता व प्रतिनिधि उपस्थित रहे।कार्यक्रम में वक्ताओं ने शिबू सोरेन के संघर्ष, उनके आदिवासी हितों के लिए किए गए योगदान और झारखंड राज्य की स्थापना में उनकी भूमिका को याद करते हुए कहा कि उनका जीवन आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणास्रोत बना रहेगा।

झारखंड में पत्रकारिता के आधार स्तंभ थे हरिनारायण सिंह : डॉ कौशल किशोर

मेदिनीनगर (आजाद सिपाही)। विश्वव्यापी पर्यावरण संरक्षण अभियान के राष्ट्रीय अध्यक्ष पर्यावरणविद डॉ कौशल किशोर जयसवाल ने कहा कि वरिष्ठ पत्रकार हरिनारायण सिंह के रूप में हमने अपना अभिभावक खो दिया है। उन्होंने कहा कि झारखंड में पत्रकारिता की अलख जगाने वाले एक ऐसे शख्सियत को खो दिया है जिसकी भरपाई करना बहुत मुश्किल है। भगवान उनकी आत्मा को शांति प्रदान करें।

हरि नारायण सिंह के रूप में हम लोगों ने अपना अभिभावक खो दिया: अविनाश देव

मेदिनीनगर (आजाद सिपाही)। संत मरियम स्कूल के चेयरमैन अविनाश देव ने कहा कि झारखंड पत्रकारिता के आधार स्तंभ रहे हरिनारायण सिंह जी का गो लोक जाना हम सभी को झकझोर कर रख दिया है। ढाई दशक के सफर में लगभग एक दशक तक मिला उनका साथ और मार्गदर्शन अविस्मरणीय है। हम लोगों ने अपना एक अभिभावक खो दिया है। भगवान उनकी आत्मा को शांति प्रदान करें।

हरिनारायण सिंह जी के निधन की खबर सुनकर मर्माहत हूं : भानू प्रताप शाही

मेदिनीनगर (आजाद सिपाही)। भाजपा नेता सह पूर्व मंत्री भानू प्रताप शाही ने कहा कि हर समय सही गलत का एहसास दिलाते रहने वाले हमारे बड़े भाई झारखंड के वरिष्ठ पत्रकार हरिनारायण सिंह जी के निधन की खबर सुनकर मर्माहत हूं। भगवान विष्णु उनको अपनी श्रीचरणों में स्थान दें।

हरि जी का गो लोक जाना झारखंड में पत्रकारिता की बहुत बड़ी क्षति : आनंद

मेदिनीनगर (आजाद सिपाही)। पलामू चेंबर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्रीज के अध्यक्ष आनंद शंकर ने कहा कि आजाद सिपाही के प्रधान संपादक हरिनारायण सिंह का गो लोक जाना झारखंड में पत्रकारिता का बहुत बड़ा ह्रास है। कलम के प्रखर सेनापति को अपने बीच नहीं पाकर हम सभी सदमे में हैं। मेरी विनम्र श्रद्धांजलि। शोक संतप्त परिवार को इस विपदा को सहने की ईश्वर शक्ति प्रदान करें।

पत्रकारिता जगत के लिए अपूरणीय क्षति है हरि जी का वैकुंठ धाम चले जाना : अवस्थी

मेदिनीनगर (आजाद सिपाही)। ग्रासिम इंडस्ट्रीज रेहला के संस्थान प्रमुख हितेंद्र केशव अवस्थी ने कहा कि झारखंड पत्रकारिता के स्तंभ रहे वरिष्ठ पत्रकार हरिनारायण सिंह का हम सभी लोगों के बीच से वैकुंठ धाम चले जाना पत्रकारिता जगत के लिए अपूर्णीय क्षति है। उनकी कमी हम लोगों को सदैव खलेगी। भगवान उनकी आत्मा को शांति प्रदान करें।

दिशोम गुरु का जाना झारखंड के लिए अपूरणीय क्षति : कमलेश कुमार सिंह

हुसैनाबाद (आजाद सिपाही)। झारखंड के पूर्व मंत्री कमलेश कुमार सिंह ने दिशोम गुरु शिबू सोरेन के निधन पर गहरा शोक व्यक्त किया है। अपने शोक संदेश में कहा कि दिशोम गुरु का जाना मेरे लिए एक व्यक्तिगत क्षति है। मुझे उनके साथ सरकार में कैबिनेट मंत्री के रूप में कार्य करने का अवसर मिला। जब वे मुख्यमंत्री थे, तब उनके नेतृत्व में मुझे जनसेवा का वास्तविक अर्थ समझने और झारखंड की जनता के लिए समर्पित भाव से काम करने की प्रेरणा मिली। उनका जीवन, त्याग और संघर्ष आने वाली पीढ़ियों को सदैव मार्ग दिखाता रहेगा। उन्होंने बाबा बैजनाथ से प्रार्थना की कि वे इस पुण्यात्मा को अपने श्रीचरणों में स्थान दें और उनके परिजनों, समर्थकों एवं समस्त झारखंडवासियों को यह गहन दुःख सहने की शक्ति प्रदान करें। वहीं, भाजपा के युवा नेता सूर्या सोनल सिंह ने भी दिशोम गुरु के निधन पर शोक व्यक्त किया है। कहा कि शिबू सोरेन जी ने आदिवासी समाज की आवाज को राष्ट्रीय मंच तक पहुंचाया। उनका जीवन संघर्ष और बलिदान की मिसाल है, जो हमें सदैव प्रेरणा देता रहेगा।

समाहरणालय में डीसी ने दी दिशोम गुरु को श्रद्धांजलि

मेदिनीनगर (आजाद सिपाही)। आदिवासी समाज के पुरोधा दिशोम गुरु शिबू सोरेन के निधन पर सोमवार को समाहरणालय सभागार में डीसी, डीडीसी और एसी सहित अन्य पदाधिकारियों और कर्मचारियों ने श्रद्धांजलि अर्पित कर नमन किया।

सावन की अंतिम सोमवारी पर बाबा बैद्यनाथ धाम में उमड़ा आस्था का सैलाब

पांच किलोमीटर दूर तक पहुंची कांवरियों की कतार, सुरक्षा चाक चौबंद

आजाद सिपाही संवाददाता

देवघर। श्रावण माह की चौथी और अंतिम सोमवारी पर महादेव की नगरी देवघर में भगवान भोलेनाथ पर जलार्पण के लिए आस्था का जनसैलाब उमड़ पड़ा। भीड़ इतनी अधिक थी कि बाबा बैद्यनाथ मंदिर से लगभग 5 किलोमीटर दूर नंदन पहाड़ तक कतार पहुंच गई। इस दिन तड़के तीन बजे बाबा बैद्यनाथ मंदिर का पट खोला गया। कांचा पूजा के बाद सरदार पांडा द्वारा सरदारी पूजा किया गया। इसके बाद सुबह चार बजे श्रद्धालुओं के लिए मंदिर में जलार्पण शुरू किया गया। बाबा बैद्यनाथ मंदिर में दो अरघा लगाया गया है। एक बाहर और एक बाबा बैद्यनाथ मंदिर के गर्भगृह के बाहर, जहां कांवरिया अरघ के माध्यम से

श्रावण माह की अंतिम सोमवारी पर देवनगरी बाबा बैद्यनाथ धाम में जलार्पण के लिए उमड़ी लोगों की भारी भीड़।

जालार्पण करते दिखे। अंतिम सोमवारी होने के कारण अत्यधिक भीड़ पहुंची थी। देवघर बाबा बैद्यनाथ मंदिर के पुरोहित ने बताया कि आज का दिन काफी विशेष है। आज 10वीं के बाद एकादशी है। ऐसे में आज जो भी भक्त बाबा बैद्यनाथ पर जलार्पण कर बेलपत्र चढ़ाएंगे उनके उनको मनवांछित फल की प्राप्ति होगी। वहीं, देवघर डीसी ने बताया कि आज अंतिम सोमवारी है। ऐसे में लगभग सवा दो लाख कावरिया देवघर पहुंचने की उम्मीद है। कांवरियों को सुलभ जलार्पण कराने को लेकर सभी तैयारियां दुरुस्त कर ली गई है। लगातार रूट लाइन का निरीक्षण किया जा रहा है। कांवरियों की कतार नंदन पहाड़ से भी दूर पहुंच गई है। कतार में किसी तरह की दिक्कत ना हो इसको लेकर जिला प्रशासन सभी पुलिस पदाधिकारी को निर्देशित किया गया है। सुलभ जलार्पण को लेकर कांवरिया कतारबद्ध तरीके से बाबा बैद्यनाथ मंदिर के गर्भगृह में लगे अरघा और बाह्य अरघा से जलार्पण कर रहे हैं।

मधुपुर के शिवालयों में अंतिम सोमवारी पर लगा भक्तों का तांता

मधुपुर (आजाद सिपाही)। शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र में सावन के अंतिम सोमवारी को लेकर विभिन्न शिवालयों में पूजा अर्चना को लेकर भक्तों की भीड़ उमड़ पड़ी। अंतिम सोमवारी को लेकर सुबह से ही भक्तों ने भगवान शंकर को जलाभिषेक किया। शहर के वाहेगुरु शिव मंदिर, गिरी शिव मंदिर, श्रीराम ठाकुरबाड़ी, चांदमारी शिव मंदिर, बेलपड़ा, खलासी मोहल्ला, काली पुटाउन, बावन बीघा राम कृष्ण विवेकानंद मठ, शेखपुरा, गड़िया, पिपरासोल मंदिर आदि शिवालयों में अंतिम सोमवारी को लेकर उत्साह का माहौल रहा। शिवालयों में हर-हर महादेव उद्घोष से पूरा इलाका भक्तिमय बना हुआ है।

दिशोम गुरु शिबू सोरेन विचार, चेतना और आंदोलन का दूसरा नाम थे : अरूणा शंकर

मेदिनीनगर (आजाद सिपाही)। नगर निगम की प्रथम महापौर अरूणा शंकर ने दिशोम गुरु शिबू सोरेन के निधन पर गहरी शोक संवेदना व्यक्त की हैं। कहा कि झारखंड के लिए शिबू सोरेन न केवल एक राजनेता थे, बल्कि एक विचार, एक चेतना और एक आंदोलन का नाम थे। उनके निधन से एक युग का अंत हो गया। उनका जाना न सिर्फ झारखंड, बल्कि पूरे देश के लिए क्षति हैं। राजनीतिक जीवन में संघर्ष, जनता के प्रति प्रतिबद्धता और बेहतर झारखंड के निर्माण के लिए गुरूजी ने जो काम किया उससे उनकी पहचान राष्ट्रीय स्तर पर बनी थी। वह देश के विशिष्ट नेताओं में से एक थे। गुरू जी झारखंड के राजनीतिक भूगोल के नहीं, सांस्कृतिक नक्शे के निर्माता भी थे। उनका संघर्ष, सादगी आने वाले पीढ़ियों को प्रेरित करेगा। उनके स्मृतियों को सादर नमन, अंतिम जोहार।

शिबू सोरेन झारखंड की आत्मा थे: संजय सिंह यादव

हुसैनाबाद (आजाद सिपाही)। झारखंड आंदोलन के प्रणेता और आदिवासी अस्मिता के प्रतीक दिशोम गुरु शिबू सोरेन के निधन पर हुसैनाबाद के विधायक संजय सिंह यादव ने गहरा शोक व्यक्त किया है। उन्होंने इसे झारखंड की राजनीति और सामाजिक चेतना के लिए अपूरणीय क्षति बताया। विधायक संजय सिंह ने अपने शोक संदेश में कहा कि दिशोम गुरु शिबू सोरेन न केवल एक राजनेता थे, बल्कि वे झारखंड की आत्मा थे। उन्होंने आदिवासियों, किसानों और वंचित तबके की आवाज को जिस तरह संसद से लेकर सड़कों तक पहुंचाया। वह आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा है। उनका जीवन संघर्षों और बलिदानों की मिसाल है। झारखंड राज्य के गठन में उनका योगदान अमिट और ऐतिहासिक है। आज हम सबने एक मार्गदर्शक और जननेता को खो दिया। ईश्वर उनकी आत्मा को शांति दें और शोकाकुल परिजनों को यह वज्रपात सहने की शक्ति दें। विधायक ने क्षेत्र के लोगों से आह्वान किया कि वे दिशोम गुरु के सपनों के झारखंड को साकार करने के लिए एकजुट होकर काम करें।

आजसू ने दी दिशोम गुरू शिबू सोरेन को श्रद्धांजलि

देवघर (आजाद सिपाही)। आजसू के ध्रुव प्रसाद साह ने कहा कि झारखंड को उसकी पहचान दिलाने वाले, जल-जंगल-जमीन की लड़ाई को जनआंदोलन बनाने वाले देशोम गुरु शिबू सोरेन आज हमारे बीच नहीं रहे। यह सिर्फ एक व्यक्ति का निधन नहीं है, बल्कि एक युग का अंत है। उनकी आंखों में झारखंड के हर गरीब का सपना बसता था। उनका संघर्ष, उनका जीवन, उनका त्याग–सबकुछ केवल और केवल अपनी माटी, अपने लोग, और अपने हक के लिए था। उन्होंने कभी कुर्सी को नहीं, जनता को प्राथमिकता दी। उन्होंने राजनीति नहीं, सेवा की। आज हमने एक जननेता को खो दिया, लेकिन उनकी विचारधारा, उनका संघर्ष, और उनका प्यार हमारे दिलों में सदा जीवित रहेगी। देशोम गुरु को अपनी गोद में स्थान देना और उनके परिवार व चाहने वालों को यह असहनीय पीड़ा सहने की शक्ति मिले।

दिशोम गुरु के निधन पर शोकसभा

हरिहरगंज/पलामू (आजाद सिपाही)। झामुमो के संस्थापक दिशोम गुरु शिबू सोरेन के निधन पर उनके कार्यकर्ताओं और विभिन्न दलों के नेताओं ने गहरी शोक संवेदना व्यक्त की है। पीपरा प्रखण्ड अध्यक्ष कुमार राजन सिंह, उपाध्यक्ष विश्वनाथ राम, हरिहरगंज प्रखंड अध्यक्ष अमित कुमार सिंह, राजद के महेन्द्र यादव, कांग्रेस के सुजीत कुमार सिंह और समाजसेवी संदीप पासवान आदि नेताओं ने उनके निधन पर दुख जताया है। झामुमो पिपरा प्रखण्ड अध्यक्ष कुमार राजन सिंह, हरिहरगंज प्रखंड अध्यक्ष अमित कुमार सिंह ने भी दिशोम गुरू शिबू सोरेन को याद किया। राजद के प्रखण्ड अध्यक्ष महेन्द्र यादव और कांग्रेस के प्रखण्ड अध्यक्ष सुजीत कुमार सिंह ने उन्हें दलितों और आदिवासियों का एक महान नेता बताया। जबकि समाजसेवी संदीप पासवान ने उनके निधन को झारखंड के लिए एक बड़ी क्षति बताया है।

संत तुलसीदास कॉलेज ने दिशोम गुरु शिबू सोरेन को दी श्रद्धांजलि

विश्रामपुर/पलामू (आजाद सिपाही)। रेहला संत तुलसीदास इंटर कॉलेज सभागार में दिशोम गुरू शिबू सोरेन के आकस्मिक निधन पर शोकसभा का आयोजन किया गया। जिसमें दिशोम गुरु शिबू सोरेन के चित्र पर श्रद्धासुमन अर्पित कर नमन किया गया। प्रभारी प्राचार्य अर्चना कुमारी ने शिबू सोरेन के जीवन पर विस्तृत रूप से प्रकाश डाला। इस मौके पर राजीव चौबे, इरफान अहमद, रेणु कुमारी, रूपा कुमारी, सुशील यादव, इबरार खलीफा, लक्ष्मीकांत शुक्ला, अमित चौबे, प्रभाकर सिंह, अंजना कुमारी, सुभाष पांडेय, रामा तिवारी आदि मौजूद थे।

शिबू सोरेन के निधन पर कांग्रेसियों ने मनाया शोक

मधुपुर (आजाद सिपाही)। शहर के राजबाड़ी होटल सभागार में मधुपुर नगर कांग्रेस की ओर से दिशोम गुरू शिबू सोरेन के निधन पर शोक सभा आयोजित किया। जिसमें झारखंड कांग्रेस की सचिव शबाना खातून ने कहा कि हम सभी के अभिभावक, झारखंड राज्य निर्माता, क्रांतिकारी, झारखंड मुक्ति मोर्चा के सुप्रीमो के निधन की खबर से मर्माहत हैं। लंबी बीमारी के बाद 81 वर्ष की उम्र में वह हम सभी को छोड़कर चले गए। यह हम सभी के लिए अपूरणीय क्षति हैं। ईश्वर से प्रार्थना है कि उन्हें अपने श्री चरणों में स्थान दें एवं परिजनों को इस दुख को सहन करने की शक्ति दें। हम सभी उनके परिजनों के साथ इस दुख की घड़ी में खड़े हैं। इस मौके पर मधुपुर नगर कांग्रेस के अध्यक्ष सैफ अहमद, कांग्रेस मीडिया प्रभारी गोल्डी खान, नगर उपाध्यक्ष मुशर्रफ हुसैन, अमर शर्मा, दीनबंधु, विजय लच्छीरामका, युवा कांग्रेस प्रदेश सचिव राजीव कुमार, इमरान अशर्फी, शहजाद खान, सुनील कुमार दास, अदनान यूसुफ, अमजद खान, नौशाद अंसारी, फिरोज अंसारी उर्फ.मिंटू आदि मौजूद थे।

डीसी ने दिशोम गुरु को दी श्रद्धांजलि

देवघर (आजाद सिपाही)। दिशोम गुरु शिबू सोरेन के निधन पर जिला प्रशासन की ओर से सोमवार को शोकसभा आयोजित कर दिवंगत आत्मा को श्रद्धांजलि अर्पित की गयी। देवघर परिसदन सभागार में आयोजित शोकसभा में डीसी नमन प्रियेश लकड़ा सहित अन्य अधिकारियों और सभी विभागों के कर्मियों ने तस्वीर पर फूल चढ़ाकर श्रद्धांजलि अर्पित की। डीसी ने कहा कि दिशोम गुरु शिबू सोरेन के निधन का समाचार अत्यंत दुखद है। उनका योगदान सदैव अविस्मरणीय रहेगा। इस दौरान नगर आयुक्त रोहित सिन्हा, डीडीसी पीयूष सिन्हा, अपर समाहर्ता हीरा कुमार, जिला नजारत उपसमाहर्ता शैलेश कुमार, जिला जनसंपर्क पदाधिकारी राहुल भारती, जिला पंचायती राज पदाधिकारी रणबीर सिंह, जिला भूअर्जन पदाधिकारी अमर कुमार, सहायक जनसंपर्क पदाधिकारी रोहित कुमार विद्यार्थी आदि उपस्थित थे।

हुसैनाबाद में पौधरोपण सह रक्षा सूत्र कार्यक्रम का आयोजन

वृक्षों को रक्षा सूत्र बांधकर उनकी सुरक्षा और संरक्षण का लें संकल्प : प्रेमतोष सिंह

हुसैनाबाद (आजाद सिपाही)। लोक जन चेतना मंच के तत्वाधान में जल सहिया समिति की ओर से हुसैनाबाद अनुमंडल क्षेत्र में वृक्षों को रक्षा सूत्र बांधने और वृक्षारोपण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसके तहत जलसहियाओं एवं प्रबुद्ध लोगों ने हुसैनाबाद के दातानगर, कुकहि सूर्य मंदिर परिसर, प्लस टू कन्या मध्य विद्यालय हैदरनगर, सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र, मोहम्मदगंज के भीम बराज परिसर सहित कई अन्य स्थानों पर पेड़ों को रक्षासूत्र बांधकर उनकी रक्षा का संकल्प लिया गया। साथ ही सैकडों फलदार एवं छायादार पौधे लगाए गए। इस अवसर पर

जलसहिया रीता देवी ने कहा कि हम जैसी बहनों ने पहले अपने भाइयों की कलाई पर राखी बांधकर उनकी लंबी उम्र की दुआ मांगी। अब पेड़ों को राखी बांधकर पर्यावरण की रक्षा का संकल्प लिया है। पेड़ ही जीवन हैं। इनकी रक्षा करना हम सभी का धर्म है। हर घर में एक पेड़ लगाने और उसकी देखभाल की जिम्मेदारी हम जलसहिया बहनों ने ली है। ये सिर्फ एक परंपरा नहीं, बल्कि हमारी जिम्मेदारी है। इस दौरान कार्यक्रम की अध्यक्षता अधिवक्ता प्रेमतोष कुमार सिंह उर्फ गुड्डू और संचालन सचिव अधिवक्ता मधुलता रानी ने किया। इस अवसर पर लोक जन चेतना मंच के अध्यक्ष प्रेमतोष सिंह ने कहा कि इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य पर्यावरण संरक्षण के प्रति लोगों को जागरूक करना है। कहा कि हम जिस तरह अपने बड़े-बुजुर्गों का सम्मान करते है भाइ-बहनों को राखी बांधते है इस तरह वृक्षों को भी अपने परिवार का सदस्य समझे और उन्हें रक्षा सूत बांधकर उनकी सुरक्षा और संरक्षण का संकल्प लें। इस मौके पर डॉ पीएन सिंह, डॉ अमृता सिंह, पिंटू सिंह, अनिमेष अग्रवाल, अभय सिंह, मुकेश कुमार सिंह, चंदन पासवान, प्रिंस सिंह, जॉनी सिंह और विजय मेहता आदि मौजूद थे।

डीएवी भंडारकोला ने की कांवरियों की सेवा

देवघर (आजाद सिपाही)। खिजुरिया तोरण द्वार के समीप गीता देवी डीएवी पब्लिक स्कूल भंडारकोला के शिक्षक-शिक्षिकाओं आदि ने इस साल भी कांवरियों की सेवा की। विद्यालय परिवार ने ताजे फल, फ्रूटी, पानी और लस्सी आदि का वितरण किया। दर्द का स्प्रे लगाकर थके कांवरियों के दर्द को कम करने का प्रयास किया। इश दौरान करीब 150 लोग सेवा कार्य में लगे रहे। डीएवी भंडारकोला के प्राचार्य बलराम कुमार झा ने कहा कि डीएवी वैदिक धर्म की परिकल्पना पर चलता है। इसमें मानव सेवा का अपना विशेष स्थान है। यह निःस्वार्थ भाव से दूसरों की सहायता करने की प्रेरणा देती है।

झारखंड आंदोलन के प्रणेता के रूप में हमेशा याद किये जायेंगे दिशोम गुरु : अनुपमा सिंह

धनबाद (आजाद सिपाही)। कांग्रेस नेत्री अनुपमा सिंह के जोड़ापोखर जेलगोड़ा स्थित आवासीय कार्यालय में झारखंड आंदोलन के जनक दिशोम गुरु शिबू सोरेन के निधन पर भावपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित की गयी। इस असर पर अनुपमा सिंह ने कहा की दिशोम गुरु के निधन की खबर अत्यंत दुखद एवं पीड़ा दायक है। दिशोम गुरु का निधन सिर्फ झारखंड ही नहीं, बल्कि संपूर्ण राष्ट्र के लिए गहरी और अपूरणीय क्षति है। दबे शोषित पीड़ित कुचले के अस्मिता एवं अधिकार के सशक्त आवाज थे। झारखंड के निर्माण में उनकी भूमिका को हमेशा याद रखा जाएगा। आज हमने केवल एक व्यक्ति नहीं खोया, बल्कि एक पूरी पीढ़ी का मार्गदर्शन करने वाले अभिभावक तुल्य पथ प्रदर्शक को खो दिया है। उनके निधन के साथ ही एक युग का अंत हो गया। उन्हीं के कारण राज्य का नाम झारखंड हुआ। वे केवल एक राजनेता नहीं, बल्कि एक विचार चेतना और एक संघर्षशील आंदोलन का नाम थे। उनकी सादगी संघर्षशीलता दूरदर्शिता और जन सेवा के प्रतीत अटूट समर्पण हमें आजीवन प्रेरणा देता रहेगा। श्रद्धांजलि कार्यक्रम की अध्यक्षता सतपाल सिंह ब्रोका और संचालन किशोर कुमार ने की। इस मौके पर राम गोपाल भुवानिया, किशोर कुमार, बमभोली सिंह, विककी कुमार, सतोंष मोदक, सौरभ पांडे, मनोवर हुसैन, सतीश तांती, अरुण कुमार रवानी, महेंद्र कुमार, पप्पू सिंह, राजेश कुमार, भगवान दास, नयन चक्रवर्ती, आयुष कुमार यादव, सूरज कुमार, राजेश कुमार, अमरीक सिंह, संजीव कुमार, नमिता दास, गोविंद निषाद और ओमकार मिश्रा आदि ने श्रद्धांजलि अर्पिथ की।

समाहरणालय सभागार में दी गयी दिशोम गुरु को श्रद्धांजलि

बाबा शिबू सोरेन, झारखंड की माटी के कण-कण में सदैव जीवंत रहेंगे : डीसी

आजाद सिपाही संवाददाता

बोकारो। झारखंड आंदोलन के पुरोधा, भारत की आदिवासी चेतना के महानायक दिशोम गुरु शिबू सोरेन के निधन पर सोमवार को समाहरणालय परिसर में शोकसभा आयोजित हुआ। इस दौरान डीसी अजय नाथ झा, पुलिस अधीक्षक हरविंदर सिंह, डीडीसी शताब्दी मजूमदार सहित सभी वरीय पदाधिकारियों एवं कर्मियों ने दिशोम गुरु की तस्वीर पर माल्यार्पण कर श्रद्धांजलि दी। डीसी ने कहा कि दिशोम गुरु शिबू सोरेन भारत की आदिवासी चेतना के महानायक थे। उनका संघर्ष, बलिदान और नेतृत्व सदैव आने वाली पीढ़ियों को प्रेरणा देता रहेगा। झारखंड की माटी के कण-कण में वे सदैव जीवंत रहेंगे। इस मौके पर डीपीएलआर मेनका, अपर समाहर्ता मो मुमताज अंसारी, अनुमंडल पदाधिकारी चास प्रांजल ढ़ांडा, अपर नगर आयुक्त संजीव कुमार, जिला जनसंपर्क पदाधिकारी रवि कुमार आदि उपस्थित थे।

दिशोम गुरु शिबू सोरेन को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए।

बंद दुकान में चोरी

धनबाद (आजाद सिपाही)। सरायढेला थाना क्षेत्र के भूइफोर मंदिर के समीप एक बंद दुकान को चोरों ने निशाना बनाया। पता चला है कि दुकान बंद कर दुकानदार रात 10 बजे अपने घर चला गया। जिसके बाद चोरों ने रात में ही घटना को अंजाम दिया। चोरों ने वहां से करीब 70 हजार रुपये से अधिक के सामान और 19 हजार रुपए नकद की चोरी की है।

फोरलेन बना जानलेवा ट्रैक, आवारा पशुओं ने बना लिया स्थायी डेरा

महुदा (आजाद सिपाही)। धनबाद-बोकारो मुख्य मार्ग और महुदा-राजगंज फोरलेन सड़क इन दिनों आवारा पशुओं का स्थायी ठिकाना बन चुका है। डीसी ने बार-बार सख्त निर्देश और आर्थिक दंड की चेतावनी दी है। बावजूद इसके हालात जस के तस बने हुए हैं। नतीजतन, इन मार्गों पर सड़क दुर्घटनाओं का खतरा लगातार बना हुआ है, जिससे आमजन की जान-माल को गंभीर जोखिम झेलना पड़ रहा है। बीते वर्षों में इन मार्गों पर आवारा पशुओं से टकरा कर कई लोग अपनी जान गंवा चुके हैं, लेकिन न तो पशु मालिकों में कोई डर है ना ही प्रशासन की कार्रवाई में कोई असर दिख रहा है। स्थानीय लोगों का कहना है कि पुलिस और जिला प्रशासन स्तर पर कई बार सख्त कार्रवाई की बात कही गई, लेकिन अमल के अभाव में स्थिति में कोई सुधार नहीं हो सका। इस लापरवाही का खामियाजा आम नागरिकों को अपनी जान गवां कर चुकाना पड़ रहा है। कई परिवारों की खुशियां इन बेजुबानों की वजह से उजड़ चुकी हैं। हाल ही में डीसी आदित्य रंजन की अध्यक्षता में आयोजित गौशाला समिति के साथ बैठक में यह निर्णय लिया गया था कि जो लोग जानबूझकर अपने पशुओं को सड़कों पर छोड़ते हैं, उन पर आर्थिक दंड लगाया जाएगा। लेकिन यह निर्णय भी धरातल पर उतरने से पहले ही हवा में उड़ता दिख रहा है। महुदा थाना क्षेत्र के अंतर्गत आने वाली नई फोरलेन और मुख्य मार्गों पर आज भी दर्जनों की संख्या में पशु खुलेआम विचरण कर रहे हैं, जो जिला प्रशासन की तैयारियों और घोषणाओं की पोल खोलते हैं।

शिबू सोरेन जी के साथ एक युग का भी अंत हो गया: राज सिन्हा

धनबाद (आजाद सिपाही)। विधायक राज सिन्हा ने झामुमो के संस्थापक संरक्षक दिशोम गुरु शिबू सोरेन के निधन पर गहरा दुख प्रकट किया है। कहा कि यह एक युग का अंत है। दिशोम गुरु के निधन से हमारे साथ उनके चाहने वाले कई लोग शोकाकुल है। शिबू सोरेन ने अपना संपूर्ण जीवन राष्ट्र, झारखंड और विशेष कर आदिवासी समाज की सेवा में अर्पित कर दिया। उनकी संघर्षशीलता, नेतृत्व क्षमता एवं जनसेवा की भावना हमें सदैव प्रेरणा देती रहेगी। ईश्वर से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को शांति प्रदान करें एवं परिवार एवं समस्त झारखंड वासियों को इस दुखद घड़ी में धैर्य और संबल प्रदान करें। विधायक ने कहा कि उन्होंने अपने संघर्षों से राजनीति में ऊंचा मुकाम हासिल किया। वे दो बार केंद्रीय कोयला मंत्री और तीन बार झारखंड के मुख्यमंत्री रहे। 38 वर्षों तक झामुमो के केंद्रीय अध्यक्ष रहे.बाद में वह संस्थापक संरक्षक बने। वर्ष 1995 में अलग झारखंड राज्य का पहला पड़ाव जैक का अध्यक्ष शिबू सोरेन को ही बनाया गया था। यही वजह है कि गुरु जी की छवि झारखंड ही नहीं पूरे देश में एक जन नेता के तौर पर स्थापित थी।

सिमेटिक पीसीएस-07 बेसिक पर प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन

बोकारो (आजाद सिपाही)। मानव संसाधन के ज्ञानार्जन एवं विकास विभाग में संयंत्र के विभिन्न विभागों के 15 कर्मचारियों के लिए 'सिमेटिक पीसीएस-07 बेसिक' पर छह दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन सोमवार से नौ अगस्त तक के लिए किया जा रहा है। यह प्रशिक्षण कार्यक्रम विशेष रूप से हॉट स्ट्रिप मिल तथा सी आर एम - क्क्क के रोलिंग के उपयोग में आने वाले नियंत्रण प्रणाली को समझने के अनुकूल डिजाइन किया गया है. कार्यक्रम मे मेसर्स सीमेंस लिमिटेड की वरीय और अनुभवी फैकल्टी सुश्री दर्शना शिर्के के सहयोग से प्रयोगात्मक ज्ञानवर्धन का भी प्रावधान है। कार्यक्रम के उदघाटन सत्र मे ज्ञानार्जन एवं विकास विभाग की मुख्य महाप्रबंधक नीता बा और महाप्रबंधक एस के भगत उपस्थित थे। सर्वप्रथम एस केडी भौमिक, कनीय प्रबंधक (ज्ञानार्जन एवं विकास) ने सभी प्रतिभागियों तथा मुख्य अतिथियों का स्वागत किया और इस प्रशिक्षण कार्यक्रम के संबंध में जानकारी दी। मुख्य महाप्रबंधक नीता बा ने अपने सम्बोधन में स्टील प्लांट के लिये कार्यक्रम की उपयोगिता पर प्रकाश डाला तथा सभी प्रतिभगियो से इस कार्यक्रम से अधिकतम लाभ उठाने की अपील की। कार्यक्रम के आयोजन मे ज्ञानार्जन एवं विकास विभाग के वरीय ओपरेटिव श्री राकेश कुमार, नवनीत कुमार सिंह, कौशलेन्द्र प्रताप सिंह तथा वरीय इंस्ट्रक्टर श्री अर्जुन प्रसाद बाउरी का सराहनीय योगदान रहा।

झारखंड के निर्माण में शिबू सोरेन की भूमिका को हमेशा याद रखा जायेगा: ब्रजेंद्र प्रसाद सिंह

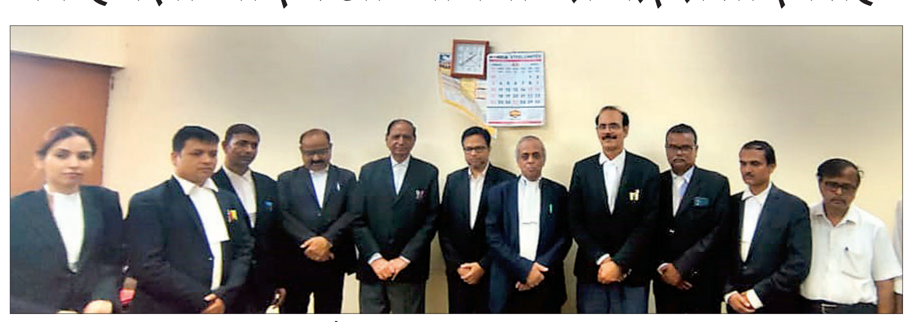

धनबाद (आजाद सिपाही)। बार एसोसिएशन के परिसर में धनबाद बार एसोसिएशन के वरिष्ठ अधिवक्ता ब्रजेंद्र प्रसाद सिंह की अध्यक्षता में दिसोम गुरु शिबू सोरेन के निधन पर शोकसभा आयोजित कर श्रद्धांजलि अर्पिथ की गयी। अपने संबोधन में वरिष्ठ अधिवक्ता ब्रजेंद्र प्रसाद सिंह ने बताया कि आदिवासी समाज की मजबूत आवाज, सोरेन जी ने उनके हक और अधिकारों के लिए आजीवन संघर्ष किया। झारखंड के निर्माण में उनकी भूमिका को हमेशा याद रखा जाएगा। शिबू सोरेन आज हमारे बीच नहीं है, लेकिन हर वह आदमी , जो हक और सम्मान के लिए लड़ाई लड़ता है। दिशोम गुरु शिबू सोरेन को सलाम कर रहा है। शिबू सोरेन अब नहीं है, लेकिन उनकी सोच, संघर्ष आने वाली पीढ़ियों को रास्ता दिखाता रहेगा। आज झारखंड में सत्तासीन झारखंड मुक्ति मोर्चा का गठन शिबू सोरेन की सोच की ही उपज थी। 4 फरवरी 1973 को धनबाद के गोल्फ मैदान में विनोद बिहारी महतो, एके राय और शिबू सोरेन ने मिलकर झामुमो की स्थापना की थी।

मकसद था अलग राज्य की लड़ाई लड़ना। झामुमो के गठन के दिन ही विनोद बाबू पार्टी के पहले अध्यक्ष चुने गए. शिबू सोरेन उस वक्त महासचिव बने थे। हेमंत सोरेन जी और पूरे सोरेन परिवार के साथ-साथ गुरुजी के सभी समर्थकों को गहरी संवेदनाएं अधिवक्तागण व्यक्त करते हैं। शोकसभा में श्रद्धांजलि अर्पित करने वालों में उदय प्रकाश सिन्हा, अंजनी कुमार शरण, मोहम्मद सौलत दाऊद उर्फ गुड्डू, समर महतो,जय दयाल केसरी, पथनाथ कुमार, मनोज यादव रमेश राय, संजय कुमार, अंतरा झा, शशिनाथ झा, अवधेश कुमार झा, श्रीकांत वर्मा, इंद्रदेव मंडल, सोनू वर्मा, कालाचन्द कुमार आदि थे।

सेल ने इस्पात आपूर्ति कर, रक्षा आत्मनिर्भरता को मजबूत किया

बोकारो (आजाद सिपाही)। भारत की सबसे बड़ी इस्पात उत्पादक कंपनी, स्टील अथॉरिटी ऑफ इंडिया लिमिटेड (सेल) ने भारतीय नौसेना के दो महत्वपूर्ण जहाजों, आईएनएस 'अजय' और आईएनएस 'निस्तार' के लिए विशेष इस्पात की आपूर्ति करके देश के रक्षा स्वदेशीकरण प्रयासों में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है. इन दोनों जहाजों में से आईएनएस अजय को गार्डन रीच शिपबिल्डर्स एंड इंजीनियर्स लिमिटेड (जीआरएसई) द्वारा पिछले जुलाई महीने के दौरान लांच किया गया जबकि आईएनएस निस्तार को भी पिछले जुलाई महीने के दौरान ही हिंदुस्तान शिपयार्ड लिमिटेड (एचएसएल) द्वारा कमीशन किया गया। आईएनएस अजय के लिए सेल ने जरूरत की पूरी डीएमआर ग्रेड स्टील प्लेट्स की आपूर्ति की है, जो इस उच्च-गुणवत्ता वाले इस्पात पोत की संरचनात्मक मजबूती और स्टील्थ क्षमताओं के लिए महत्वपूर्ण है. आईएनएस अजय गार्डन रीच शिपबिल्डर्स एंड इंजीनियर्स लिमिटेड (जीआरएसई) द्वारा निर्मित आठवां और अंतिम स्वदेशी एंटी-सबमरीन वारफेयर शैलो वाटर क्राफ्ट (एएसडब्ल्यू-एसडब्ल्यूसी) है। इसी तरह से सेल ने हाल ही में कमीशन किए गए आईएनएस निस्तार के लिए विशेष ग्रेड प्लेट्स की जरूरत की पूरी मात्रा की सप्लाई की है. आईएनएस निस्तार भारत का पहला स्वदेशी रूप से डिजाइन और निर्मित डाइविंग सपोर्ट वेसल है। हिंदुस्तान शिपयार्ड लिमिटेड द्वारा कमीशन की गई आईएनएस निस्तार, पनडुब्बी बचाव कार्यों, गहरे समुद्र में गोताखोरी और निरंतर गश्त में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने के लिए तैयार है। सेल, भारत की नौसैनिक शक्ति को मजबूत करने के लिए प्रतिबद्ध है, जो राष्ट्रीय रक्षा लक्ष्यों के लिए कंपनी के रणनीतिक सहयोग को दिखाता है. यह 'आत्मनिर्भर भारत' के निर्माण में सेल की अभिन्न भूमिका को भी रेखांकित करता है. इस्पात के प्रत्येक टन के साथ, सेल भारत की समुद्री तत्परता और रक्षात्मक भरोसे की नींव को निरंतर सुदृढ़ कर रहा है।

गिरिडीह, पश्चिम सिंहभूम और पटना की टीमें जीती, डीपीएस बोकारो दूसरे स्थान पर

बोकारो (आजाद सिपाही)। दिल्ली पब्लिक स्कूल की मेजबानी में चल रहे तीन-दिवसीय सीबीएसई क्लस्टर- 3 टेबल टेनिस टूर्नामेंट के दूसरे दिन सोमवार को भी झारखंड-बिहार के विभिन्न जिलों से पहुंचे खिलाड़ियों ने जमकर अपने दमखम दिखाए। उन्होंने एकाग्रता, संयम और त्वरित स्फूर्ति का परिचय देते हुए गेंद एवं रैकेट पर अपने नियंत्रण और संतुलन को बखूबी प्रदर्शित किया। प्रतियोगिता के दूसरे दिन सभी छह वर्गों के टीम मैच संपन्न हो गए तथा व्यक्तिगत मैचों का सिलसिला शुरू हो गया, जो तीसरे और अंतिम दिन मंगलवार को खत्म होगा। टीम मुकाबलों में पटना के खिलाड़ियों ने अपना दबदबा लगातार दूसरे दिन भी बरकरार रखा। छह वर्गों में से चार फाइनल टीम मैचों पर उन्होंने ही अपना कब्जा जमाया और दूसरे स्थान पर भी पटना की ही टीमें रहीं। टीम मुकाबलों के अंडर- 14 बालिका वर्ग में लोयोला हाई स्कूल, पटना की टीम ने संत माइकल हाई स्कूल, पटना को 3-2 एवं अंडर- 14 बालकों के मैच में लिटेरा वैली स्कूल, पटना ने संत माइकल हाई स्कूल, पटना की टीम को 3-0 अंकों के अंतर से शिकस्त दी। अंडर- 17 बालक वर्ग में लोयोला हाई स्कूल, पटना ने लिटेरा वैली स्कूल, नया टोला, पटना को 3-0 अंक से पराजित किया, तो अंडर- 17 बालिकाओं के लीग मैच में जुस्को स्कूल, कदमा, पू, सिंहभूम विजेता रही। डीपीएस बोकारो की टीम गुरु नानक हायर सेकेंडरी स्कूल, रांची को हराकर दूसरे स्थान पर रही। वहीं, अंडर- 19 बालिका वर्ग में लोयोला हाई स्कूल, पटना ने बीएनएस डीएवी पब्लिक स्कूल, गिरिडीह को 3-1 तथा अंडर - 19 बालकों के मुकाबले में बीएनएस डीएवी पब्लिक स्कूल, गिरिडीह ने लोयोला हाई स्कूल, पटना को 3-2 अंकों के अंतर से शिकस्त देकर विजेता का खिताब हासिल किया। विभिन्न आयुवर्गों को मिलाकर दूसरे दिन अलग-अलग मैचों में 50 से अधिक मुकाबले हुए। मंगलवार को प्रतियोगिता का समापन होगा। डीपीएस बोकारो के प्राचार्य एवं प्रतियोगिता आयोजन समिति के अध्यक्ष डॉ. ए. एस. गंगवार ने टीम मैचों के विजेताओं को बधाई देते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

एटीएम से नहीं निकला पैसा, शिकायत दर्ज

झरिया (आजाद सिपाही)। धनबाद में साइबर अपराधियों का बड़ा गिरोह काम कर रहा है, जो आम लोगों को अपना शिकार बना रहा है। सोमवार को झरिया कतरास मोड़ स्थित एटीएम से रुपए निकालना बीएन आर निवासी बीसीसीएल रिटायर्ड कर्मी विजय नोनिया को महंगा पड़ गया। पैसा निकालने के लिए एटीएम गया तो बैलेंस काटा लेकिन कैश नहीं निकला। उसके बाद उनके मोबाइल में मैसेज आया कि 72000 निकाल लिए गए। विजय नोनिया का एटीएम बंद कर दिया गया है। उन्होंने कहा कि अपने एटीएम से पैसा निकासी करने गया था। लेकिन पैसा फंस गया। इस बाबत उन्होंने शिकायत दर्ज कराई है।

द्वारिका मेमोरियल फाउंडेशन अकादमी में कराया साइबर सुरक्षा कार्यक्रम आयोजित

धनबाद (आजाद सिपाही)। आयुष फाउंडेशन धनबाद की ओर से द्वारिका मेमोरियल फाउंडेशन अकादमी में साइबर सिक्योरिटी अवेयरनेस प्रोग्राम का सफल आयोजन किया गया। यह प्रोग्राम लवली प्रोफेशनल यूनिवर्सिटी की इंटर्न छात्रा सिमरन, शुभम राज और आर्यन के सहयोग से संचालित किया गया, जिसमें कक्षा 7, 8, 9 और 10 के विद्यार्थियों को साइबर सुरक्षा से जुड़ी महत्वपूर्ण जानकारियां दी गईं। इस दौरान विद्यार्थियों ने साइबर क्राइम, पासवर्ड सुरक्षा, सोशल मीडिया के सुरक्षित उपयोग, फिशिंग अटैक और एआई से जुड़ी भविष्य की चुनौतियों पर कई सवाल पूछे। सिमरन ने धैर्यपूर्वक उनके सभी प्रश्नों के उत्तर दिए और विद्यार्थियों को वास्तविक उदाहरणों के माध्यम से जागरूक किया। लगभग दो घंटे तक चले इस कार्यक्रम में बच्चों को डिजिटल युग में सुरक्षित रहने के लिए जरूरी सुझाव भी दिए गए, जिनमें मजबूत पासवर्ड बनाना, अज्ञात लिंक पर क्लिक न करना, टू-फैक्टर ऑथेंटिकेशन का प्रयोग, सोशल मीडिया पर सीमित जानकारी साझा करना और एंटीवायरस को नियमित रूप से अपडेट करना शामिल प्रिंसिपल मदन कुमार सिंह ने इस पहल की सराहना करते हुए कहा कि आज के समय में साइबर सुरक्षा केवल तकनीकी विषय नहीं, बल्कि विद्यार्थियों के भविष्य की रक्षा के लिए आवश्यक कदम है। आयुष फाउंडेशन धनबाद ने बच्चों को सही दिशा देने का जो प्रयास किया है, वह सराहनीय है।

सीएसआइआर-सीआइएमएफआर ने किया स्वास्थ्य शिविर का आयोजन

भारतीय जनसंख्या के लिए प्रिसिजन मेडिसिन की नींव

आजाद सिपाही संवाददाता

धनबाद। सेंट्रल इंस्टीट्यूट ऑफ माइनिंग एंड फ्यूल रिसर्च (सीएसआईआर - सीआईएमएफआर) ने अपने कर्मचारियों, पेंशनभोगियों और उनके जीवनसाथियों के लिए फेनोम इंडिया-सीएसआईआर हेल्थ कोहोर्ट नॉलेज बेस (पी-आई-चेक) पहल के तहत आठ दिवसीय स्वास्थ्य परीक्षण शिविर का आयोजन किया है। देशबर के सभी 37 सीएसआईआर प्रयोगशालाओं में लागू यह प्रमुख पहल 'स्वस्थ भारत, विकसित भारत' के सपने को साकार करने के लिए डेटा-आधारित स्वास्थ्य, वेलनेस और प्रिसिजन मेडिसिन को बढ़ावा देने का लक्ष्य रखती है। इस स्वास्थ्य शिविर का उद्घाटन सोमवार को सीएसआईआर-सीआईएमएफआर के निदेशक डॉ अरविंद कुमार मिश्रा ने किया। शिविर का आयोजन दो चरणों में होगा। सोमवार से 8 अगस्त तक बारवा रोड परिसर और 9 से 11 अगस्त तक दिगवाडीह परिसर में। इस कार्यक्रम में लगभग 500 स्वयंसेवी प्रतिभागियों के शामिल होने की उम्मीद है। पी-आई-चेक कार्यक्रम का उद्देश्य आधुनिक कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) और मशीन लर्निंग (एमएल) तकनीकों को बड़े पैमाने पर स्वास्थ्य डेटा के साथ जोड़कर एक राष्ट्रीय स्वास्थ्य कोहोर्ट तैयार करना है। यह आधार भारतीय जनसंख्या के लिए विशेष रूप से तैयार प्रिसिजन मेडिसिन विकसित करने में सहायक होगा। एकत्रित आंकड़े विभिन्न बीमारियों के निदान और पूर्वानुमान बायोमार्कर खोजने में भी मदद करेंगे। उद्घाटन के बाद, डॉ अरविंद कुमार मिश्रा ने शिविर में लगाए गए परीक्षण केंद्रों का निरीक्षण किया। व्यवस्थाओं की समीक्षा की और पी-आई-चेक टीम एवं स्वयंसेवकों से बातचीत की। उन्होंने सक्रिय भागीदारी को प्रोत्साहित किया और इस महत्वाकांक्षी कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए सामूहिक प्रयासों के महत्व पर जोर दिया। वहीं, स्वास्थ्य परीक्षणों में कई प्रकार की जांच ट्रांजिएंट इलास्टोग्राफी (फाइब्रोस्कैन)-लिवर की जांच के लिए, इलेक्ट्रोकार्डियोग्राम (ईसीजी)- हृदय की जांच के लिए, स्पाइरोमेट्री और ऑसिलोमेट्री- फेफड़ों की कार्यक्षमता की जांच के लिए, बायोकेमिस्ट्री पैनल्स-लिवर फंक्शन टेस्ट (एलएफटी), किडनी फंक्शन टेस्ट (केएफटी), कंप्लीट ब्लड काउंट (सीबीसी), और लिपिड प्रोफाइल शामिल हैं। इस शिविर का समन्वय डॉ जय कृष्ण पांडेय, मुख्य वैज्ञानिक, डॉ भानू पांडेय, वरिष्ठ वैज्ञानिक, डॉ अशोक कुमार रमन, वरिष्ठ चिकित्सा अधिकारी और डॉ मानस कुमार सिंह, रेजिडेंट मेडिकल ऑफिसर द्वारा किया जा रहा है। पूरा कार्यक्रम डॉ अरविंद कुमार मिश्रा, निदेशक, सीएसआईआर-सीआईएमएफआर के मार्गदर्शन और संरक्षण में संचालित हो रहा है।

जुए के अड्डे पर छापामारी, पांच गिरफ्तार

बोकारो (आजाद सिपाही)। एसपी हरविंदर सिंह के निर्देश पर अवैध धंधेबाजों के खिलाफ जिले भर में विशेष अभियान चलाया जा रहा है। इसी क्रम में रविवार को शहर के सिटी थाना अंतर्गत को-ऑपरेटिव मोड पर स्थित एक झोपड़ी से पुलिस ने पांच लोगों को जुआ खेलते हुए रंगे हाथ धर दबोचा। जिसमें चास तारानगर निवासी पवन राय, सेक्टर 9 निवासी भीम कुमार, दूंदीबाद निवासी जीतू कुमार, सेक्टर 3 ए निवासी संजय कुमार एवं सोनाटांड़ माराफारी निवासी सच्चिदानंद कुमार शामिल है। जुए के अड्डे से पुलिस ने ताश के पत्ते, नगद 7 हजार रुपए, नंबर अंकित लकड़ी का प्लाई बोर्ड, दो कैलकुलेटर , छह प्लास्टिक कुर्सी, पांच रजिस्टर तथा लकड़ी के दो बेंच जप्त किया। यह छापामारी एसपी को मिली गुप्त सूचना के आधार पर की गई। इस संबंध में सिटी थाना में ङादवि की धारा 316(2),112(2), एवं 11 बंगाल जुआ अधिनियम अंकित कर गिरफ़्तार लोगों को न्यायिक हिरासत में जेल भेज दिया गया है। गौरतलब है कि बीते शुक्रवार की देर रात माराफारी थाना अंतर्गत बांसगोंडा घोंचाटोला इलाके में कथित जुए के अड्डे पर मंटू दास नामक युवक की गोली मारकर हत्या कर दी गई थी। इसके बाद रेस हुई पुलिस ने पूरे शहर में गश्त बढ़ा दी है और ऐसे तमाम अड्डों को निशाने पर लेकर कार्रवाई की जा रही है।

आजाद सिपाही परिवार ने संस्थापक को श्रद्धांजलि अर्पित की

झारखंड के अग्रणी मीडिया संस्थान लैंडस्केप मीडिया (प्रा) लिमिटेड ने सोमवार को अपने संस्थापक और दैनिक अखबार 'आजाद सिपाही' के प्रधान संपादक हरिनारायण सिंह की याद में शोकसभा की। इसमें 'आजाद सिपाही' परिवार के सभी सदस्य मौजूद थे। निदेशक राकेश सिंह की अगुवाई में परिवार के सदस्यों ने अपने मुखिया को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की और उनके सपने को साकार करने का संकल्प लिया। राकेश सिंह ने बताया कि कैसे अपने अंतिम समय में भी प्रधान संपादक को इस अखबार की और परिवार की चिंता थी। शोकसभा में सभी ने हरिनारायण सिंह के बताये रास्ते पर चलने और 'आजाद सिपाही' को लगातार नयी ऊंचाई पर ले जाने का संकल्प व्यक्त किया। शोकसभा के अंत में दिवंगत हरिनारायण सिंह और दिशोम गुरु शिबू सोरेन के सम्मान में दो मिनट का मौन रखा गया।

गांधी आश्रम से भी जुड़ाव था शिबू जी और हरि जी का

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। व्यवसायी और समाजसेवी भानू प्रताप सिंह ने शिबू सोरेन और हरि नारायण सिंह के निधन पर शोक व्यक्त किया है। उन्होंने कहा कि एक दिन पहले ही पत्रकारिता जगत के स्तंभ हरिनारायण सिंह के निधन और इसके दूसरे दिन झारखंड के राजनीतिक बरगद शिबू सोरेन के निधन से मन व्यथित है। दोनों का एचइसी स्थित गांधी आश्रम से लगाव रहा है।

भानू प्रताप सिंह ने बताया कि खास बात यह है कि हरिजी आश्रम के संस्थापक सदस्य थे। शिबू सोरेन जी जब मुख्यमंत्री थे, तो वह भी वहां आये थे। इन दोनों व्यक्तियों का मेरे साथ काफी लगाव था और हर समय सामाजिक कार्यों में मार्गदर्शन मिलता रहता था। हमने दोनों अभिभावकों को खो दिया है। इनकी कमी हमेशा खलेगी।

शिबू सोरेन के निधन पर आइजी लक्ष्मण प्रसाद सिंह ने गहरा दुःख व्यक्त किया

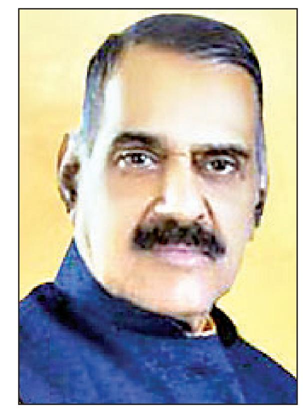

रांची (आजाद सिपाही)। भाजपा नेता सह पूर्व आइजी लक्ष्मण प्रसाद सिंह ने राज्यसभा सांसद शिबू सोरेन के निधन पर गहरा दुःख व्यक्त किया है। उन्होंने कहा कि शिबू सोरेन न केवल झारखंड के, बल्कि समूचे देश के सबसे श्रद्धेय नेताओं में से एक थे। उन्होंने कहा कि शिबू सोरेन झारखंड आंदोलन के जनक के रूप में झारखंडी कला संस्कृति को अक्षुण रखने, महाजनी प्रथा के खिलाफ बिगुल फूंकने वाले, जनजातीय समाज में व्याप्त कुरीतियों को समाप्त करने और शिक्षित समाज का निर्माण करने एवं झारखंडी अस्मिता की रक्षा करने के लिए सदैव याद किये जाते रहेंगे। लक्ष्मण प्रसाद सिंह सिंह ने कहा कि हम सबों के बीच से उनका चला जाना अत्यंत दुःखदाई है। यह झारखंड के लिए अपूरणीय क्षति है। मेरी ईश्वर से प्रार्थना है कि उनकी आत्मा को शांति प्रदान करें और परिजनों को इस दुःख को सहन की शक्ति प्रदान करें।

पूर्व मध्य रेल

ई-निविदा सूचना

ई-निविदा सूचना सं. एस.जी. 664-04-संकेत-2025-26. भारत के राष्ट्रपति की ओर से निम्न कार्य हेतु ई-निविदा आमंत्रित की जाती है।
1. कार्य का नाम : धनबाद डिवीजन के केक्यूआर-एआरजीडी सेक्शन में डिफेक्टिव सिग्नलिंग केबलों का प्रतिस्थापन हेतु। 2. कार्य का आकलित मुल्य : ₹1,03,09,791.58 (लगभग) |3. कार्य का अग्रधन राशि : ₹2,01,600.00, 4. निविदा बंद होने की तिथि एवं समय : 25.08.2025 (12:30 बजे)। 5. ऐसी ई- निविदाओं के तहत डाक/कुरियर/फैक्स या व्यक्तिगत रूप से भेजा गया कोई भी मैनुअल प्रस्ताव स्वीकार नहीं किया जायेगा, भले ही यह फर्म के लेटर हेड एवं नियत समय पर प्राप्त किया गया हो। ऐसे सभी मैनुअल प्रस्ताव को अवैध माना जायेगा तथा उसके बारे में किसी विचार के बिना तत्काल निरस्त कर दिया जायेगा। उपरोक्त ई निविदा के ई निविदा दस्तावेज सहित संपूर्ण जानकारी वेबसाईट :http//www.ireps.gov.in पर उपलब्ध होंगे।
द्रष्टव्य :- प्रत्याशित निविदाकारों को यह सलाह दी जाती है कि इस ई निविदा के लिए जारी कोई भी परिवर्तन/शुद्धिपत्र की ओर ध्यान देने के लिए वे निविदा बंद होने की अंतिम तिथि से कम से कम दस दिन पहले वेबसाईट : http//www.ireps.gov.in का अवलोकन करे।

वरीय मण्डल संकेत एवं दूर संचार अभि./
पूमरे/धनबाद
पीआर/0719/डीएचएन/सि./टी/25-26/36

ट्रंप की भारत को फिर ज्यादा टैरिफ लगाने की दी धमकी

वॉशिंगटन डीसी (एजेंसी)। अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रम्प ने भारत पर और ज्यादा टैरिफ लगाने की धमकी दी है। उन्होंने सोमवार को कहा कि भारत रूस से सस्ता तेल खरीदकर उसे खुले बाजार में मुनाफे के साथ बेच रहा है। ट्रंप ने कहा कि भारत को इस बात की कोई परवाह नहीं है कि रूस के हमले से यूक्रेन में कितने लोग मारे जा रहे हैं। इस वजह मैं भारत पर लगने वाले टैरिफ में भारी इजाफा करूंगा।

इससे पहले अमेरिकी राष्ट्रपति ने शुक्रवार को कहा था कि ऐसी खबरें हैं कि भारत ज्यादा दिन तक रूस से तेल नहीं खरीदेगा। दरअसल, कुछ मीडिया रिपोर्ट्स में दावा किया गया था कि भारत ने अमेरिकी दबाव और कीमत बढ़ने की वजह से रूस से तेल खरीदना लगभग बंद कर दिया है। उधर अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प के सलाहकार स्टीफन मिलर ने आज ही कहा है कि भारत, अमेरिका के साथ ईमानदारी से पेश नहीं आ रहा है। कहा कि भारत खुद को हमारा करीबी देश बताता है, लेकिन इसके बावजूद वह हमारे सामानों को मंजूरी नहीं देता और अमेरिकी सामानों पर भारी टैरिफ लगाता है।

प्रधानमंत्री मातृ वंदना योजना 4.05 करोड़ महिलाओं को लाभ

- विशेष पंजीकरण अभियान 15 अगस्त तक बढ़ाया गया

आजाद सिपाही संवाददाता

नयी दिल्ली। महिला एवं बाल विकास मंत्रालय ने प्रधानमंत्री मातृ वंदना योजना (पीएमएमवीवाई) के लिए विशेष पंजीकरण अभियान की अवधि 15 अगस्त तक बढ़ा दी है। आंगनवाड़ी और आशा कार्यकर्ताओं के नेतृत्व में घर-घर जाकर जागरूकता एवं नामांकन अभियान का उद्देश्य सभी पात्र गर्भवती और स्तनपान कराने वाली महिलाओं तक पहुंचना और योजना के तहत उनका समय पर पंजीकरण सुनिश्चित करना है। पीएमएमवीवाइ गर्भवती महिलाओं और स्तनपान कराने वाली माताओं के बीच पौष्टिक आहार उपलब्ध कराने और स्वास्थ्य संबंधी व्यवहार में सुधार लाने के लिए वित्तीय सहायता प्रदान करती है और बालिकाओं के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण को बढ़ावा देती है।

पीएमएमवीवाइ वेतन में कमी होने की स्थिति में आंशिक मुआवजे के रूप में नकद प्रोत्साहन प्रदान करती है, ताकि माताएं पहले बच्चे के जन्म से पहले और बाद में आराम कर सकें। इस योजना की शुरुआत से लेकर 31 जुलाई, 2025 तक 4.05 करोड़ से अधिक लाभार्थियों को उनके बैंक/डाकघर खातों में प्रत्यक्ष लाभ अंतरण के माध्यम से 19,028 करोड़ रुपये की राशि का मातृत्व लाभ का भुगतान किया जा चुका है। प्रधानमंत्री मातृ वंदना योजना, मिशन शक्ति की उप-योजना 'सामर्थ्य' के अंतर्गत एक केंद्र प्रायोजित योजना है, जो प्रत्यक्ष लाभ अंतरण के माध्यम से प्रत्यक्ष वित्तीय सहायता प्रदान करती है। प्रधानमंत्री मातृ वंदना योजना के अंतर्गत, मिशन शक्ति योजना के दिशानिर्देशों के अनुसार, पहली संतान के लिए दो किस्तों में 5,000 रुपये और दूसरी बालिका के जन्म के बाद एक किस्त में 6,000 रुपये की नकद प्रोत्साहन राशि प्रदान की जाती है।

आजाद सिपाही की ओर से स्वत्वाधिकारी लैंडस्केप मीडिया प्रा. लि., प्रकाशक एवं मुद्रक हरिनारायण सिंह के लिए 176 कोकर चौक, ओल्ड एचबी रोड, रांची 834001 (झारखंड) से प्रकाशित तथा डीबी प्रिंट सोल्यूशंस (ए यूनिट ऑफ डीबी कार्प लिमिटेड), प्लॉट नं. 535 एवं 1272, ललगुटवा, पुलिस स्टेशन, रातू, रांची से मुद्रित। **संपादक :** हरिनारायण सिंह, **स्थानीय संपादक*** : विनोद कुमार,***पीआरबी एक्ट के तहत खबरों के लिए जिम्मेदार, **राज्य समन्वय संपादक :** अजय शर्मा। समस्त दिवानी विवादों, न्यायोचित कार्रवाइयों एवं दंडित परिवादों के लिए क्षेत्राधिकार रांची न्यायालय में रहेगा। फोन : 9264434560, **R.N.I. No.-JHAHIN/2015/65109,** Postal Registration No. **RN/249/2019-21**